July 2021

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

INDIA

www.rotarynewsonline.org

Vol.20, Issue 9 | Annual Subscription ₹420

Rotary

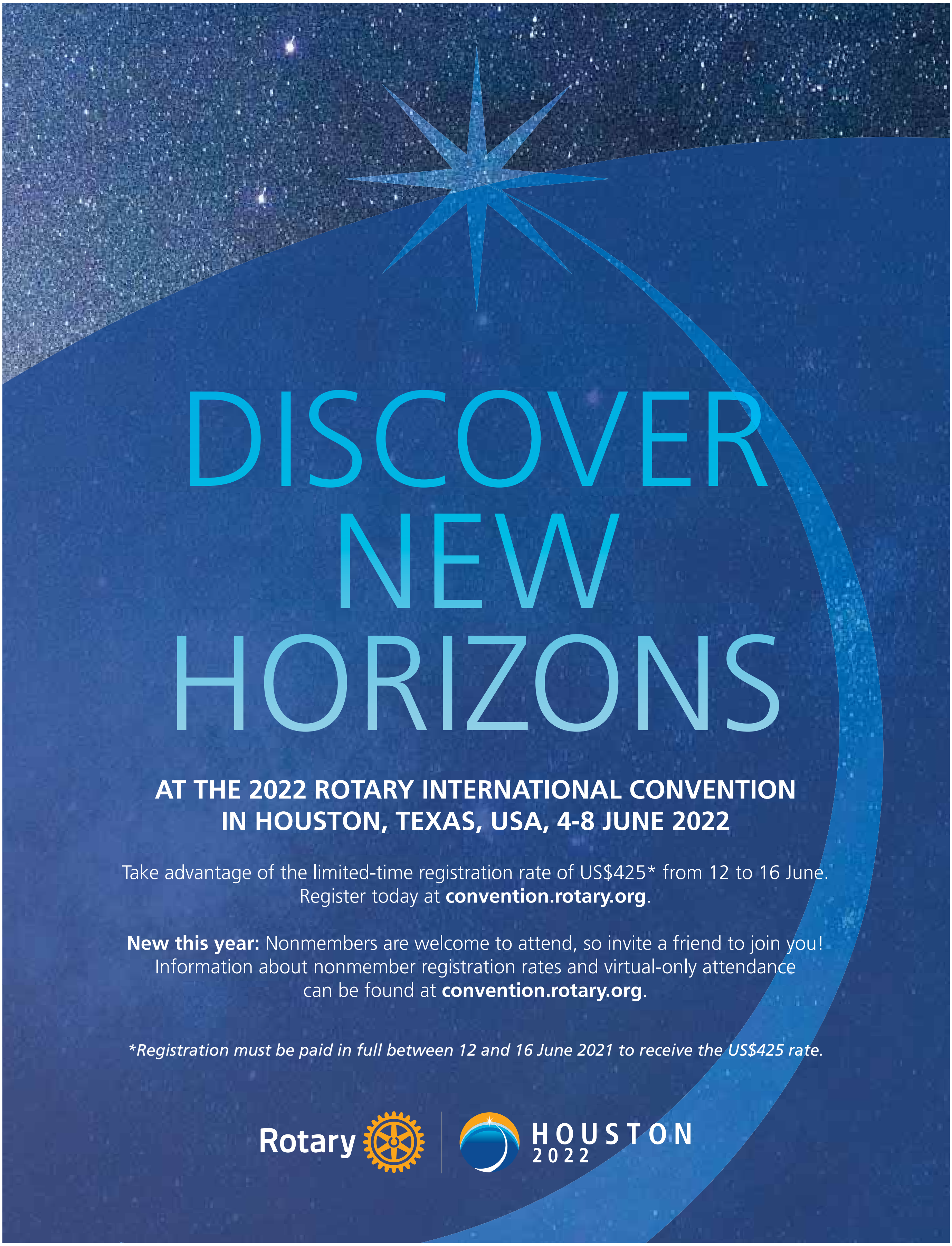
DISCOVER NEW HORIZONS
AT THE 2022 ROTARY INTERNATIONAL CONVENTION IN HOUSTON, TEXAS, USA, 4-8 JUNE 2022
Take advantage of the limited-time registration rate of US$425* from 12 to 16 June. Register today at convention.rotary.org.
New this year: Nonmembers are welcome to attend, so invite a friend to join you! Information about nonmember registration rates and virtual-only attendance can be found at convention.rotary.org.
*Registration must be paid in full between 12 and 16 June 2021 to receive the US$425 rate.
Rotary
HOUSTON 2022

विषयसूची

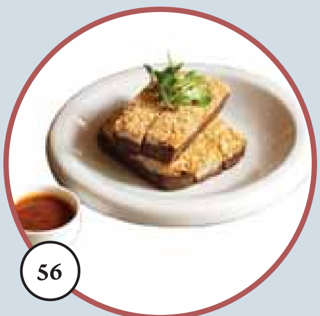

12 ख्वाब बुनने वाले

रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता रोटरी के अगले अध्याय की परिकल्पना करते है और इसे एक वास्तविकता में बदलने हेतु तैयार है।

24 महामारी के बाद पूर्व की भांति सामान्य परिस्थितियां संभव नहीं: होल्गर नेक

रो ई आभासी सम्मेलन में रो ई अध्यक्ष होल्गर नेक ने प्रतिनिधियों से परिवर्तन के अनुकूल होने और उसे अपनाने का आग्रह किया।

32 रोटरी क्लब क्वींस नेकलेस कहता है ब्रीद इंडिया, ब्रीद

क्लब के सदस्य मुंबई में लोगों के लिए ऑक्सीजन सांद्रता सहित विभिन्न कोविड राहत उपायों का विस्तार कर रहे हैं।

38 रो ई मंडल 3232 का मेडिकल गूगल

रोटेरियन डॉक्टरों और स्वास्थ्य विशेषज्ञों के इस 193 सदस्यों वाले अनोखे समूह ने रोटेरियनों और उनके परिवारों को अस्पताल के बिस्तर एवं अन्य चिकित्सीय देखभाल प्राप्त करने में मदद की।

42 रोटरी ने की कोविड मरीजों के लिए ₹300 करोड़ की एक परियोजना

रोटरी इंडिया ह्यूमैनिटी फाउंडेशन ने पूरे भारत में ₹300 करोड़ के चिकित्सीय उपकरण प्रदान करने के लिए यूनाइटेड वे बेंगलुरु के साथ साझेदारी की।

50 अप्लाइ यॉर्सेल्फ

विभिन्न पदों पर सेवा देने के लिए रो ई समितियों को योग्य रोटेरियनों एवं रोटेरेक्टरों की आवश्यकता है।

52 आपके गवर्नर्स से मिलिए

अपने मंडल के नेताओं को जानें जब वे पूरे वर्ष के लिए अपनी योजनाओं को साझा करते है।

56 घर पर बनाने के लिए सेहतमंद मौसमी व्यंजन

गर्मियों में घर पर करने में आसान इन अद्भुत चीजों को जानिए।

60 के एल सहगल: एक ऐसे गायक जिन्होंने दिल और दिमागदोनों पर राज किया

उन्होंने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुतियों से पूरे देश को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कवर पर : रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता और उनकी पत्नी राशि कोलकाता स्थित उनके घर पर।

चित्र : राजेश गुप्ता

RNT परिवार के लिए सहानुभूति

जून अंक के कवर पर RIPE शेखर मेहता और राशि की रंगीन तस्वीर देखकर खुशी हुई। रो ई अध्यक्ष होल्गर नेक का संदेश प्रेरक है और संपादक का संदेश उन लोगों की पीड़ाओं को अच्छी तरह से व्यक्त करता है जिन्होंने अपने प्रियजनों को खो दिया है। रो ई निदेशकों का कथन सार्थक है। संस्थान न्यासी प्रमुख ने हमसे बिना किसी डर के आगे बढ़ने का आग्रह किया है। रशीदा द्वारा लिखित लेख *बड़े सपने, बड़ी मुस्कान* शेखर मेहता के उत्तम चरित्र को दर्शाता है। अन्य सभी लेख जैसे रोटरी क्लब बेलथंगडी द्वारा की गई जल परियोजनाएँ, RIDE महेश कोटबागी की जीवन गाथा आदि उत्कृष्ट है। साथ ही डॉ रामसुब्रमण्यन द्वारा कोविड की दूसरी लहर को नियंत्रित करने की सलाह आंखें खोल देने वाली है। तर्स्वीरें भी रंगीन है। एक शानदार संस्करण के लिए संपादकीय टीम को बधाई।

फिलिप मुलअप्पोने एम टी

रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन – मंडल 3211

कोविड के कारण RNT परिवार के तीन सदस्यों के करीबी रिश्तेदारों की निधन सूचना दुखद है। रोटरी क्लब प्रभावितों को कई रूपों में राहत प्रदान कर रहे हैं। रोटरी क्लब मद्रास ने कोविड टीकाकरण के लिए ₹1.1 करोड़ के लॉजिस्टिक उपकरण और ट्रक दान किए, रोटरी क्लब मदुरै मिडटाउन एक इलेक्ट्रिक मशान चला रहा है जो एक मामूली राशि लेता है, 50,000 ऑक्सीजन सांद्रता का वितरण शुरू करने के लिए RIPE शेखर मेहता का त्वरित निर्णय और अन्य क्लुबों के टीकाकरण शिविरों की मेजबानी, सभी नेक प्रोजेक्ट्स। रवींद्रन द्वारा उद्धृत किए गए विंस्टन चर्चिल के शब्द: चलिए हम एक साथ आगे बढ़ें मौजूदा संकट के समय में अत्यंत प्रासंगिक है। रोटरी इंडिया कोविड टास्क फोर्स के अध्यक्ष अशोक महाजन ने ठीक ही कहा है, ''कोविड से लड़ना हमारी प्राथमिकता है।''

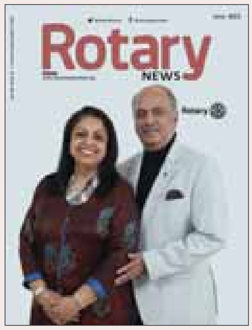

आर श्रीनिवासन

रोटरी क्लब मदुरई मिडटाउन – मंडल 3000

शेखर मेहता का प्रलेख उनकी असीम ऊर्जा को प्रदर्शित करता है और राशि का यह कथन कि वह दिल से दिल का संबंध बनाते है, बिल्कुल सही है। मैं कामना करता हूँ कि उनका अभियान *हर एक लाए एक* को बड़ी सफलता मिले।

मुझे यह पढ़कर बहुत दुख हुआ कि कोविड से RNT टीम के परिजन भी नहीं बच पाएं। आपकी पसंदीदा लेखिका चिमामांडा नागोजी की तरह ही मेरी भी यही भावना थी – मेरा गुस्सा मुझे डराता है, मेरा भय मुझे डराता है, और कहीं इस शर्म में भी – मैं इतना क्रोधित और इतना डरा हुआ क्यों हूँ? संपादकीय के शीर्षक: दूर से शोक मनाने का सदमा के लिए मेरी बधाई।

रो ई निदेशक का संदेश पढ़कर खुशी हुई। न्यासी प्रमुख रवींद्रन ने संस्थान की अब तक की उपलब्धि का सार बताया: हमनें 282 मिलियन डॉलर से अधिक जुटाए है, जिससे हम 410 मिलियन डॉलर का धन

रोटरी न्यूज़ पढ़ कर अच्छा लगा

मैं अप्रैल, मई और जून के तीनों अंक प्राप्त करने के लिए रोमांचित था और इस मामले पर आपकी व्यक्तिगत अनुवर्ती कार्यवाही के लिए मैं आपका आभारी हूँ। जब हम दोपहर के भोजन के लिए बैठे थे तभी डाकिया इन्हें लाया। मेरी भूख कहीं खो गई और मैंने तुरंत अप्रैल अंक को पढ़ना शुरू कर दिया लेकिन मेरी पत्नी मीना ने कहा कि पहले खाओ और फिर अपनी प्यारी रोटरी पत्रिका पढ़ो। प्रथम पृष्ठ विषयसूची की शुरुआत से ही *रोटरी न्यूज़* अच्छी तरह से तैयार की गई है, और पत्र इस पत्रिका की लोकप्रियता का प्रमाण देते है।

संलग्न तस्वीरों के साथ अच्छी तरह से लिखे गए लेख जानकारीपूर्ण है। TCA श्रीनिवासा राघवन द्वारा साहित्यिक रुझान के साथ लिखा जाने वाले LBW लेख सहित बाकी सभी लेखों को पढ़ना हमेशा खुशी देता है। उन्हें मेरा सलाम। मेरी बस यही कामना है कि यह पत्रिका हर महीने समय पर हम तक पहुंचे।

अनिल लाटे

रोटरी क्लब पूना डाउनटाउन – मंडल 3131

डॉ रामसुब्रमण्यन की उचित सलाह

डॉ वी रामसुब्रमण्यन हमें उचित सलाह देते है कि अगर आप कोविड से संक्रमित है तो घबराएं नहीं और एक हफ्ते तक घर पर शांति से रहें और दवा लें। मैं रोटरी क्लब मद्रास के इस सदस्य को उनकी विचारशील और समझदारीपूर्ण सलाह के लिए धन्यवाद देता हूँ।

एन जगदीसन

रोटरी क्लब एलुरु – मंडल 3020

डॉ रामसुब्रमण्यन के साथ संपादक का साक्षात्कार बिल्कुल आनंदमय और सूचनाप्रद था जिसमें शांत रहने पर उचित रूप से जोर दिया गया था। उनकी धारणा और विचार एक अनुभवी नैदानिक चिकित्सक की तरह है। यह साक्षात्कार बहुत ही व्यापक प्रसार के योग्य है।

डॉ उषा देसाई

रोटरी क्लब देओनर – मंडल 3141

डॉ रामसुब्रमण्यन के साथ साक्षात्कार जानकारीपूर्ण है क्योंकि उन्होंने हमें संतुलित भोजन लेने, पूरी नींद लेने और व्यायाम करने, शराब और धूम्रपान से बचने और टीका लगवाने की सलाह दी। भरत और शालन सवूर ने अपने लेख *एक झूले पर स्थिरता* में जीवन के प्रति उचित दृष्टिकोण और संवेदनशीलता

संचयन करने के अपने लक्ष्य तक पहुंचने की ओर अग्रसर है।

नन नारायणन,
रोटरी क्लब मदुरई वेस्ट - मंडल 3000

यह दुख की बात है कि RNT परिवार भी इस महामारी से नहीं बच सका। संपादकीय में ठीक ही कहा गया है कि कोरोनावायरस के कारण अधिकांश परिवारों को नुकसान उठाना पड़ा। जैसे-जैसे मरने वालों की संख्या बढ़ती गई, विदेशों में रहने वाले कई युवाओं के लिए भारत की गंभीर स्थिति को समझ पाना कठिन हो गया। मेरी बहू जो अमेरिका में रहती है और अपने माता-पिता की इकलौती संतान है, ने कोविड के कारण अपने पिता को खो दिया लेकिन वह यात्रा प्रतिबंध के कारण भारत नहीं आ सकीं। कितने सारे परिवार के सदस्यों को रिश्तेदारों के शवों का अंतिम संस्कार करने की अनुमति नहीं थी। लोग विदेशों में रहने वालों का दर्द समझ सकते है, जिन्हें इतनी दूर से ही शोक मनाना पड़ा।

टी डी भाटिया
रोटरी क्लब दिल्ली मयूर विहार - मंडल 3012

की सराहना करने पर एक गहन विवरण प्रस्तुत किया।

के एम के मूर्ति
रोटरी क्लब सिकंदराबाद - मंडल 3150

वाकई एक गंभीर स्थिति

आपकी मई संपादकीय *कोविड अग्निकुंड* ने एक गंभीर स्थिति को स्पष्ट रूप से चित्रित किया, और सरकार को दूसरी लहर को रोकने के लिए आपातकालीन कदम उठाने की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया।

महामारी पर काबू पाने हेतु चिकित्सीय विशेषज्ञता एवं स्वास्थ्य सेवा प्रणाली को मजबूत बनाने के आपके आह्वान पर रोटेरियन एकजुट होकर आपके साथ खड़े है। आपने एकदम उचित कहा था कि राजनेताओं को दोषारोपण का खेल छोड़कर लोगों को राहत प्रदान करने के लिए एकजुट होना चाहिए।

अरुण कुमार दास
रोटरी क्लब बारीपदा - मंडल 3262

लेख *लड़कियों की एक दिन की छुट्टी* प्रभावशाली था और रोटेरियनों को अपने क्षेत्रों में ऐसी परियोजनाओं को करने के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करता है और स्थानीय समुदाय को यह बताता है कि रोटरी उनकी परवाह करती है। हम निकट भविष्य में निश्चित रूप से ऐसी ही किसी परियोजना की शुरुआत करेंगे।

बी ए प्रभुशंकर
रोटरी क्लब कोयंबटूर इन्डस्ट्रीअल सिटी
मंडल 3201

रोटरी क्लब ग्वालियर की वैश्विक अनुदान परियोजना मुझे अच्छी लगी। मैंने रोटरी क्लब गिंडी के एक युवा रोटेरियन नरेश कुमार की यात्रा को भी दिलचस्पी के साथ पढ़ा। उनकी चेन्नई से हैम्बर्ग तक की 8,646 मील की यात्रा आकर्षक है, जो रोटरी के वैश्विक कार्यों के बारे में जागरूकता पैदा करती है। वह रोटरी के सद्भावना राजदूत है।

डॉ माधव कशालीकर,
रोटरी क्लब सांगली मिडटाउन - मंडल 3170

संपादकीय *कोविड अग्निकुंड* ने एक अपर्याप्त स्वास्थ्य प्रणाली का वर्णन किया और यह बताया कि कैसे दूसरी लहर पर काबू पाने में हुई चूक के लिए सरकार और जनता दोनों समान रूप से जिम्मेदार है। इसके परिणामस्वरूप हजारों लोगों की जान चली गई जो दिमाग को हिला कर रख देती है, और फिर न्यायपालिका को हस्तक्षेप करना पड़ा।

एस आर मधु ने अपने लेख में गीता दत्ता के दुखदायी जीवन का अच्छी तरह वर्णन किया है।

राज कुमार कपूर
रोटरी क्लब रूप नगर - मंडल 3080

रोटरी प्लस एक वरदान है

रोटरी न्यूज़ और *रोटरी न्यूज़ प्लस* अत्यधिक सूचनाप्रद है और ये दोनों ही पारिवारिक पत्रिकाएं बन गई है। साथ ही मैंने यह देखा है कि गैर-रोटेरियन लोगों ने भी हमारे लेखों में रुचि दिखाई है। संपादक रशीदा भगत और उनकी टीम को बधाई।

आशीष देसाई
रोटरी क्लब कंकरिया अहमदाबाद
रो ई मंडल 3054

इस अनोखे और अनिश्चित समय में, रोटेरियनों ने उत्कृष्ट और सराहनीय सेवाएं दी है। *रोटरी न्यूज़ प्लस* ने विभिन्न क्लबों द्वारा निष्पादित परियोजनाओं को प्रदर्शित करते हुए अच्छा कवरेज दिया है। इस ई-पत्रिका को प्रकाशित करने के लिए संपादकीय टीम को सलाम और धन्यवाद।

मोइन खान,
रोटरी क्लब जमशेदपुर
मंडल 3250

We welcome your feedback. Write to the Editor:
rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com.
Mail your project details, along with hi-res photos,
to **rotarynewsmagazine@gmail.com.**

Messages on your club/district projects, information and links on zoom meetings/ webinar should be sent only by e-mail to the Editor at **rushbhagat@gmail.com** or **rotarynewsmagazine@gmail.com.** WHATSAPP MESSAGES WILL NOT BE ENTERTAINED.

Click on **Rotary News Plus** on our website
www.rotarynewsonline.org to read about more Rotary projects.

SERVE TO CHANGE LIVES

रोटरी को बेहतर दुनिया के लिए लड़कियों को सशक्त बनाना चाहिए

मेरे प्यारे परिवर्तनकर्ताओं,

मैं आपको और आपके परिवार को एक महान रोटरी नव वर्ष की शुभकामनाएं देता हूं! आइए हम सब मिलकर आगे बढ़े अधिक करें के माध्यम से इसे अपने जीवन का सबसे अच्छा वर्ष बनाएं। आइए इसे परिवर्तनकर्ताओं का वर्ष बनाए, और इसकी शुरुआत हम अपनी सदस्यता के साथ करें।

यहीं कारण है कि हर एक, लाए एक पहल इतनी महत्वपूर्ण है। इस वर्ष, मैं आपसे नए तरीकों का सपना देखने का आग्रह करता हूं जिससे रोटरी आपके समुदाय और इस दुनिया में अपनी पहुंच का विस्तार कर सकती है। यदि प्रत्येक सदस्य रोटरी में एक सदस्य को लाए, तो जुलाई 2022 तक हमारी सदस्यता बढ़कर 1.3 मिलियन हो सकती है। तो आइए इसे करते है!

उन परिवर्तनों की कल्पना करें, जो रोटरी सदस्य के रूप में हम अधिक संख्या होने पर ला सकते है! अधिक लोग दूसरों की देखभाल करने के लिए, अधिक लोग जीवन बदलने हेतु सेवा करने के लिए। उस प्रभाव के बारे में सोचें जो हम आगे बढ़े, अधिक करें के माध्यम से ला सकते है। अधिक सदस्य हमें बड़ी एवं साहसिक सेवा परियोजनाओं को शुरू करने में सक्षम बनाएंगे। और हम में से प्रत्येक अपने स्वयं के व्यक्तिगत तरीकों से सेवा करना जारी रख सकता है, अपने समुदायों की जरूरतों को संबोधित कर सकता है।

रोटरी की खूबी यह है कि दुनिया भर के अलग-अलग लोगों के लिए सेवा के मायने अलग-अलग होते है। हालाँकि, एक तत्व जिसे हम अपनी सभी सेवा पहलों में शामिल कर सकते है वह है लड़कियों का सशक्तिकरण। दुर्भाग्य से, आज के जमाने और युग में भी, लड़कियों और युवतियों को पूरी दुनिया में विषम चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हमारे पास लैंगिक समानता में पथप्रदर्शक बनने की शक्ति है। लड़कियों और युवतियों की शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य देखभाल, अधिक रोजगार और जीवन के सभी क्षेत्रों में समानता तक बेहतर पहुंच के लिए सशक्तिकरण हमारे द्वारा शुरू की जाने वाली प्रत्येक रोटरी परियोजना में अंतर्निहित होना चाहिए। लड़कियां भविष्य की नेतृत्वकर्ता है, इसलिए हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम उनके भविष्य को आकार देने में उनकी मदद करें।

यह चुनौतीपूर्ण समय है, और मैं COVID-19 से निपटने के लिए आपके प्रत्येक प्रयास की सराहना करता हूं। रोटेरियनों के लिए कोई चुनौती बहुत बड़ी नहीं होती है। जितनी बड़ी चुनौती, उतने ही उत्साही रोटेरियन। इस बात को देखें कि जब हम पोलियो उन्मूलन जैसी बड़ी चुनौती का सामना करते है, तो हम क्या हासिल कर सकते है। पानी, सफाई एवं स्वच्छता तक पहुंच को मजबूत करके हम लाखों लोगों के जीवन में सुधार करते है। देखें कि हम हर साल उन जगहों पर शांति को बढ़ावा देने के लिए क्या करते हैं जहां शांति का होना अकल्पनीय लगता है। हमारे बुनियादी शिक्षा और साक्षरता कार्यक्रमों का राष्ट्र-निर्माण पर प्रभाव पड़ता है।

इस वर्ष, आइए हम ऐसी और अधिक परियोजनाओं और कार्यक्रमों को करने के लिए खुद को चुनौती दें जिनकी राष्ट्रीय पहुंच और प्रभाव हो। इस वर्ष, आइए हम *जीवन परिवर्तित करने के लिए* सेवा करें।

Shekhar Mehta

शेखर मेहता

अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

हमें दिया गया सबसे बड़ा उपहार है
जीवन को छूने की शक्ति,
जीवन के चक्र में परिवर्तन, बदलाव लाने की शक्ति।
यदि हम अपने तन, मन और आत्मा से इस तक पहुंच सकें,
तो जादू को शुरू होने से कोई भी ना रोक सकें।
तो आइए मानवता की उन्नति के लिए पहिये को एक साथ घुमाते है,
जीवन परिवर्तित करने के लिए सेवा
द्वारा अपनी ताकत और जादू दिखाते है।

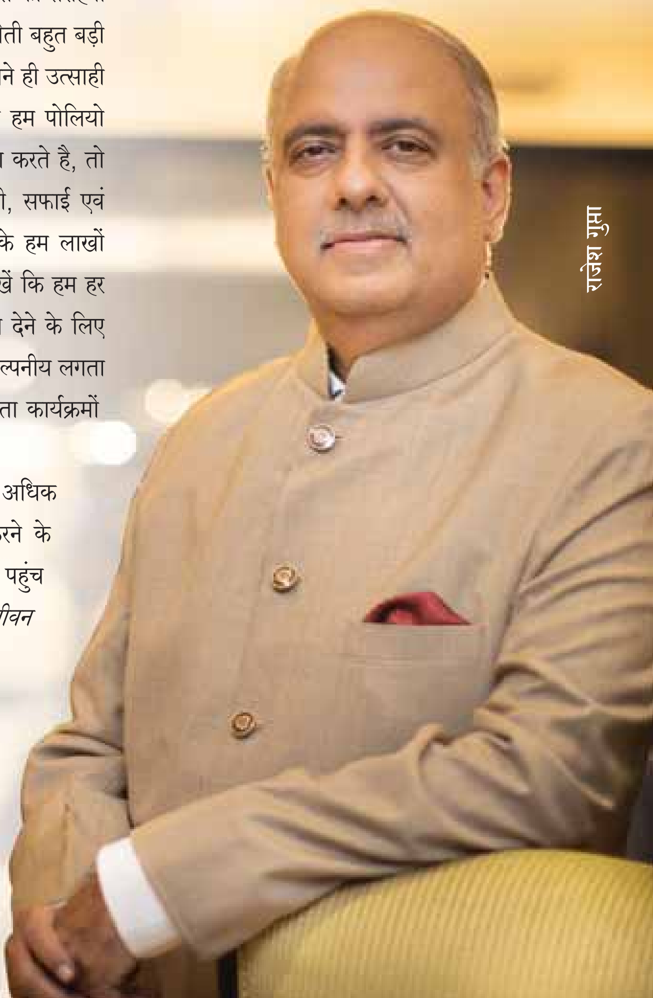

राजेश गुप्ता

संपादक
का संदेश

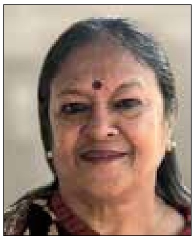

चेन्नई स्कूली छात्राओं का #MeToo आन्दोलन

इस रोटरी वर्ष में रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता का एक प्रमुख फोकस क्षेत्र रहेगा बालिकाओं का सशक्तिकरण। पिछले कुछ वर्षों में मैंने कई रोटरी क्लबों को लड़कियों के लिए पूरी शिद्दत से काम करते हुए देखा है, WinS कार्यक्रम के तहत, सम्पूर्ण भारत के स्कूलों में विशेष कर केवल लड़कियों के लिए हजारों पृथक शौचालयों का निर्माण ताकि निजता की कमी के कारण किशोरियों को स्कूल छोड़ने से रोका जा सके। इतने सारे क्लबों ने बच्चों के लिए बाल यौन शोषण पर जागरूकता फैलाने और अच्छे और बुरे स्पर्श को पहचानने के लिए परियोजनाएं भी शुरू की हैं।

पिछले एक महीने में कुछ सबसे प्रतिष्ठित स्कूलों में अपने पुरुष शिक्षकों द्वारा स्कूली छात्राओं के यौन उत्पीड़न से जुडी एक शर्मनाक घटना ने चेन्नई जैसे महानगर को झकझोर कर रख दिया। एक बहादुर युवती, चेन्नई के एक सम्भ्रान्त स्कूल की पूर्व छात्रा कृपाली की पहल से इस निंदनीय घटना का पर्दाफ़ाश हुआ, जिसने इंस्टाग्राम पर स्कूल के वाणिज्य शिक्षक और छात्राओं के बातचीत के स्क्रीनशॉट साझा किए जिन्हें पढ़ कर रोंगटे खड़े हो जाएं। वो दुष्ट शिक्षक, जिसे अब गिरफ्तार कर लिया गया है, उन के सौंदर्य पर फब्ती कसता, उन्हें अश्लील साहित्य के लिंक भेजता, उन्हें अनुचित तरीके से छूता, फिल्म के लिए बाहर साथ चलने को कहता और ऑनलाइन कक्षाओं में अपनी कमर पर सिर्फ एक तौलिया लपेट कर आता था। सोशल मीडिया पर इन आरोपों के वायरल हो जाने के बाद, उस स्कूल के 1,000 से अधिक पूर्व छात्रों ने शिक्षक को बर्खास्त करने की मांग की। उसे POCSO (प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रन फ्रॉम सेक्सुअल ऑफेंस) एक्ट के तहत गिरफ्तार किया गया। जल्द ही, एक केंद्र विद्यालय सहित छह स्कूलों के पुरुष शिक्षकों के शामिल होने की शिकायतें भी आने लगीं। बात वही थी-जांघों पर चुटकी भरना, कूल्हे पर थपकी मारना, कमर में हाथ डालना और भद्दी और अश्लील टिप्पणियां, हावभाव करना। सबसे दुखद बात तो यह है कि इस जघन्य यौन अपराधी को पहले भी एक अन्य स्कूल से निकाल दिया गया था क्योंकि वो छात्राओं को उसकी गोद में बैठा कर उनसे 'मित्रवत चुंबन' देने के लिए मजबूर करता था, इसके मायने कुछ भी रहें हों। अगर समय पर अपराधी को पुलिस को सौंप दिया जाता, तो अन्य सैकड़ों लड़कियां एक शिक्षक द्वारा यौन उत्पीड़न के अपमान और आघात से बच जातीं।

दुर्भाग्य से कई स्कूलों में आज भी, स्कूल प्रबंधन से की गई शिकायतों को दबा दिया जाता था। कार्रवाई करने की तुलना में, इनकार करना आसान है। इसके साथ ही अधिकांश परिवारों में हमारी बेटियों की परवरिश और सामाजिक संस्कार इतने विषम और रूढ़ीवादी है कि यौन उत्पीड़न की शिकार सबसे पहले स्वयं को ही दोषी ठहराती है, यह सोचकर: 'शायद मैं ही कुछ गलत कर रही होंगी।' कई उत्पीड़ित लड़कियों ने कहा कि इस बारे में उन्होंने अपनी मां से कहा था, लेकिन शर्म की बात ये है कि उन्हें चुप रहने की सलाह दी गई। इन तरुणियों को पहुँचने वाले मानसिक और मनोवैज्ञानिक आघात की क्षतिपूर्ति कौन करेगा? मुझे विश्वास है कि एक अत्यंत गंभीर और विराट समस्या की यह सिर्फ हलकी सी झलक है। चेन्नई जैसे महानगर के प्रतिष्ठित स्कूलों में जाने वाली संपन्न परिवारों की लड़कियों को आखिरकार एक आवाज मिली है, जिसका श्रेय आंशिक रूप से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर नाम गुप्त रखने की सुविधा को जाता है। लेकिन छोटे शहरों और ग्रामीण इलाकों के बारे में क्या कहें? क्या वहां इसी तरह का यौन उत्पीड़न बिना जानकारी के बेरोकटोक नहीं चल रहा होगा? यह गंभीर चिंता का विषय है क्योंकि हमारी शिक्षा प्रणाली में बालिकाओं पर पहले से ही काफी भार है। हम सभी जानते हैं कि जहां आर्थिक संसाधन सीमित हैं, वहां बेटा तो निजी स्कूल में जाता है और बेटी सरकारी स्कूल में। यूनिसेफ के भारत प्रमुख यास्मीन अली हक ने वर्चुअल रोटरी इंस्टीट्यूट में कोविड बाद की दुनिया की एक भयानक संभावना के बारे में बताया था, जहां अभूतपूर्व व्यवधान के कारण, संभवतः इस साल स्कूली शिक्षा में 11 मिलियन लड़कियां स्कूल नहीं लौट सकेंगी। चेन्नई की बहादुर लड़कियों को मैं सलाम करती हूं जिन्होंने बोलने का साहस किया और उनके वरिष्ठ सहपाठियों को भी जिन्होंने उनका समर्थन किया।

रशीदा भगत

Governors Council

RID 2981 S Balaji
RID 2982 K Sundharalingam
RID 3000 R Jeyakkan
RID 3011 Anup Mittal
RID 3012 Ashok Aggarwal
RID 3020 Rama Rao M
RID 3030 Ramesh Vishwanath Meher
RID 3040 Col Mahendra Mishra
RID 3053 Sanjay Malviya
RID 3054 Ashok K Mangal
RID 3060 Santosh Prdhan
RID 3070 Dr Upinder Singh Ghai
RID 3080 Ajay Madan
RID 3090 Parveen Jindal
RID 3100 Rajiv Singhal
RID 3110 Mukesh Singhal
RID 3120 Samar Raj Garg
RID 3131 Pankaj Arun Shah
RID 3132 Dr Omprakash B Motipawale
RID 3141 Rajendra Agarwal
RID 3142 Dr Mayuresh Warke
RID 3150 K Prabhakar
RID 3160 Thirupathi Naidu V
RID 3170 Gaurishkumar Manohar Dhond
RID 3181 A R Ravindra Bhat
RID 3182 Ramachandra Murthy M G
RID 3190 Fazal Mahmood
RID 3201 Rajasekhar Srinivasan
RID 3203 Shanmugasundaram K
RID 3204 Dr Rajesh Subash
RID 3211 Srinivasan K
RID 3212 Jacintha Dharma
RID 3231 Nirmal Raghavan W M
RID 3232 Sridhar J
RID 3240 Dr Mohan Shyam Konwar
RID 3250 Pratim Banerjee
RID 3261 Sunil Phatak
RID 3262 Santanu Kumar Pani
RID 3291 Prabir Chatterjee

Printed by PT Prabhakar at Rasi Graphics Pvt Ltd, 40, Peters Road, Royapettah, Chennai - 600 014, India, and published by PT Prabhakar on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions — original content — is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced with permission and attributed to RNT.

निदेशकों

डिजिटल दुनिया के लिए नई खोज करें

प्रिय साथी रोटेरियन,

अवसरों और आनंद भरी एक यात्रा में आपका स्वागत है। हम रोटरी का एक नया साल शुरू करने जा रहे है जो न केवल चुनौतीपूर्ण है बल्कि यह हमारे आदर्श वाक्य - *स्वयं से ऊपर सेवा* - के प्रति हमारी प्रतिबद्धता के परीक्षण की घड़ी भी है।

इस चुनौतीपूर्ण समय में, हमें विचारों, आनंद और उत्साह से भरे नवीन एवं रचनात्मक दिमागों की आवश्यकता है। हमें महामारी की नकारात्मकता से दूर होना होगा, अपने दिमाग से काम लेना होगा, बार-बार योजना बनानी होगी और अपने कार्यों को बार-बार डिज़ाइन करना होगा।

हम जो कुछ भी कहते है, सोचते है और करते है, उसमें हमें अभिनव होना होगा। यह समय मानवता की सेवा करने के हमारे तरीकों और संसाधनों को फिर से परिभाषित करने का है। हम अब सेवा के एक सदी से अधिक पुराने तरीके पर निर्भर नहीं रह सकते।

हमें आज की डिजिटल दुनिया में, इस नए सामान्य जीवन में नयापन लाने की जरूरत है। इसने हमें चुनौतियों के साथ-साथ नए अवसर प्रदान किए है। महामारी के बाद, दुनिया हमेशा के लिए बदल गई है और बदलाव जारी रहेगा। कोई नहीं जानता कि हम कहाँ तक पहुंचेंगे, लेकिन हमें इस बदलते परिवेश में सेवा करने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है।

अपने लक्ष्यों को अपने दम पर हासिल करने की कोशिश करने के बजाय, चलिए हम दुनिया में अच्छा कर रहे अन्य संगठनों तक अपनी परिकल्पना एवं पहुंच का विस्तार करें। अपने आस-पास ऐसे गैर सरकारी संगठनों की पहचान करें जो रोटरी के साथ मिलकर हमारे, उनके और हमारे समुदायों के सपनों को साकार कर सकते है...

मैं स्वामी विवेकानंद के विचारों के साथ अपनी बात समाप्त करता हूं: तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए। उठो और अपने भीतर मौजूद दिव्यता को अभिव्यक्त करो।

साथी रोटेरियनों, अब समय आ गया है कि हम सभी आगे आएं और अपने कार्यों और गतिविधियों के माध्यम से खुद को अभिव्यक्त करें। न केवल अपने लिए बल्कि दूसरों के लिए भी प्रकाशपुंज बनें। न केवल कुछ चुनिंदा लोगों के लिए बल्कि दूसरों के भी मित्र बनें।

याद रखिए कि हम इस रास्ते से फिर कभी नहीं गुजरेंगे। आप दुनिया में जो भी अच्छा करना चाहते है, उसे आज से ही करना शुरू कर दें। परिवर्तन, अवसरों और चुनौतियों की इस यात्रा के लिए आप सभी को मेरी शुभकामनाएं।

महेश कोटबगी
रो ई निदेशक, 2021-23

का संदेश

देखबाल और निस्वार्थ सेवा का एक जादुई नेटवर्क

एक नया रोटरी वर्ष हमारे सामने है और हमने पिछले वर्ष से बहुत कुछ सीखा है। जब हम सैकड़ों-हजारों कोविड-प्रभावित लोगों को राहत पहुंचाने में लगे हुए थे तब हमने जाना कि जब रोटरी सेवा के अवसर प्रदान करती है तो वास्तव में रोटरी जगत की कोई सीमा नहीं होती। मास्क, पीपीई और सैनिटाइज़र का वितरण, क्वारंटीन हुए रोगियों को भोजन की आपूर्ति, ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर का आयात, वितरण और निगरानी, ज़रूरतमंदों के लिए अस्पताल के बिस्तरों की खोज और आवंटन और भी बहुत कुछ किया गया। यह सब दुनिया भर में रोटेरियनों की करुणा और कड़ी मेहनत के माध्यम से संभव हो पाया जो देखभाल के एक नेटवर्क का निर्माण करने हेतु चमत्कारी रूप से, तीव्रता से और समेकित होकर एक साथ आए।

हमने महामारी के माध्यम से यह जाना कि दुनिया और मानवता को अब रोटरी की जरूरत पहले से कहीं ज्यादा है। संसाधनों को ज़रूरतमंदों से कुशलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से जोड़ने के लिए रोटरी सबसे उपयुक्त संगठन है। चूंकि हम एक नया रोटरी वर्ष शुरू कर रहे है, मैं प्रत्येक रोटेरियन से रोटरी को मजबूत बनाने हेतु कार्य करने का आग्रह करता हूं।

यदि हम अपने समुदाय के प्रत्येक हिस्से में प्रवेश करना चाहते है, तो प्रभावी और सार्थक सेवा परियोजनाएं करने के लिए एक मजबूत सदस्यता आधार होना आवश्यक है। इसलिए हमें व्यापक आधार वाली सदस्यता वृद्धि की दिशा में काम करना चाहिए, जिसमें प्रत्येक सदस्य को कुछ जिम्मेदारी सौंपी जाना चाहिए - *हर एक, लाए एक।*

पिछले दो वर्षों में हमारे क्षेत्र के मंडलों और रोटरी क्लबों द्वारा प्रदर्शित लचीलापन आश्चर्यजनक है। जहाँ एक ओर हमारे चारों तरफ दुनिया में तबाही मची हुई है, वहीं दूसरी ओर रोटरी क्लब आसानी से आभासी दुनिया में बैठकों, कार्यक्रमों और यहां तक कि फेलोशिप के लिए भी अनुकूल हो गए है। सभी कार्यक्रमों, सम्मेलनों, प्रशिक्षण संगोष्ठियों आदि का आभासी रूप से आयोजित किया जाना और उसमें सभी प्रतिभागियों का सम्मिलित होना सराहनीय रूप से इस बात का प्रदर्शन करता है कि सेवा कार्य को प्रगतिशील रखने के लिए हम प्रतिबद्ध है। सभी को बधाई! बहुत बढ़िया!

जैसे-जैसे हम इस वर्ष की ओर आगे बढ़ रहे है, हम और मजबूत होते जा रहे है, और अब हमें गैर जरूरी चीजों का त्याग करके काम करने का संकल्प लेना चाहिए और कुछ ऐसी प्रथाओं से दूर रहना चाहिए जिनकी अब आवश्यकता नहीं है और उन प्रथाओं को अपनाना चाहिए जो हमें बढ़ने में मदद करेंगी।

पिछले दो वर्षों से एक कठिन रास्ते पर चलने, जो कुछ और समय तक जारी रह सकता है, और इससे सकुशल एवं मजबूत होकर उभरने के बाद, हमें नए और अनछुए रास्तों पर चलने का साहस करना चाहिए। क्योंकि, हमें यह याद रखना चाहिए कि सबसे कठिन रास्ते अक्सर सबसे खूबसूरत मंजिल की ओर ले जाते है। शुभकामनाएं!

ए एस वेंकटेश
रो ई निदेशक, 2021-23

Board of Trustees

Shekhar Mehta RID 3291
RI President

Dr Mahesh Kotbagi RID 3131
RI Director & Chairman, Rotary News Trust

AS Venkatesh RID 3232
RI Director

Gulam A Vahanvaty RID 3141
TRF Trustee

Rajendra K Saboo RID 3080
Kalyan Banerjee RID 3060
Panduranga Setty RID 3190
Sushil Gupta RID 3011
Ashok Mahajan RID 3141
P T Prabhakar RID 3232
Dr Manoj D Desai RID 3060
C Basker RID 3000
Dr Bharat Pandya RID 3141
Kamal Sanghvi RID 3250

Executive Committee Members (2021–22)

Gaurish Dhond RID 3170
Chairman Governors Council

Anup Mittal RID 3011
Secretary Governors Council

Ramesh Meher RID 3030
Secretary Executive Committee

V Thirupathi Naidu RID 3160
Treasurer Executive Committee

Jacintha Dharma RID 3212
Member Advisory Committee

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

Rotary News Trust
3rd Floor, Dugar Towers,
34 Marshalls Road, Egmore
Chennai 600 008, India.
Phone: 044 42145666
rotarynews@rosaonline.org
www.rotarynewsonline.org

Now share articles from *rotarynewsonline.org* on WhatsApp.

एक बेहतर दुनिया की हमारी परिकल्पना

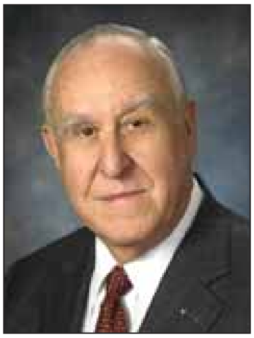

रोटरी में जुलाई सबसे रोमांचक महीना होता है, एक नई शुरुआत का महीना। कई लोगों के लिए, यह नेतृत्व की नई भूमिकाओं को निभाने का अवसर है। इस समय रोटेरियन आशावाद से भरे होते है, यह सोचते हुए कि हम आगामी 12 महीनों में मानवता के लिए क्या कर सकते है।

जब मैं यह संदेश लिखता हूं, तो मुझे विकलांग लोगों के एक प्रसिद्ध अमेरिकी कार्यकर्ता हेलेन केलर का अक्सर उद्धृत किए जाने वाला उद्धरण याद आता है: नेत्रहीन होने से भी बदतर चीज दृष्टि होते हुए भी परिकल्पना का ना होना है।

कितनी बड़ी बात है कि एक नेत्रहीन महिला ने हमें नज़र और नजरिए के बीच के अंतर के बारे में इतना महत्वपूर्ण सबक सिखाया। वास्तव में, दुनिया जैसी है उसे वैसा देखना एक बात है, लेकिन यह कैसी हो सकती है इसकी कल्पना करना दूसरी बात है। रोटरी फाउंडेशन संभावनाओं की कल्पना करने और उन्हें पूरा करने के बारे में है।

इस रोटरी वर्ष की शुरुआत में, मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि: अगले 12 महीनों के लिए आपकी क्या परिकल्पना है? जिस समुदाय या क्षेत्र को आप जानते है, क्या वह संस्थान के अनुदान से लाभान्वित हो सकता है? शायद एक समुदाय तो हो सकता है, और, इन शब्दों को पढ़ते समय, उस समुदाय के कई लोग हमारी मदद और नेतृत्व की प्रतीक्षा कर रहे होंगे।

हम अभी भी कोविड़ -19 के दौरान दुनिया की सेवा करने में आ रही चुनौतियों से जूझ रहे है, लेकिन हम उन चुनौतियों को या किसी और चीज़ को हमें रोकने नहीं दे सकते। महामारी की वजह से अनेक शैक्षिक एवं स्वास्थ्य देखभाल की ज़रूरतें केवल तेज ही हुई है। दुनिया को हमारी जरूरत है।

1 जुलाई से, आप रोटरी के नए ध्यानाकर्षण क्षेत्र - पर्यावरण - का समर्थन करने वाले संस्थान अनुदानों के लिए आवेदन कर सकते है। जुलाई का महीना परिवर्तन भी लाता है, जैसे विश्व कोष का वित्तीय पुनर्गठन, जिसे संवहनीयता को ध्यान में रखते हुए लागू किया जाता है। हम बस एक साल की शुरुआत कर रहे है जबकि हम जाम्बिया में हमारे पहले प्रोग्राम्स ऑफ स्केल अनुदान, हमारे अगले रोटरी पीस सेंटर के लिए एक जगह की तलाश, और आने वाली अनेक पीढ़ियों पर सकारात्मक प्रभाव डालने वाले मंडल और वैश्विक अनुदानों के नियोजन एवं कार्यान्वयन को करना जारी रखेंगे।

प्राचीन चीनी दार्शनिक लाओजी के शब्दों में, आज हम अपना पहला कदम बढ़ाकर हजारों मील की यात्रा की शुरू करते है। आइए एक साथ चलते है, अतीत की ओर नहीं बल्कि आगे देखते है। रोटेरियन एक अच्छी चुनौती पसंद करते है, इसलिए हम सभी के लिए यहाँ एक चुनौती है: आइए इस वर्ष बड़ा सोचने के लिए खुद को चुनौती दें और हम क्या कर सकते है और क्या करेंगे इस बारे में अपने दृष्टिकोण को बड़ा करें।

एक बेहतर दुनिया के लिए संस्थान को अपनी परिकल्पना का हिस्सा बनाएं, और आप दुनिया को और स्वयं में बदलाव देखेंगे।

जॉन एफ जर्म
संस्थान न्यासी प्रमुख

उलटी गिनती शुरू करें !

ह्यूस्टन खुद को बिना किसी सीमा का शहर कहता है, और जब आप 4 से 8 जून, 2022 के रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन, में भाग लेंगे, तो खुद इसका मतलब समझ जायेंगे। यह बड़ी संख्याओं का शहर है: ह्यूस्टन 600 वर्ग मील से अधिक क्षेत्रफल में फैला है, और 23 लाख की आबादी के साथ, यह संयुक्त राज्य अमेरिका का चौथा सबसे बड़ा शहर है। महानगरीय क्षेत्र के 7 मिलियन लोग कम से कम 145 भाषाएं बोलते हैं; ह्यूस्टन कुछ उपायों से देश का सबसे विविध महानगर है।

शहर में 300 से अधिक पार्क हैं, जिसमें लगभग 40,000 एकड़ पार्क और हरित क्षेत्र शामिल है। यह एक उद्यमिता का केंद्र है; 250 से अधिक प्रारंभिक चरण के सॉफ्टवेयर और डिजिटल प्रौद्योगिकी कंपनियां इस शहर ह्यूस्टन को अपना घर मानती हैं। यह बायोमेडिकल रिसर्च का केंद्र भी है: 'टेक्सास मेडिकल सेंटर' दुनिया के सबसे बड़े अस्पताल परिसरों में से एक है, जो 100,000 से अधिक लोगों को रोजगार देता है।

और, बेशक, ह्यूस्टन, नासा के 'लिंडन बी जॉनसन स्पेस सेंटर' का घर है, जो कि 50 से अधिक वर्षों से अंतरिक्ष उड़ान के लिए देश के केंद्रों में से एक रहा है। यह शहर 'अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री कोर्प्स' के लिए घर होने के साथ-साथ, अभिनव अंतरिक्ष अनुसंधान को बढ़ावा देना जारी रखता है। जब आप ह्यूस्टन में होंगे, तो नासा के आधिकारिक आगंतुक केंद्र, 'ह्यूस्टन स्पेस सेंटर' का दौरा करने के लिए समय ज़रूर निकालें, जो अंतरिक्ष अन्वेषण के बारे में विभिन्न प्रकार के शैक्षिक प्रदर्शन और कार्यक्रम प्रदान करता है।

चाहे आप सितारों को देख रहे हों या दुनिया भर के रोटरी सदस्यों के साथ संबंध बना रहे हों, 2022 का सम्मेलन नए क्षितिज की खोज करने का एक सुनहरा मौका है।

अधिक जानने और रजिस्टर करने के लिए *convention.rotary.org* पर देखें।

District Wise TRF Contributions as on May 2021

(in US Dollars)

District Number	Annual Fund	PolioPlus	Endowment Fund	Other Funds	Total Contributions	EREY Donors (in numbers)	EREY %
India							
2981	82,274	5,978	12,128	0	100,381	390	7.99
2982	50,118	17,194	20,770	65,991	154,073	136	4.45
3000	88,727	30,242	492	48,063	167,524	96	1.87
3011	90,729	16,253	65,653	437,990	610,625	153	4.22
3012	18,762	2,580	0	42,321	63,663	87	2.37
3020	162,532	71,917	86,660	42,907	364,017	279	6.84
3030	61,903	2,317	27,840	143,546	235,606	168	3.30
3040	37,694	458	0	14,507	52,659	53	2.53
3053	27,093	4,248	5,000	230,147	266,488	57	2.07
3054	74,395	3,562	0	368,873	446,830	266	4.37
3060	120,683	1,466	158,924	193,665	474,738	1434	32.89
3070	49,059	1,813	0	53,217	104,090	309	9.82
3080	70,784	13,615	97	(11,748)	72,749	183	5.55
3090	36,545	533	0	(736)	36,343	119	5.38
3100	58,072	252	0	15,885	74,209	193	8.59
3110	48,248	200	0	0	48,448	75	2.05
3120	16,919	1,811	0	9,127	27,857	120	3.63
3131	275,463	44,060	136,935	962,735	1,419,193	1153	22.50
3132	30,501	4,612	15,000	6,451	56,564	76	2.27
3141	710,728	46,361	397,279	1,535,408	2,689,776	1283	24.13
3142	258,604	34,634	451	6,831	300,520	1021	31.85
3150	141,302	10,165	160,043	54,299	365,809	821	24.80
3160	44,687	9,846	16	440	54,990	83	3.29
3170	85,135	24,889	1,240	216,338	327,603	318	5.62
3181	96,908	7,524	0	8,826	113,258	383	11.45
3182	102,703	6,170	0	30,852	139,725	416	13.48
3190	226,713	81,234	52,035	243,752	603,733	1150	23.02
3201	191,708	43,344	0	579,819	814,871	669	12.01
3202	69,706	28,028	8,468	94,044	200,246	233	4.32
3211	48,782	3,452	0	151,356	203,589	75	1.67
3212	19,726	56,488	10,153	227,512	313,879	58	1.41
3231	4,776	589	0	23,767	29,132	25	0.64
3232	80,095	48,730	21,500	1,219,025	1,369,349	301	5.29
3240	166,798	29,431	0	48,835	245,063	446	14.65
3250	50,638	4,464	7,195	100,550	162,846	360	9.76
3261	108,390	1,563	50,000	107,471	267,425	46	1.76
3262	114,055	3,253	2,777	(14,082)	106,004	160	4.46
3291	87,422	15,397	35,758	71,577	210,154	142	3.88
India Total	**4,009,378**	**678,674**	**1,276,417**	**7,329,562**	**13,294,031**	**13,337**	**8.99**
3220 **Sri Lanka**	196,992	37,082	31,000	48,881	313,956	344	18.07
3271 **Pakistan**	55,292	102,291	0	306,550	464,132	203	12.50
3272 **Pakistan**	84,067	20,600	0	1,168	105,835	518	30.94
3281 **Bangladesh**	192,454	38,600	34,012	480,501	745,567	450	6.37
3282 **Bangladesh**	64,263	11,023	0	8,270	83,556	129	3.15
3292 **Nepal**	274,937	9,867	0	317,142	601,947	1,769	35.77
South Asia Total	**4,877,383**	**898,137**	**1,341,429**	**8,492,073**	**15,609,023**	**16,750**	**9.87**
World Total	**112,566,754**	**24,912,477**	**28,908,170**	**27,816,154**	**194,203,554**		

Source: RI South Asia Office

TRAVEL
SPORT
Spanish

शेखर और राशि मेहता कोलकाता में अपने घर पर। राशि द्वारा चित्रित माँ और बच्चा चित्र उनके पीछे प्रदर्शित है।

ख्वाब बुनने वाले

हमारे नए अध्यक्ष, शेखर मेहता, रोटरी के अगले अध्याय की कल्पना करते है - और इस कल्पना को हकीकत बनाने के लिए वह तैयार है।

जॉन रेज़ेक

वर्षों तक, मैंने शेखर मेहता की झलक देखी, जब वे निदेशक मंडल की बैठकों के लिए इवेन्स्टन, इलिनोइस, स्थित वन रोटरी सेंटर में आते थे। एक दिन उनसे मेरी औपचारिक रूप से मुलाकात विभिन्न स्टाफ सदस्यों के साथ एक के बाद एक होने वाली बैठकों में हुई, जिसमें प्रत्येक नवनिर्वाचित रोटरी अध्यक्ष भाग लेते है। जिस सत्र में मैंने भाग लिया, उस सत्र में यात्रा से थका हुआ होने के बावजूद भी वह सबसे ज्यादा तनाव मुक्त लग रहे थे। वह सतर्क थे, धैर्यवान थे, और ज्ञानविषयक प्रश्न पूछ रहे थे - अपने पेशेवर और परोपकारी जीवन में सफल होने वाले किसी व्यक्ति के लिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। मैं सोचता रहा कि वह हम में से हर एक का आंकलन इस बात के लिए कर रहे है कि रोटरी के लिए उनके सपनों को हासिल करने में हम उनकी मदद कैसे कर सकते है।

मैं भाग्यशाली रहा कि जब भी संभव हो सका मैं शेखर से व्यक्तिगत रूप से मिला। हम अब वैश्विक कोविड-19 महामारी के दूसरे वर्ष में है, और जब कि मैं यह लिख रहा हूं, भारत एक भयंकर प्रकोप की चपेट में है। रोटरी को कुछ समायोजन करना पड़े, लेकिन रोटरी का कार्य चलता रहता है।

एक सामान्य वर्ष में, *रोटरी* संपादकों में से एक संपादक कोलकाता की यात्रा करता, जहां शेखर अपनी पत्नी राशि के साथ रहते है। हम उनके, उनके परिवार के सदस्यों, और उनके दोस्तों एवं साथी रोटेरियन के साथ समय बिताते, यह पता लगाते हुए कि भारत में उनकी परवरिश और वयस्कता ने कैसे जीवन एवं रोटरी के प्रति उनके दृष्टिकोण को आकार दिया है। इस साल, निश्चित रूप से, कोई भी यात्रा नहीं कर पाता - इसलिए इसके बजाय, हमनें शेखर को करीब से जानने वाले लोगों से उनके बारे में अपने शब्दों में बताने के लिए कहा।

अगले कुछ पन्नों में, शेखर के परिवार के सदस्य, उनके कुछ सबसे पुराने दोस्त, उनके निजी सहायक और उनके अध्यक्षीय सहयोगी ने कुछ किस्से साझा किए है और जिस तरह वे उन्हें जानते है उसके बारे में बात की है, ताकि रोटरी के सदस्यों को भी यह महसूस हो सके कि वे भी उन्हें जानते है। आप में से कई, निश्चित रूप से, आने वाले वर्षों में उनसे स्वयं मिलेंगे, व्यक्तिगत रूप से नहीं तो आभासी रूप से ही सही।

रोटरी क्लब कलकत्ता-महानगर के सदस्य शेखर मेहता 1985 से एक रोटेरियन है। उन्होंने एक अकाउंटेंट के रूप में प्रशिक्षण लिया और एक रियल एस्टेट विकास कंपनी, स्काईलाइन ग्रुप, की स्थापना की जिसके अध्यक्ष भी वहीं है। लेकिन उनका पेशेवर कद उनके व्यक्तित्व की कहानी का एक छोटा सा हिस्सा ही बताता है। वह ऑपरेशन आईसाइट यूनिवर्सल, कनाडा स्थित एक गैर-लाभकारी संगठन जो परिहार्य नेत्रहीनता को रोकने पर काम करता है, की भारतीय शाखा के निदेशक भी है। उन्होंने कई भारतीय राज्यों में 15 से अधिक नेत्र अस्पतालों की स्थापना में मदद की, जो मिलकर हर साल लगभग 50,000 सर्जरी करते है। और उन्होंने *सेविंग लिटिल हार्ट्स* परियोजना की शुरुआत की जिसने भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल और कुछ अफ्रीकी देशों के बच्चों के लिए 2,500 से अधिक दिल की सर्जरी की सुविधा प्रदान की है और अब यह एक भारत-व्यापी कार्यक्रम बन गया है।

जैसा कि आप आगे पढ़ेंगे, वह आपदा राहत कार्यों में भी सक्रिय रूप से शामिल रहे है। अन्य कार्यों के अलावा, उन्होंने 2004 में हिंद महासागर

में आई सुनामी के बाद अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में 500 घर बनाने में मदद की थी।

इस साल अंतर्राष्ट्रीय सभा में, शेखर ने इस बारे में बात की कि कैसे उन्होंने और कुछ रोटेरियनों ने मिलकर यूके स्थित एक रोटेरियन-स्थापित संगठन, शेल्टरबॉक्स, का एक स्थानीय संस्करण शुरू करने का फैसला किया। ''हमने इसे शेल्टर किट नाम दिया और दैनिक जरूरत की 52 वस्तुओं के साथ एक बड़े बक्से में उन्हें पैक किया,'' उन्होंने नवनिर्वाचित मंडल गवर्नरों से कहा। पिछले 15 वर्षों में, भारत में आई हर बड़ी आपदा में, भारतीय रोटेरियनों ने आपदाओं से प्रभावित क्षेत्रों में शेल्टर किट पहुँचाने हेतु स्वेच्छा से काम किया है। कार्यक्रम पहले ही लगभग 75,000 लोगों को सेवा प्रदान कर चुका है। शेखर शेल्टरबॉक्स के न्यासी मंडल में भी सेवा दे चुके है।

और वह TEACH कार्यक्रम के वास्तुकार भी है, जिसका उद्देश्य भारत में निरक्षरता को पूरी तरह से समाप्त करने का है। (आगामी अंकों में आप इस महत्वाकांक्षी कार्यक्रम के बारे में और अधिक पढ़ेंगे।)

हालांकि शेखर व्यावसायिक कलाओं में कुशल है, फिर भी वे अपनी अन्य रुचियों में संलिप्त होना पसंद करते है। उन्होंने मुझे बताया कि अपने करियर के दौरान इतनी पढ़ाई करने के बाद, अब वह लोगों से बात करके सीखन पसंद करते है। उन्होंने आगे कहा, ''मुझे लेखांकन से नफरत है।'' यह उनके इस विश्वास का अनुसरण करता है कि जितना अच्छा हम अपने दिमाग से सोचते है, उतना ही हम हमारे दिल से भी सोच सकते है।

चिराग मेहता

शेखर और राशि के बेटे

जब से मैंने होश सभाला है, मैंने पिताजी को रोटरी के लिए जीते और साँस लेते देखा है। उन्होंने और मेरी मां ने सेवा और मैत्री दोनों पहलुओं पर कड़ी मेहनत की है: आयोजनों की योजना बनाना और उनमें भाग लेना, तत्पश्चात देर रात से लेकर सुबह तक रोटरी मित्रों के साथ बिताना। मेरी बहन, चांदनी, और मैं मज़ाक में कहते थे कि हमारा एक अदृश्य बड़ा भाई है: रोटरी। और रोटरी ने हमारे पूरे परिवार को सब कुछ दिया है। इसने चांदनी और मुझे हमारे सबसे पुराने दोस्त दिए, और इसने हमें सेवा की भावना दी, जिसके लिए पिताजी ने हमें और अपने अनगिनत रोटरी भाषणों में हमेशा जोर दिया है। नेतृत्व की उनकी विभिन्न भूमिकाओं के दौरान, उन्होंने हमेशा हमें अपनी यात्रा का हिस्सा बनाया। हम उनके साथ अस्पतालों एवं पोलियो टीकाकरण शिविरों में गए, आपदा राहत किट कार्यों में भाग लिया, उनके साक्षरता मिशन के हर पहलू पर चर्चा की और कई सम्मेलनों में भाग लिया। परिणामस्वरूप हमने बहुत कुछ सीखा और समझा।

रोटरी ने मेरे माता-पिता के व्यक्तिगत विकास में बहुत बड़ा योगदान दिया है। दुनिया की यात्रा करना और कई देशों के लोगों से मिलने के बाद वे अधिक जानकार, आत्म-जागरूक, विनम्र और दयालु बन गए है। उनका बेटा होने के नाते, मैं इसका हिस्सा बनकर बहुत सम्मानित, और आज वे जो भी है उस पर गर्व महसूस करता हूं।

मेरी बचपन की सबसे पुरानी यादों में से एक है रोटरी निर्देशिकाओं को पढ़ना और रोटरी अध्यक्षों के नाम और उनकी थीम को याद करना। अब इस बात पर विश्वास नहीं होता, हालांकि वह पूरी तरह से इसके योग्य है, कि मेरे पिता स्वयं रोटरी अध्यक्ष है।

दीपक चौधरी

रोटरी क्लब कलकत्ता महानगर

मैं हूं ना: हिंदी का यह वाक्यांश शेखर की मानसिकता का मूर्त रूप है। वह न केवल मेरे लिए, बल्कि रोटरी और अपने जीवन के हर पड़ाव में कई लोगों के लिए मौजूद रहे है। जब से मैं उन्हें जानता हूं - 2002 में रोटरी से मेरा परिचय कराने से पहले उनके वकील के रूप में, और उसके बाद से - तब से वह ऐसे ही है।

अपने विश्वकोषीय ज्ञान और हाज़िरजवाबी से, वह आपको किसी भी समय हंसा सकते है। लेकिन जब भी वह कहीं दुख देखते है, तो उसके कारण को खत्म करने के लिए उनके पास एक अथक उत्साह होता है। वह एक खुशहाल दुनिया का सपना देखते है, और जब वह जागते है, तो उसे साकार करने के लिए काम करते है। वह एक परिवर्तनकर्ता

रोटरी क्लब कलकत्ता महानगर, कोलकाता के इस गर्ल्स स्कूल, भवानीपुर आर्य विद्या मंदिर का समर्थन करता है, जिसमें 1,000 से अधिक छात्रों के लिए दैनिक नाश्ता शामिल है।

है, जिनका उद्देश्य एक पूरी पीढ़ी को *जीवन परिवर्तित करने के लिए सेवा* करने के लिए प्रेरित करना है।

मैंने कुछ साल पहले पढ़ा था कि जब आप रोटरी से जुड़ते है तो अच्छी चीजें होती है। शेखर और राशि ने मुझमें और दूसरों के अंदर इस विश्वास को बैठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

रवि वडलामणी

रोटरी क्लब गुंटूर, रो ई मंडल 3150 के 2001-02 के DG

करीब 20 साल पहले जब मेरी मुलाकात शेखर से हुई, तब वह रोटरी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में एक बूथ का संचालन करने में व्यस्त थे। जिस उत्साह और ऊर्जा के साथ वह अपने क्लब की परियोजनाओं को प्रदर्शित कर रहे थे, वह संक्रामक थी। स्वयं एक परियोजना पुरुष होने के नाते, मैं बूथ पर प्रदर्शित किए गए काम से प्रेरित हुआ। वह आकस्मिक मुलाकात बाद में एक घनिष्ठ मित्रता में तब्दील हुई।

शेखर एक दूरदर्शी नेता है। वह हमेशा उन चीजों को देखते है जो दूसरे नहीं देख पाते। उन्होंने 2025 तक भारत में निरक्षरता को मिटाने के एक तरीके की परिकल्पना की और TEACH कार्यक्रम (जिसका अर्थ है टीचर सपोर्ट (शिक्षक सहायता), ई-लर्निंग, ऐडल्ट लिटरसी (वयस्क साक्षरता), चाइल्ड डेवलपमेंट (बाल विकास), हैप्पी स्कूल (हैप्पी स्कूल)) तैयार किया। उन्होंने शेल्टर किट परियोजना शुरू की जो अब भारत में आपदा राहत में अग्रणी बन गई है। उनकी *सेविंग लिटिल हार्ट्स* परियोजना, जो हजारों बच्चों की दिल की सर्जरी करती है, और साथ ही साथ हजारों लोगों की सेवा करने वाले 15 से अधिक नेत्र अस्पताल, जिनको स्थापित करने में उन्होंने मदद की, उनके सपने के पैमाने को बयां करते है।

टीमों का निर्माण करने और उन्हें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करने की उनके पास एक असाधारण प्रतिभा है। शेखर के कार्यक्रम और विचार अतिश्योक्तिपूर्ण लग सकते है, लेकिन वह रोटेरियनों को घर जैसा महसूस कराने के लिए हमेशा अतिरिक्त प्रयास करते है।

बड़े सपने देखने की उनकी ताकत नियोजन, दृढ़ता और धैर्य से समर्थित होती है। वह एक उत्कृष्ट संचारक है जो अपने दर्शकों से तुरंत जुड़ जाते है और लोगों को पहाड़ हिलाने तक के लिए प्रेरित कर सकते है। वह एक पारिवारिक व्यक्ति भी है, जहां उनकी पत्नी राशि उनका कुशलतापूर्वक समर्थन करती है।

एक नेता के रूप में शेखर की विशेष खूबी? जब वह किसी से कुछ मांगते है तो कोई उन्हें ना नहीं कह पाता।

सरला और निशीथ तोतला

रोटरी क्लब कलकत्ता-महानगर

शेखर और राशि से हमारी मुलाकात करीब 32 साल पहले एक पारस्परिक मित्र के माध्यम से हुई। आज वे सिर्फ हमारे ही दोस्त नहीं है, बल्कि हमारा परिवार है। जीवन के सभी सुख और दुख में मौजूद रहने वाले शेखर पहले व्यक्ति होते है। हमारी बेटी की शादी में वह मौजूद थे और बड़ी जिम्मेदारियां उठा रहे थे। सरला की मां के अंतिम संस्कार में वह वहाँ मौजूद थे। शेखर ने रोटरी जगत से भी हमारा परिचय कराया, जो हमारे जीवन का एक बड़ा हिस्सा रहा है।

शेखर के कार्यक्रम और विचार अतिश्योक्तिपूर्ण लग सकते है, लेकिन वह रोटेरियनों को घर जैसा महसूस कराने के लिए हमेशा अतिरिक्त प्रयास करते है।

शेखर में कई असाधारण गुण है। वह एक बेमिसाल दूरदर्शी, एक महान प्रेरक और एक सम्पूर्ण आशावादी है; वह अत्यधिक ऊर्जावान, उत्साही है और अविश्वसनीय रूप से दयालु एवं संवेदनशील है। वह एक सम्पूर्ण पारिवारिक व्यक्ति है और सबसे बढ़कर, एक शानदार इंसान है।

नैन्सी बार्बी

RRFC (2018-21) – जोन 33, रोटरी क्लब मेसविल, नॉर्थ कैरोलिना।

2010 में, तत्कालीन रोटरी अध्यक्ष मनोनीत कल्याण बेनर्जी को सम्मानित करने के लिए, शेखर ने भारत में 100 स्कूल, 100 अस्पताल, युवतियों के लिए 100 प्रशिक्षण केंद्र और 100 नेत्र अस्पताल खोलने की अपनी परिकल्पना बताई। हम कोलकाता में उनके घर में बैठे थे। और जैसे ही मैंने उन्हें सुना, मुझे एहसास हुआ कि मैं एक दूरदर्शी की उपस्थिति में हूँ।

तब से दुनिया भर में उनका गहरा प्रभाव रहा है। बाल हृदय सर्जरियाँ, नेत्र सर्जरियाँ, साक्षरता के लिए TEACH कार्यक्रम, और सरकारों, गैर-लाभकारी संस्थाओं एवं संगठनों द्वारा हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन - ये सभी उनकी दूरदर्शिता के परिणाम है।

जब भी वह बोलते है, वह हम सभी को ''बड़े सपने देखने'' के लिए प्रेरित करते है। शेखर हमें बेहतर करने, बेहतर बनने, बेहतर सोचने और बड़े कार्य करने के लिए प्रेरित करते है। छोटी परियोजनाओं को ना कहते है।

वह एक दशक पहले बड़ा सोच रहे थे, और मुझे पता था कि मैं उनके सपने का हिस्सा बनना चाहती हूं, जो अब हकीकत बन गया है। शेखर भारत में रोटरी का नेतृत्व करते आ रहे है और वह दुनिया भर में सकारात्मक एवं स्थायी बदलाव लाने के लिए दूसरों को प्रेरित करते है।

ए एस वेंकटेश

रोटरी कलब चेन्नई मम्बलम, 2021–23 रोटरी इंटरनेशनल के निदेशक

शेखर के दिल के सबसे करीब है मानवीय कार्य, जो रोटरी का DNA है। उनके साथ बातचीत निरपवाद रूप से देर रात तक चलती है। मैंने पिछले कई वर्षों में उनके साथ घंटों बिताए है और मुझे अभी तक यह पता कि वह कब खाते है या कब सोते है। उनके पास अनंत ऊर्जा, उत्कृष्ट जन कौशल और प्रेरक विचार है। उनका उत्साह संक्रामक है। अध्यक्ष के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान मैं बोर्ड में सेवा देने को लेकर उत्साहित हूं।

रश्मि सिंह और मधुलिका जैन

शेखर की बहनें

हमारे बड़े भाई शेखर एक स्वप्नदर्शी है जिनका अगला सपना हमेशा पिछले वाले की तुलना में बड़ा और अधिक साहसी होता है। उन्हें हमारे माता-पिता से सामुदायिक सेवा का प्यार विरासत में मिला, और उनका आशावाद, सूक्ष्मता और समर्पण उनकी सफलता के रहस्य है।

हमें देने के लिए उनका पसंदीदा जवाब है ''मैं हूं ना।'' हमारे 50 से अधिक वर्षों से अधिक के साथ में, वह हमेशा अपने वादे के पक्के रहे है।

ब्रायन स्टाइल्स,

रोटरी क्लब बैरी–हुरोनिया, ओंटारियो; अध्यक्ष के सहयोगी

मैं पहली बार शेखर से तब मिला था जब 2012–13 में हम रोटरी मंडल में बैठे थे। हमारा रिश्ता सौहार्दपूर्ण था, लेकिन घनिष्ठ नहीं था। जब शेखर को 2021–22 के रोटरी अंतर्राष्ट्रीय

ऊपर से दक्षिणावर्त: PRID अशोक महाजन, मंडल 3142 के पीडीजी चंद्रशेखर कोल्वेकर, और रोटरी क्लब ठाणे हिल्स के सदस्य अनिंद्य दासगुप्ता, के साथ मेहता मंद दृष्टि वाले छात्रों के लिए एक कंप्यूटर शिक्षा प्रधान करने के कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए; रोटरी क्लब कलकत्ता महानगर द्वारा स्थापित नेत्र अस्पताल में मरीजों से मुलाक़ात। उनके क्लब ने उन गांवों जहां लोगों के घरों में शौचालय नहीं है में लगभग 7,000 शौचालयों का निर्माण किया है; यहां, वह और साथी सदस्य (बाएं से) प्रणय अग्रवाल और संदीप शाह एक टॉयलेट को बनाने में मदद करते हैं; अनु रामपाल विधान के साथ राशि और शेखर मेहता सेविंग लिटिल हार्ट्स प्रोजेक्ट के माध्यम से कार्डियक सर्जरी प्राप्त करने वाले बच्चे से मिलते हुए; जुलाई 2015 में कलकत्ता महानगर की 25 वीं वर्षगांठ सामारो में; कोलकाता में परेश नाथ विद्यालय के छात्रों के साथ कैरम खेलते हुए।

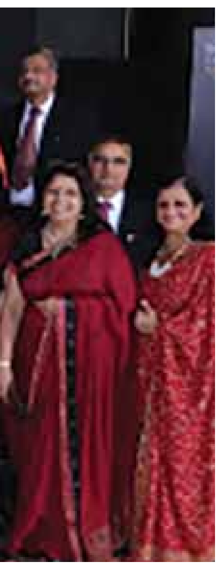

के अध्यक्ष के रूप में नामित किया गया, तो उन्होंने मेरी पत्नी रैंडी और मुझे राशि और उनके लिए सहयोगी बनने के लिए कहा। तब से हमारी गहरी दोस्ती हो गई है।

शेखर की एक सराहनीय बात जो मैंने जानी वह यह है कि वह सलाह पर गौर फरमाते है। उन्हें पता है कि वह सभी चीजों में विशेषज्ञ नहीं है। उदाहरण के लिए, अध्यक्ष-मनोनीत बनने के बाद से, उन्होंने रोटरी के शांति प्रयासों के प्रति अधिक समझ एवं आभार विकसित किया है। उन्होंने कर्मचारियों, रोटेरियनों और हमारे शांति मित्रों से यह जानने के लिए बात की कि कैसे हम संयुक्त राष्ट्र, हमारे रोटरी पीस सेंटरों एवं हमारे शांति मित्रों के अलावा अन्य लोगों के साथ अपने प्रयासों में वृद्धि कर सकते है।

इस बात का उल्लेख नहीं करना मेरी लापरवाही होगी कि शेखर के पास एक अद्भुत हास्यवृत्ति है, जो उन्हें लोगों के साथ जुड़ने एवं उन्हें निश्चिंत करने में सहायता करती है। वह एक उत्कृष्ट वक्ता है और यह सुनिश्चित करते है कि हर कोई इच्छित महसूस करे। हालांकि मुझे पता है कि उन्हें इस बात का अफसोस है कि वे निर्वाचित-अध्यक्षों की प्रशिक्षण संगोष्ठी में शामिल नहीं हो पाए, जहां रोटरी क्लब के अध्यक्षों के साथ उनकी मुलाकात आमने-सामने हुई होती, फिर भी आभासी मंच पर भी उनका जुनून साफ दिखाई देता है।

रितु केड़िया
शेखर की रोटरी सहायक

शेखर का मार्गदर्शी मंत्र है: सेवा वह किराया है जिसका भुगतान मैं इस धरती पर रहने के लिए करता हूं, और मैं एक अच्छा किरायेदार बनना चाहता हूं। वह ऐसे लक्ष्यों की कल्पना करते है जो दूसरों को असंभव लग सकते है। वह अपने सपनों को वास्तविक लक्ष्यों में बदल सकते है। एक रणनीति या एक घटनाक्रम का निर्धारण करते वक्त, जब वह एक टीम के साथ काम करते है तो वह अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते है। शेखर जो कुछ भी करते है उसे जुनून से करने के कारण उत्कृष्टता प्राप्त करते है। वह एक अद्भुत वक्ता है और दूसरों को अपने प्रयासों में शामिल होने के लिए राजी करते है। वह एक महान योजनाकार है और यह अपनी योजना की सफलता सुनिश्चित करने के लिए वह जमीनी स्तर पर गहन

चिंतन-मनन करते है। पूरी प्रक्रिया में उनकी भागीदारी व्यवहारशील होती है।

शेखर अपने वचन के पक्के व्यक्ति है; अगर वह कहते है कि वह कुछ करेंगे, तो वह जरूर करेंगे। वह जरूरतमंदों की मदद करते है और उन्हें दूसरों की मदद करना सिखाते है। वह एक धैर्यवान श्रोता और एक महान परामर्शदाता है - मैं भाग्यशाली हूं कि मैंने इसका प्रत्यक्ष से अनुभव लिया। उन्होंने मुझे सिखाया है कि कैसे कई प्राथमिकताओं को एक साथ सहजता से पूरा किया जा सकता है, जैसा कि वह करते है। वह अपने आसपास के लोगों के प्रति बहुत उदार रहते है।

कमल संघवी

रोटरी क्लब धनबाद, 2019-21 रोटरी इंटरनेशनल के निदेशक

लोग दूसरों की तरह सोचने के इतने आदी हो गए है कि वे अपने स्वयं के दिमाग की संभावनाओं को तलाशने से डरते है। दूसरी ओर, शेखर में कुछ ऐसा सोचने की अदभुत क्षमता है जो अभी तक किसी ने नहीं सोचा। वह उन संभावनाओं को देखते है जहां दूसरों को रास्ता दिखना बंद हो जाता है।

वह लगातार यथास्थिति के बारे में पूछते रहते है और रोटरी के अनुभव, उत्पाद या सेवा को बेहतर बनाने के बारे में सोचते है। शेखर उन सबसे उन्नतिशील लोगों में से एक है जिन्हें मैं जानता हूं। उनके पास हर समस्या का समाधान होता है।

शेखर में दृढ़ता और धैर्य के साथ बाधाओं को दूर करने की जबरदस्त क्षमता है। वह तब तक नहीं सोते जब तक कि वह अपने लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर लेते, चाहे वे कितना भी कठिन क्यों न हो। उनकी टीम के सदस्य भी तब तक आराम नहीं करते, और शेखर सुनिश्चित करते है कि टीम का हर सदस्य उत्कृष्टता के मंत्र का पालन करें।

उनके लिए, हर चीज़ जीवन से बड़ी होना चाहिए। बड़ा सोचना कोई अनोखी बात नहीं है,

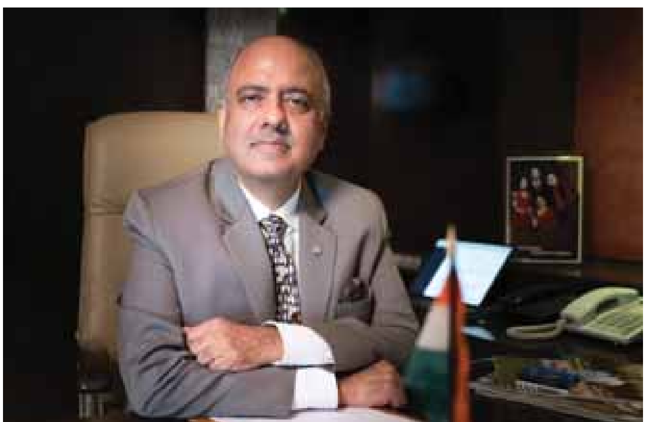

ऊपर से दक्षिणावर्त: मेहता परिवार: बच्चे चांदनी और चिराग, राशी और शेखर, और बहू गीता; रोटरी फाउंडेशन के वर्तमान उपाध्यक्ष संगकू यूं के साथ पानी पुरी का आनंद लेते हुए; शेखर मेहता अपने कार्यालय में; 1999-2000 के रो ई अध्यक्ष कार्लो रवीज़ा और उनकी पत्नी रोसाना के साथ शेखर और राशि मेहता, 1999 की अंतर्राष्ट्रीय सभा में। 2016 में, PRIP कल्याण बेनर्जी और उनकी पत्नी, बिनोटा (सामने की पंक्ति) सहित भारत के रोटरी नेताओं ने आशा किरण कार्यक्रम के माध्यम से हजारों बच्चों को स्कूल भेजने का संकल्प किया; एंड पोलियो नाउ के संदेश को फैलाने के लिए शेखर और राशि मेहता अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

लेकिन बड़ा सोचना और असंभव को हासिल करना अनोखी बात होती है। शेखर का मानना है कि एक सपना वह नहीं है जो आप बंद आँखों से देखते है; सपना तो वह है जो आपको आँखें बंद ही ना करने दे। उनका मानना है कि प्रेम और करुणा आवश्यकताएं हैं, विलासिताएं नहीं; मानवता उनके बिना जीवित नहीं रह सकती। उनका यह भी मानना है कि यदि आप अपने परिवार को खुश नहीं रख सकते, तो आप किसी और को भी खुश नहीं रख सकते।

आनंद सुरेका

रोटरी क्लब कलकत्ता–महानगर

मैं शेखर को 2001 से जानता हूं और 2005 में रोटरी के शताब्दी वर्ष के दौरान मुझे उनके साथ मिलकर करीब से काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मैंने जो भी उनसे सीखा वह आपको बताता हूँ: वह अत्यधिक केंद्रित है, वह किसी भी चीज़ को कभी ना नहीं कहते, वह मजाकिया है और उनके पास गजब की हास्यवृत्ति है। जब भी वह बोलते है, तो दर्शकों को वह हमेशा पसंद आते है, और, इन सभी बातों से बढ़कर, वह एक बहुत ही अच्छे इंसान और एक सच्चे मित्र है। उनकी सभी गतिविधियां

इस धारणा पर आधारित है कि मानवता ही उनका व्यवसाय है।

2008 में, शेखर ने कोलकाता में एक और नेत्र अस्पताल स्थापित करने का सपना देखा। उन्होंने एल वी प्रसाद आई इंस्टीट्यूट के साथ साझेदारी की, जो देश के सर्वश्रेष्ठ नेत्र देखभाल अस्पतालों में से एक है। इसके लिए उन्होंने धन जुटाने में मदद की और इसे आत्मनिर्भर बनाने के लिए अपना समय, संसाधन और ऊर्जा लगाई।

वह हमेशा आगे रहकर नेतृत्व करते है। जब भी देश पर कोई विपदा आई, मैंने शेखर को वहाँ मौजूद देखा। जब गुंटूर या बेगूसराय में बाढ़ आई या पाकिस्तान की सीमा के पास या नेपाल में भूकंप आए, तो शेखर वहाँ मौजूद थे, स्वयं के ऊपर सेवा के लिए अपना मदद भरा हाथ बढ़ाते हुए।

वह हमेशा और अधिक करने एवं सेवा के नए क्षेत्रों का पता लगाने के तरीकों की तलाश में रहते है। चाहे शौचालय का निर्माण हो या पुस्तकालय की स्थापना, उनके पास ऊर्जा और दूरदर्शिता की कभी कमी नहीं होती।

किशोर कुमार चेरुकुमल्ली

रोटरी क्लब वैज़ाग **एलीट; रो ई मंडल 3020 के 2009–10 के** DG

शेखर से मेरी पहली मुलाकात तब हुई जब 2008 में कोलकाता के एक क्लब में वह बोल रहे थे। मैं उनके भाषण से प्रभावित हो गया, जो सरल एवं साहसिक विचारों से भरा हुआ था। 2010 में, मैंने उन्हें हमारे मंडल सम्मेलन में आमंत्रित किया; यहाँ से हमारी एक मजबूत दोस्ती की शुरुआत हुई। मुझे उनके साथ आयोजनों और समितियों में काम करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ और मैंने उनकी असाधारण कार्यशैली को प्रत्यक्ष रूप से देखा। रोटरी में उनका लक्ष्य सेवा, सेवा, आर बस सेवा है।

उनके सपने बड़े है, लेकिन वह एक उत्सुक श्रोता भी है जो अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए एक योजना की समीक्षा करते है, उसका विश्लेषण करते है और फिर उसे लागू करते है। वह रोटरी में दृढ़ता से विश्वास करते है, और जो वह दूसरों से करने के लिए कहते है, उसका स्वयं अनुसरण करते है। वह लोकतंत्र का सम्मान करते है और सामूहिक फैसलों में सबकी राय को ध्यान में रखते है। इस वजह से जो भी उनके साथ काम करता है वह अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए प्रोत्साहित होता है। वह अपनी टीम के सदस्यों की ताकत की सटीकता से पहचान करते है और तदनुसार ही उन्हें रोटरी जिम्मेदारियां सौंपते है। बैठकों में वह अक्सर किस्से और हास्य से नीरसता को भंग करते है।

शेखर को एक बार एक सम्मेलन को संबोधित करना था जिसकी तैयारी के लिए उन्हें कुछ ही घंटे प्राप्त हुए थे। उनका एक पूर्व कर्मचारी उस शहर में रहता था जहाँ कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा था और उसने उन्हें मिलने आने के लिए आमंत्रित किया। हालांकि उनकी समयसारणी पूरी तरह से पैक थी, फिर भी उन्होंने अनुरोध को स्वीकार किया। उन्होंने रिश्तों को बनाए रखने की महत्ता के साथ-साथ निरंतर ऊर्जा की रहस्यमय आपूर्ति, एक दिन में 18 घंटे तक कार्य करने की क्षमता और किसी भी समस्या के लिए तत्काल समाधान प्रदान करने की क्षमता का प्रदर्शन किया।

अनिरुद्ध रॉयचौधरी

रोटरी क्लब कलकत्ता मेगा सिटी; रो ई मंडल 3291 के 2007–08 के DG

शेखर एक चमत्कारी नेता है जो हमेशा सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते है। वह एक महान प्रेरक है जो हमेशा हटकर सोचते है। वह दोस्ती को बढ़ावा देता है, सद्भाव पैदा करते है और उन तक आसानी से पहुंचा जा सकता है। उनका कभी भी हार ना मानने वाला रवैया उनकी सबसे बड़ी ताकत है। वह जमीन से जुड़े व्यक्ति है; वह साधारण जगहों पर उपलब्ध सरल भोजन का आनंद लेते है और अक्सर सड़क किनारे खड़े रहने वाले रेड़ी वालों के मसालेदार भारतीय पकवान खाने जाते है।

वह और राशी एक दूसरे के पूरक है: राशि शांत है और जमीन से जुड़ी हुई है और वह शेखर को ऊंची उड़ान भरने की शक्ति प्रदान करती है।

चांदनी मेहता

शेखर और राशि की बेटी

पिताजी में जीवन के प्रति जबरदस्त जोश और उत्साह है। वह ऊर्जा एवं उत्साह का संचार करते है और अपनी हास्यवृत्ति एवं विचारशीलता से लोगों का दिल जीत लेते है। उनके पास अन्याय के प्रति एक सहज जागरूकता है, और सेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता निष्पक्षता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और लोगों के बीच मेलजोल से उत्पन्न होती है। वह दूसरों में उत्साह जागते है। सबसे महत्वपूर्ण बात, वह खुलकर जीने वाले व्यक्ति है जिनमें जीवन और कार्य के लिए एक अनंत उत्साह है।

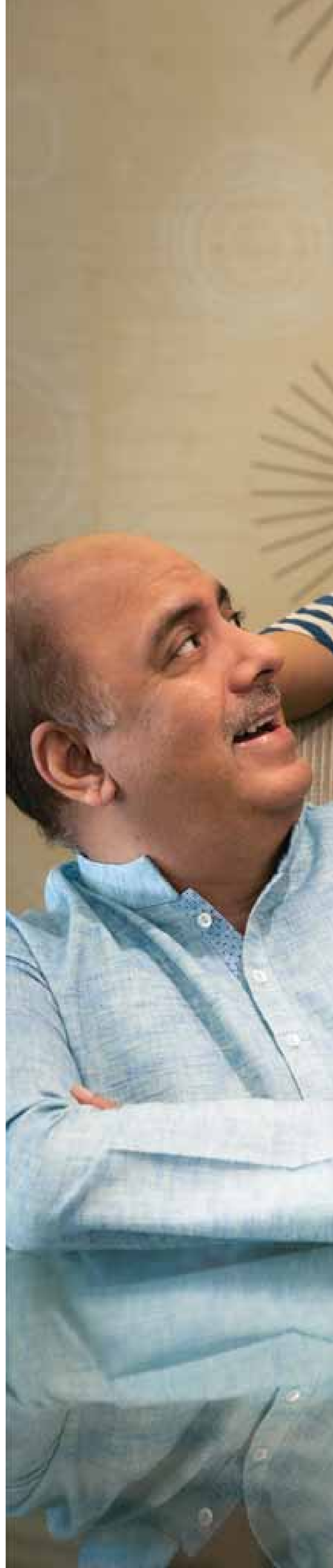

राजेंद्र साबू

रोटरी क्लब चंडीगढ़, 1991–92 रोटरी इंटरनेशनल के अध्यक्ष

शेखर से मेरा परिचय पूर्व मंडल गवर्नर विजय भंडारी के माध्यम से हुआ, जो उनकी यह कहकर बहुत बढ़ाई करते ही कि उनमें रोटरी के भीतर ऊपर उठने की अपार क्षमता है। रोटरी क्लब कलकत्ता के एक सदस्य और मेरे मित्र विनय नेवतिया ने मुझे बताया कि यदि मैं शेखर के घर में जाऊंगा, तो मुझे वह आपदा राहत किट की सामग्रियों से भरा मिलेगा, और शेखर और उनकी पत्नी राशि दोनों खुद बक्सों को पैक करने में व्यस्त मिलेंगे। मैंने महसूस किया कि शेखर एक व्यावहारिक, सेवा-उन्मुख रोटेरियन है।

जब 2004 में बॉक्सिंग डे सुनामी आई, तब शेखर के क्लब ने तबाह हो चुके अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के लोगों के लिए सैकड़ों किट इकट्ठा की। शेखर ने किट देने और आश्रय स्थापित करने में मदद करने के लिए बंगाल की खाड़ी के उन द्वीपों की कई बार हजारों मील की यात्रा की। और 2015 में, शेखर ने नेपाल में आए विनाशकारी भूकंप के बाद वहाँ के लिए किटों को पैक एवं व्यवस्थित किया।

राशि मेहता

शेखर की पत्नी

शेखर की आत्मा गहरी और दिल विशाल है। वह न केवल वास्तव में दयालु है, बल्कि वह दूसरों में भी दया देखते है, और भलाई के लिए किए गए छोटे से छोटे कार्यों के लिए दूसरों की प्रशंसा करने एवं उन्हें प्रोत्साहित करने से कभी नहीं कतराते। वह लोगों के साथ काम करना पसंद करता है, नेतृत्व करने के साथ ही वह टीम में काम करना भी पसंद करते है। जब वह एक टीम के साथ काम करते है तो उनकी प्रसन्नता, ऊर्जा और क्षमताएं दोगुनी हो जाती है। वह असाधारण रूप से सकारात्मक और उत्साही व्यक्ति है। मैंने असफलता के विचार को उन्हें निराश करते कभी नहीं देखा है। यदि कुछ देखा है तो वह यह है कि वह चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों से मजबूत एवं समझदार होकर उभरते है। उन्होंने अपने दिमाग को कठिन परिस्थितियों में उम्मीद की किरण देखने के लिए प्रशिक्षित किया है और मुश्किल हालातों से उभरने का उनमें दृढ़ विश्वास है।

कल्याण बेनर्जी

रोटरी क्लब वापी, 2011–12 रोटरी इंटरनेशनल के अध्यक्ष

मैं पहली बार शेखर से 25 साल पहले मिला था। मैं एक रोटरी अंतर्राष्ट्रीय का निदेशक था, और तत्कालीन-रो ई अध्यक्ष हर्ब

ब्राउन ने मुझे काठमांडू, नेपाल, में एक दक्षिण एशिया सम्मेलन आयोजित करने के लिए कहा जो तब उसी मंडल में जिसमें कोलकाता है। मंडल गवर्नर ने कार्यक्रम आयोजित करने में मेरी मदद करने के लिए युवा रोटेरियनों की एक टीम नियुक्त की, और उनमें से एक विशेष रूप से बुद्धिमान, चतुर और स्पष्टवादी युवक ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। वह विचारों, उत्साह एवं नवाचारों से भरा हुआ था और वह हमेशा सीखने के लिए तैयार रहता था। इस प्रकार मुझे पहली बार शेखर को जानने का मौका मिला।

नेपाल कार्यक्रम की सफलता के बाद, शेखर और मैं संपर्क में रहे। मैंने दिलचस्पी लेकर उनके रोटरी करियर को देखा, पहले वह अपने मंडल के गवर्नर चुने गए और फिर, कुछ साल बाद, एक निदेशक चुने गए। लोगों को जो भी काम उन्होंने दिया, उसमें उत्साहपूर्वक उनका समर्थन प्राप्त करने की उनकी क्षमता से मैं हमेशा चकित था। वह अदम्य थे और हमेशा नए विचारों से भरे रहते थे।

बॉक्सिंग डे सुनामी के बाद, उन्होंने अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की यात्रा की - जो उनके मंडल का हिस्सा होने के बावजूद, हिंद महासागर में 1,000 मील दूर स्थित है। और बाद में उन्होंने एक अद्भुत किट तैयार की, जिसमें एक तम्बू, बिस्तर, प्रसाधन सामग्री, मोमबत्ती, कपड़े और बुनियादी उपकरण शामिल थे।

सभी भारतीय मंडलों के रोटेरियनों ने धन जुटाने में मदद की, और यदि नेपाल में भूकंप आता है, जैसा कि वहाँ अक्सर आते रहते है, या चेन्नई में सुनामी या ओडिशा में चक्रवात या महाराष्ट्र में आपदा आती है, तो किट 24 घंटे के भीतर वहाँ पहुँच जाएंगी। उसके थोड़ी देर बाद शेखर खुद वहां होंगे।

ब्रिटेन स्थित शेल्टरबॉक्स, जिसे रोटेरियनों द्वारा शुरू किया गया था, दुनिया में कहीं भी आपदाओं के बाद राहत प्रदान करने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जाना जाता है। 2015 के आसपास, रोटरी बोर्ड ने शेखर को शेल्टरबॉक्स से मिलकर एक दीर्घकालिक समझौते पर बातचीत करने के लिए कहा। न केवल वह उसमें सफल हुए, बल्कि उन्होंने शेल्टरबॉक्स न्यासी के रूप में सेवा भी दी।

इतने वर्षों में, रोटरी के प्रति अपनी ज़ाहिर ईमानदारी और प्रतिबद्धता के माध्यम से, शेखर ने तकरीबन सभी रोटेरियनों से, हर जगह, अद्भुत विश्वास एवं समर्पण हासिल किया है। मैंने उन्हें अचंभे के साथ देखा जब वह रोटरी में कुछ हद तक अनुकरणीय बन गए और जब उन्होंने भारत को पूरी तरह से साक्षर बनाने में मदद करने की जिम्मेदारी अपने हाथों में ली, तो मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। किसी को यकीन नहीं था कि यह कैसे किया जा सकता है। भारत की आबादी 1.3 बिलियन है, जिनमें से लगभग एक चौथाई साक्षर नहीं है। शेखर ने भारत सरकार से संपर्क किया, सभी उपयुक्त गैर सरकारी संगठनों के साथ जुड़े और रोटरी के प्रयासों एवं ईमानदारी को स्वीकृति दिलवाई।

साक्षरता का यह कार्य भारत को पोलियो मुक्त बनाने जितना ही बड़ा है। अब, जब शेखर रोटरी का नेतृत्व कर रहे है, मुझे विश्वास है कि यह लक्ष्य भी हासिल हो जाएगा। और शेखर यह सुनिश्चित करेंगे कि रोटरी को दुनिया भर में न केवल उस सेवा के लिए पहचाना जाए जो वह करती है, बल्कि हर जगह लोगों को एक साथ लेकर आने के लिए भी पहचान जाए।

मेहता के माता-पिता, सुमेर चंद और वल्लभ मेहता, अपने बच्चों और पोते-पोतियों से घिरे: (पीछे की पंक्ति) चिराग और मधुलिका जैन, राशि और शेखर मेहता, और रश्मि और केके सिंह, (मध्य पंक्ति) गीता और चिराग मेहता शेखर के माता-पिता के साथ, और (आगे की पंक्ति) इशिता और रोशनी जैन; शेखर की बेटी, चांदनी मेहता; और सेजल और संजना सिंह।

जॉन रेज़ेक रोटरी के प्रधान संपादक है।

© Rotary

रोटरी द्वारा कोविड रोगियों के लिए ऑक्सीजन कैब्स

टीम रोटरी न्यूज़

कोरोना रोगियों को आपातकालीन सहायता प्रदान करने और उन्हें पास के अस्पतालों में ले जाने के लिए 'ऑक्सीजन ऑन व्हील्स' परियोजना के तहत, रो ई मंडल 3080 के अंतर्गत, रोटरी क्लब चंडीगढ़ मिडटाउन, द्वारा कोविड प्रोटोकॉल के तहत ऑक्सीजन सिलेंडर और अन्य सुविधाओं से लैस कैब्स लॉन्च किए गए। क्लब के पूर्व अध्यक्ष सलील देव सिंह बाली, जिन्होंने इस परियोजना की परिकल्पना की थी, ने कहा कि क्लब ने एक कार रेंटल सर्विस प्रबंधक 'बड्डी कैब्स', और हरियाणा स्टेट लीगल सर्विसेज अथॉरिटी (HSLSA) के साथ हाथ मिलाया, ताकि एक मरीज को अस्पताल में उचित इलाज मिलने से पहलेवाली पहली माइल कनेक्टिविटी का विस्तार किया जा सके।

ऑक्सीजन ऑन व्हील्स कैब के साथ क्लब के सदस्य।

उन्होंने कहा कि यह सेवा चंडीगढ़, पंचकूला और मोहाली के मरीजों के लिए उपलब्ध होगी। HSLSA के कार्यकारी अध्यक्ष, जस्टिस राजन गुप्ता जो कि पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के न्यायाधीश भी हैं, ने इस परियोजना को झंडी दिखाकर आरंभ किया और क्लब के इस पहल की सराहना की। जरूरतमंद कोव्डि रोगियों के लिए कैब उनके दरवाजे पर ऑक्सीजन सिलेंडर वितरित करेगा और उन अस्पतालों की सहायता भी करेगा जिनके पास बहुत मरीज़ हैं लेकिन रोगियों को ढोने के लिए एंबुलेंस की कमी है। ''ड्राइवरों को परिवहन के दौरान या उनके दरवाजे पर मरीजों को ऑक्सीजन देने के लिए प्रशिक्षित किया गया है,'' बाली ने कहा और यह भी कि इन तीन-शहरों में कोविड रोगियों के लिए ऑक्सीजन कैब सेवा मुफ्त प्रदान की जाती है।

उद्घाटन समारोह में जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं HSLSA के सचिव परमोद गोयल, पंचकूला और मोहाली के न्यायिक और पुलिस अधिकारी और बड्डी कैब्स के संस्थापक-सीईओ सरताज लांबा उपस्थित थे। एजी डॉ रीता कालरा, अध्यक्ष-निर्वाचित सलील चोपड़ा और रोटेरियन रेणु चोपड़ा और परदीप सिसोदिया ने क्लब का प्रतिनिधित्व किया। आपातकालीन परियोजना दिवंगत डीजीएन नवीन गुलाटी को समर्पित की गई। ■

पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय से न्यायमूर्ति राजन गुप्ता रोटेरियन्स की मौजूदगी में कोविड कैब को झंडी दिखाकर रवाना करते हुए।

महामारी के बाद पूर्व की भांति सामान्य परिस्थितियां संभव नहीं: होल्गर नेक

रशीदा भगत

जो लोग ये सोचते हैं कि ''कोविड महामारी के बाद सब कुछ पहले की तरह सामान्य हो जाएगा, वे गलत हैं, क्योंकि यह असंभव है'' ताइपे वर्चुअल कन्वेंशन में अपने उद्घाटन भाषण में रो ई अध्यक्ष होल्गर नेक का कहना था । रोटेरियनों को परिवर्तन को स्वीकार करना होगा और उस से सामंजस्य बिठाना होगा, और साथ ही इस महामारी से पैदा हुए अवसरों और चुनौतियों के बारे में गंभीरता से विचार करना होगा।

''इसके मायने हैं कि रोटरी क्लबों को सामरिक दृष्टि से सोचना होगा और यह विचार करना होगा कि हम पिछले वर्ष के अनुभवों का लाभ किस प्रकार उठा सकते हैं। हम सभी ने देखा है कि वर्चुअल मीटिंग (आभासी बैठकें) कितनी अहम हो सकती है। अंतर्राष्ट्रीय बैठकें अब नियमित रूप से आयोजित हो रही हैं। नई रोमांचकारी सेवा परियोजनाओं को दुनिया भर में, नियत समय पर नियोजित और क्रियान्वित किया जा सकता है और हम पहले से कहीं बेहतर तालमेल के साथ आपस में सहयोग कर सकते हैं।''

इस माहौल में धन का संग्रहण एक चुनौती हो सकती है, उसमें वृद्धि की संभावना भले ही कम हो, ''लेकिन तकनीक की सहायता से उसका समाधान भी संभव है क्योंकि लोग अब अपने द्वारा दिए गए दान का उपयोग होते, कार्यान्वित होते देख सकते हैं। तत्काल उठाये गए इन पारस्परिक कार्यों की वजह से नए विचार और समस्याओं के नए नए समाधान निकल कर आ रहे हैं।''

नेक ने कहा कि रोटरी और रोटेरियनों के लिए, ''यह एक महत्वपूर्ण वर्ष रहा है।'' अफ्रीका के जंगली पोलियो से मुक्त घोषित होने की अच्छी खबर के बाद पोलियो को समाप्त करने की रोटेरियन की प्रतिबद्धता का स्वागत इस खबर से किया गया कि मई की शुरुआत तक, दुनिया भर में जंगली पोलियो वायरस के सिर्फ दो मामले बचे थे। दुनिया से पोलियो का सफाया करने की अपनी प्रतिबद्धता के अलावा, दुनिया भर के रोटेरियन, रोटरी के नए फोकस क्षेत्र - पर्यावरण पर काम करने पर विचार कर रहे थे। ''इस साल रोटरेक्ट को एक नए स्तर पर ले जाने का काम जारी रहेगा और दुनिया में रोटरी, पहले से कहीं ज़्यादा नज़र आएगी। इसके अलावा, दो देश - अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के साथ कई क्लब अपनी रोटरी शताब्दी मनाएंगे।''

रो ई अध्यक्ष ने कहा कि महामारी ने एक और अवसर दिया है, वर्चुअल क्लब मीटिंग का जो युवाओं को आकर्षित कर रहा है। ''दुनिया भर में कोविड -19 के तेजी से फैलने से पहले ही, प्रासंगिक बने रहने के लिए, मैंने, हमारे आसपास हो रहे बदलावों का रोटरी से सामंजस्य बिठाने के महत्व के बारे में बात की थी। उस बदलाव में वर्चुअल क्लब मीटिंग्स भी शामिल थीं। अधिकाँश युवा पीढ़ियों के लिए, डिनर मीट के इर्द गिर्द बने क्लब, उनकी जीवन शैली से मेल नहीं खाते हैं। वे इस अनुभव के साथ बड़े नहीं हो रहे और निश्चित ही यह उनके व्यस्त सामाजिक कैलेंडर के साथ तो बिलकुल भी मेल नहीं खाता।''

अपने गृहनगर हैम्बर्ग में फिल्माई गई बातचीत की शुरुआत में, जिसने एक व्यक्तिगत और वास्तविक मुलाक़ात का आभास दिया, उन्होंने साझा किया कि ''सुज़ैन और मेरे हमारे अपने बच्चे नहीं हैं, लेकिन हमने लगभग 40 यूथ एक्सचेंज ग्रुप्स की मेजबानी

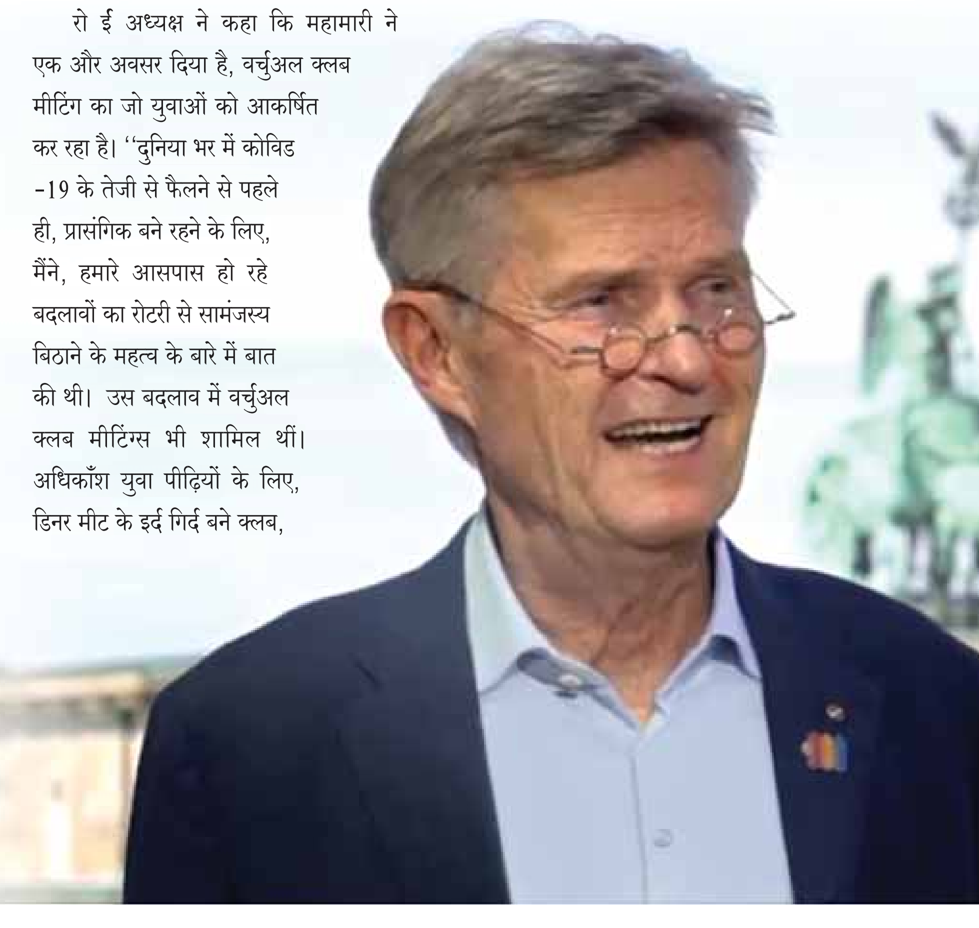

हैम्बर्ग में 325 साल पुरानी जर्मन कला अकादमी के सामने समाचार एंकर और रोटरी क्लब हैम्बर्ग के सदस्य साशा हिंगस्ट के साथ बातचीत में रो ई अध्यक्ष होल्गर नेक।

की है।'' मज़ाकिया अंदाज में उन्होंने कहा कि सुजैन का कहना है कि इससे उनमें सहनशीलता बढ़ती है!

नेक ने कहा कि इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि रोटरी क्लब बुढ़ाने लगे हैं, और रोटरी अपनी औसत आयु कम करने में मदद के लिए रोटरेक्ट पर भरोसा कर रही है। उन्होंने बताया कि उनसे अक्सर पूछा जाता है कि जब कोई युवा उनसे रोटरी के बारे में बताने के लिए कहता है तो वह क्या कहते हैं। वह उन्हें बताते हैं कि यह एक सर्विस क्लब है, लेकिन उससे भी कहीं ज्यादा। ''अंतरराष्ट्रीय संपर्क, नेटवर्किंग को बढ़ावा देने और दुनिया भर में अपनी दोस्ती मजबूत करने के अलावा यह व्यक्तित्व विकास के अवसर देता है।''

महामारी ने भारी तबाही मचाई जिसमें कई लोगों की जान चली गई थी, इनमें ''हमारे कई महत्वपूर्ण लोग भी शामिल थे। जो गुजर चुके हैं, हमें उन लोगों का हमेशा सम्मान करना चाहिए और हमें इस विनाश को जल्द से जल्द खत्म करने के लिए जो भी संभव हों, प्रयास करने चाहिए।''

वह इस बात से खुश थे कि रोटेरियनों ने दुनिया में महामारी का सामना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना जारी रखा और आज ''हम दुनिया भर में टीकाकरण अभियान चला रहे हैं जो इसे समाप्त करने में सहायक होंगे। मैं उन सभी रोटेरियनों को धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने इस मुश्किल हालात से निपटने में के लिए इतना कुछ किया

पोडियम पर बोलने वालों वक्ताओं के बजाय, हर किसी का चेहरा हमारे सामने होता है। हम एक-दूसरे से सीधे आमने-सामने बात करते हैं, और इससे हमें सांस्कृतिक सीमाओं के पार जाने में मदद मिली है।

है। हमारे दुःख और अवसाद की भावना को किसी भी तरह मिटाया नहीं जा सकता है, लेकिन हम उन तरीकों को भी नजरअंदाज नहीं कर सकते , जिनकी वजह से हम सकारात्मक बदलाव कर सके हैं।''

इस परिवर्तन ने हमारे द्वारा तकनीक के उपयोग और परस्पर देखभाल के प्रति हमारी प्रतिबद्धता से एक नई प्रकार की निकटता का जन्म हुआ है। हमारे बीच का समय और दूरी नाटकीय रूप से सिकुड़ गई है। पोडियम पर बोलने वालों वक्ताओं के बजाय, हर किसी का चेहरा हमारे सामने होता है। हम एक-दूसरे से सीधे आमने-सामने बात करते हैं, और इससे हमें सांस्कृतिक सीमाओं के पार जाने में मदद मिली है, नेक ने कहा।

बेशक, ''लोगों को गले लगाना, कॉफ़ी पर गप्पें लड़ाना और हमारी व्यक्तिगत भेंट की यादें ज़रूर कचोटती हैं। ये चीजें ज़रूरी हैं और जल्द ही वापस लौटेंगी। लेकिन हम वर्चुअल के कई हिस्सों में बेहतर हो रहे हैं और अचानक सामने आये विचार को अधिक अवसरों और योजनाओं में परिणीत कर रहे हैं।''

पिछले एक साल में सीखे गए सबक से रोटरी को और अधिक आधुनिक संगठन बनने में मदद मिलेगी। ''हमें युवा पुरुषों, महिलाओं और विविध समूहों का अधिक से अधिक स्वागत कर इस अवसर का उपयोग करने की आवश्यकता है। इस तरह से हम अपनी पहुंच का विस्तार करेंगे, और तकनीक तो विकसित होती ही रहेगी। हमारी सहजता बढ़ती रहेगी। तकनीक सरल, अधिक उपयोगी, रोमांचक और आकर्षक हो जाएगी, और हम डिजिटल दुनिया के साथ अपनी दुनिया का सामंजस्य बिठाने में बेहतर हो जाएंगे।''

सदैव नई तकनीक के समर्थक, नेक ने उपस्थित लोगों से ब्रेकआउट सत्रों में भाग लेने, ''चैट रूम में शामिल होने और नए संपर्क बनाने के लिए इस सम्मेलन की तकनीक का उपयोग कर एक आकर्षक और मजेदार अनुभव उठाने का आग्रह किया।''

उन्होंने गर्मजोशी से वियतनाम का स्वागत किया, रोटरी की उपस्थिति वाला नवीनतम राष्ट्र। ■

हमारी विविधता और भिन्नता ही हमारी शक्ति है: जेनिफर जोन्स

रशीदा भगत

हम में से प्रत्येक विलक्षण है और यही हमें विशिष्ट बनाता है। और हम जानते हैं कि रोटरी में, हमारी विभिन्नता ही वास्तव में हमारी ताकत हैं। हमारा विविध दृष्टिकोण ही हमें दुनिया की सबसे गंभीर और मुश्किल चुनौतियों का सामना करने में सहायता करता है,'' मनोनीत रो ई अध्यक्ष जेनिफर जोन्स ने ताइपे सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा।

रोटरी में विभिन्न पृष्ठभूमि वाले लोग ''एक दूसरे की ओर खिंचे चले आते हैं क्योंकि हम अपनी सेवा का सामर्थ्य जानते हैं। हम सबने इसे करीब से महसूस किया है। हम सेवा करने से उत्पन्न होने वाली उस रहस्यमय, शक्तिशाली ताक़त को जानते हैं, जो अंततः हमारे अंतःकरण को समृद्ध करती है और महानता का अनुभव करवाती है।''

इससे पहले बातचीत की एक वीडियो क्लिप दिखाई गई थी, जोन्स और पीडीजी सिल्विया व्हिटलॉक के बीच, जो रोटरी में महिलाओं के

RIPN जेनिफर जोन्स (दाएं), रोटरी क्लब डुआर्टे, कैलिफोर्निया, यू एस से PDG सिल्विया व्हिटलॉक के साथ बातचीत में।

प्रवेश को संभव बनाने में अग्रणी रही थी। उस चर्चा में सिल्विया ने RIPN को विस्तार से पूरा विवरण बताया, रोटरी में महिलाओं के प्रवेश पर रोक लगाने के लिए किये गए कोर्ट केस से ले कर यूएस सुप्रीम कोर्ट के फैसले सहित कि महिलाओं को रोटरी से बाहर नहीं रखा जा सकता है।

रो ई अध्यक्ष होल्गर नेक ने रोटरी में महिलाओं की सदस्यता वृद्धि करने वाले किसी भी रोटेरियन या अन्य व्यक्ति को सम्मानित करने के लिए सिल्विया व्हिटलॉक लीडरशिप अवार्ड की स्थापना की घोषणा की।

आभासी सम्मेलन में टीम वर्क के महत्व पर जोर देते हुए, जोन्स ने कहा कि एक साथ काम करने से, रोटेरियन महान उपलब्धियां हासिल करेंगे। और जैसा कि

नागरिक अधिकार कार्यकर्ता मार्टिन लूथर किंग ने कहा था, ''हर किसी के पास महान बनने की शक्ति होती है। प्रसिद्धि के लिए नहीं, बल्कि महानता के लिए। क्योंकि महानता सेवा से ही निर्धारित होती है।''

साथ मिल कर काम करने से रोटेरियन न सिर्फ महान उपलब्धियां हासिल करेंगे बल्कि ''भविष्य की पीढ़ियों के लिए, एक ऐसा संगठन छोड़ के जाएंगे जो, शाश्वत मूल्यों को आगे बढ़ाता है जिसे हम बहुत सहेज के रखते हैं। एक ऐसी दुनिया की कल्पना करें जो रोटरी के मूल्यों के साथ अधिक से अधिक मेल खाती हो।''

कोविड महामारी का एक असर हुआ रोटरी में हद से गुजर जाने का सृजन। ''हमें आपस में संपर्क करने के नए तरीके खोजने पड़े, हाथ थामने के नए तरीके ढूंढे गए और अपनी बाहों को थोड़ा और अधिक फैलाया। केवल क्लबों को ही अधिक मजबूत नहीं किया गया, बल्कि तकनीक की वजह से, रोटरी में हम उन लोगों के संपर्क में भी आये जिनसे हम अन्यथा नहीं मिल पाते – और हम उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलने के लिए आतुर हैं जब भी संभव हो।''

आज जब इसकी पहुंच का दायरा बड़ा हो गया है, ''रोटरी ने एक व्यापक, अधिक विशाल और विविध दृष्टिकोण पाया है, जो प्रत्येक लिंग, उम्र, राष्ट्रीयता, भाषा, आस्था या आर्थिक स्थिति के लोगों तक पहुंच रहा है। और अब हम अपनी मित्रता में भी वो विविधता ला रहे हैं जैसी पहले कभी नहीं रही,'' जोन्स ने विचार व्यक्त किये।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

रोटरी के विकास के लिए कार्य योजना का समर्थन करें: जोन ह्यूको

जयश्री

दुनिया तेजी से बदल रही है और आने वाले वर्षों में इसे फलते-फूलते रहने के लिए रोटरी को विकसित होते रहना होगा। संगठन को अगले 20-30 वर्षों में आगे ले जाने के लिए नई कार्य योजना डिज़ाइन की गई है,'' रो ई महासचिव जॉन ह्यूको ने रोटरी आभासी सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा। ''इस योजना का उद्देश्य हमारे संगठन, सदस्यों और समर्थकों का हमारी परिकल्पना का समर्थन करने वाली परियोजनाओं, अवसरों एवं गतिविधियों के लिए मार्गदर्शन करके हमें अपने अतीत का सम्मान करने और हमारे भविष्य को गले लगाने में मदद करना है,'' उन्होंने कहा।

इस योजना की चार प्राथमिकताएं है - रोटरी के प्रभाव को बढ़ाना, इसकी पहुंच का विस्तार करना, प्रतिभागियों की व्यस्तता में अधिकता और अनुकूलन की क्षमता को बढ़ाना। यह रोटरी क्लबों और मंडलों के लिए विकास के पथ पर चलने की चरणबद्ध मार्गदर्शिका है।

''अक्सर, एक समय के बाद संगठन संतृप्ति की बिन्दु तक पहुंच जाते है। तब हमें यह सोचना पड़ता है कि हम क्या नया कर सकते है, हम कैसे अपने सदस्यों को व्यस्त रख सकते है और संगठन को आगे ले जा सकते है। इस कोविड महामारी ने हमें यह दिखाया है कि बदलाव संभव है,'' ह्यूको ने इस बात पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कैसे दुनिया भर के रोटेरियनों ने आभासी मंचों के अनुकूल होना सीखा। ''हमने तकनीक को अपनाना सीख लिया है। हमने विभिन्न ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में भागीदारी के माध्यम से अपनी पहुंच का विस्तार किया है। हमनें समुदायों में परिवर्तन लाने के लिए एवं बड़ी, महत्वपूर्ण परियोजनाओं के निधियन के लिए एक नए ध्यानाकर्षण क्षेत्र - पर्यावरण - को एवं प्रोग्राम्स ऑफ स्केल को शामिल किया है। हमनें रोटरी परिवार में रटारकटरों को महत्वपूर्ण रूप से शामिल करने के लिए कदम उठाएं है। हम इस पर और भी बहुत कुछ कर सकते है।''

क्लब और मंडल रोटरी के मूल तत्व है। ''कार्य योजना का समर्थन करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण चीजों में से एक जो क्लब कर कर सकते है वो यह है कि वे अपनी स्वयं की रणनीतिक योजना विकसित करें जो नई रणनीति की प्राथमिकताओं और उद्देश्यों के अनुकूल हो और उसे प्रतिबिंबित करें,'' उन्होंने कहा। प्रत्येक क्लब अध्यक्ष, नवनिर्वाचित एवं मनोनीत अध्यक्ष को वर्षों तक निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए ''ताकि हम समान लक्ष्य हासिल करने की दिशा में एक साथ मिलकर काम कर सकें। हम विकसित हो सकते है और रोटरी को न केवल प्रासंगिक बल्कि संपन्न भी बना सकते है। हमें लोगों के लिए रोटरी के साथ जुड़ने हेतु नए, प्रभावी मॉडल और तरीके तलाशने और उन्हें अपनाने की जरूरत है।''

इससे पहले हेव्को सम्मेलन में उपस्थित लोगों को इवेन्स्टन, शिकागो, स्थित रो ई मुख्यालय - वन रोटरी सेंटर - जिसमें रो ई अध्यक्ष कार्यालय और AKS गैलरी शामिल है, के आभासी दौरे पर ले गए थे।

सम्मेलन समिति के अध्यक्ष और पूर्व रो ई उपाध्यक्ष केनेथ एम शूपर्ट ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया और उन्हें ''मज़े करने'' और पैदल चलने की चुनौती, खाना पकाने की कक्षाओं, योग और ध्यान सत्रों में भाग लेने और यहाँ तक कि एक डांस पार्टी में भाग लेने हेतु आमंत्रित किया। ■

पर्यावरणवाद हमारी सभी सेवा परियोजनाओं का हिस्सा है: शेखर मेहता

जयश्री

रोटरी सम्मेलन में पर्यावरणवाद पर रोटरी की भूमिका के बारे में बात करते हुए नवनिर्वाचित रो ई अध्यक्ष शेखर मेहता ने कहा कि पर्यावरण की देखभाल हमेशा से रो ई के ध्यानाकर्षण क्षेत्र का हिस्सा रहा है, और यह भी बताया कि इसे एक ध्यानाकर्षण क्षेत्र के रूप में कैसे अपनाया गया।

रोटरी के WASH कार्यक्रमों में रोधक बाँधों का निर्माण, जल निकायों का कायाकल्प और जल संरक्षण शामिल है। ''भले ही कोई कार्यक्रम जल और स्वच्छता से जुड़ा हुआ हो, परंतु वह पर्यावरण को भी संबोधित करता है। उसी तरह, जब हमने स्कूलों और गांवों में शौचालयों का निर्माण किया, तो उन्होंने आसपास के क्षेत्रों में उचित स्वच्छता को संबोधित करने के साथ ही बच्चों और वयस्कों के स्वास्थ्य और स्वच्छता का भी ध्यान रखा,'' उन्होंने बताया। एक मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन कार्यक्रम एक स्वास्थ्य एवं पर्यावरण कार्यक्रम भी है। ''जब हमने पुन: प्रयोग किए जा सकने वाले सैनिटरी पैड को बढ़ावा देना शुरू किया तो इससे महिलाओं के स्वास्थ्य को संबोधित करने में मदद मिली और डिस्पोजेबल नैपकिन से प्लास्टिक तत्व को खत्म करने के साथ, हम इसे पर्यावरण के अनुकूल बना सकते है।''

मेहता ने दुनिया भर में रोटरी क्लबों द्वारा लागू की जा रही विभिन्न पर्यावरण-अनुकूल पहलों पर प्रकाश डाला जिसमें सौर पैनलों की स्थापना, पुनर्चक्रण और समुदायों में वृक्षारोपण को प्रोत्साहित करना शामिल है।

पर्यावरणवाद से व्यापार के नए अवसर भी खुलते है, उन्होंने कहा और इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे पुन: प्रयोग में लाए जा सकने वाले सैनिटरी पैड की शुरूआत करने से महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों को आय सृजन के अवसर प्राप्त हुए है। उन्होंने आगे कहा कि जब रोटरी क्लब गांवों एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों में फलदार पेड़ों के पौधे वितरित करते है, तो वे न केवल हरियाली को बढ़ाते है बल्कि ग्रामीणों को आजीविका का एक स्रोत भी प्रदान करते है।

पर्यावरण देखभाल पर ध्यान देने से व्यवसायों में भारी बचत हुई है और ऊर्जा ऑडिट, जैविक दुकानों, अपशिष्ट पुनर्चक्रण आदि में करियर के अवसर सामने आए है, ''जब हम पर्यावरण देखभाल पर ध्यान केंद्रित करना शुरू करते है,'' उन्होंने कहा। ■

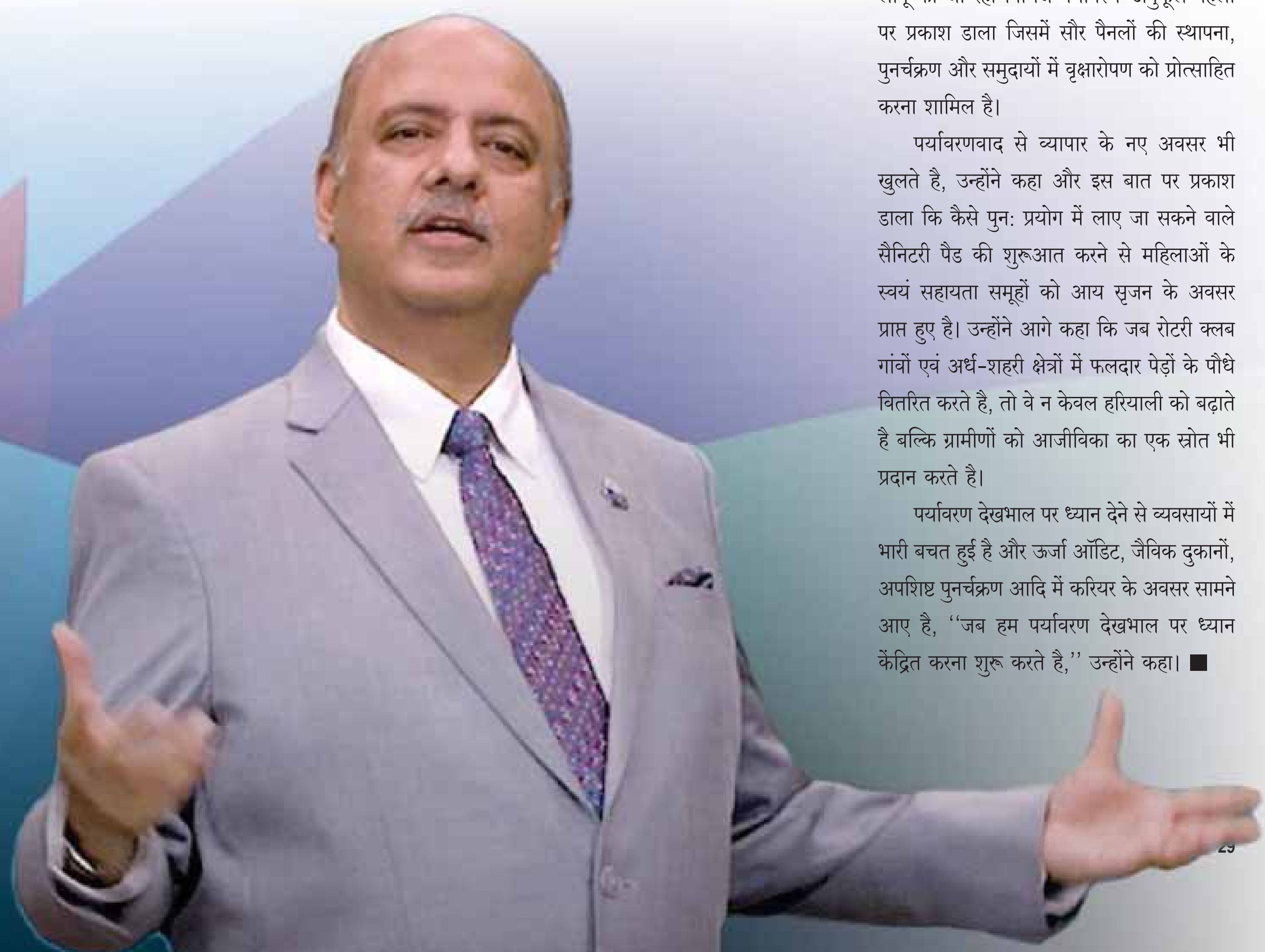

2021 VIRTUAL CONVENTION

हमने TRF को ''गिरने नहीं दिया''

के आर रवींद्रन

रशीदा भगत

इतिहास ऐसी कई आपदाओं, पुनर्जन्मों और अविश्वसनीय उपलब्धियों से भरा पड़ा है जो काले अध्याय के अंधेरे क्षणों में असंभव लगती थीं। रोटरी का जन्म 1905 में शिकागो में हुआ था। उससे केवल 34 साल पहले, पूरा शहर जलकर राख हो चुका था और कुछ ही इमारतें खड़ी थीं। कुछ लोगों ने सोचा कि क्या यह शिकागो पुनर्निर्माण करने के लायक भी था।''

इस कथन के साथ, ट्रस्टी चेयर के आर रवींद्रन ने यह समझाते हुए कि किस प्रकार हर आपदा एक अवसर के साथ आती है, रो इ वर्चुअल कन्वेंशन के प्रतिभागियों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

शिकागो का विनाशकारी विध्वंस भी अपने साथ ''आशा और दृष्टिकोण'' दोनों लेकर आया था, नगर योजनाकार डैनियल बर्नहैम ने शहर की परिकल्पना सम्पूर्ण नए दृष्टिकोण के साथ की थी, जिसने शहर के परिदृश्य को परिभाषित किया और उन सभी निर्माण संरचनाओं के लिए मंच तैयार किया जो हमें आज नज़र आती हैं। उन्होंने शहर की अपनी महत्वाकांक्षी योजना के बारे में कहा: ''छोटी मोटी योजना नहीं बनाएं। उनमें पुरुषों के खून में जोश जगाने की ताक़त नहीं होती; विशाल योजनाएँ बनाएँ, आशा और महत्व के लक्ष्य बड़े और ऊंचे रखें और याद रखें कि एक महान तर्कसंगत मानचित्र दर्ज हो गया, कभी गुम नहीं होगा। लेकिन जब हम चले जायेंगे तो पाएंगे कि एक जीवित चीज दृढ़ता से खुद को आकार ले रही है। याद रहे कि हमारे बेटे, पोते वो काम करेंगे जो हमें आश्चर्यचकित कर देंगे। अपने आपका मूल उद्देश्य व्यवस्था और प्रकाशस्तंभ, सौंदर्य होना चाहिए।''

रवींद्रन ने कहा कि बर्नहैम की योजनाओं का क्रियान्वयन हुआ; शिकागो का विकास हुआ, विशाल और गगनचुंबी इमारतें खड़ी हुईं और ''आशावाद और महत्वाकांक्षा के इस माहौल में ही रोटरी की परिकल्पना रची गई।''

महामारी की चुनौतियों के दौरान टीआरएफ और इसके प्रदर्शन के सन्दर्भ को इस घटना के साथ जोड़ते हुए, उन्होंने कहा, ''2020 की शुरुआत में जब हमने इस रोटरी वर्ष के लिए लक्ष्य निर्धारित किए थे, तो कोविड 19 की इतनी सारी चुनौतियों के चलते, हमारी उम्मीदों को, हमारी योजना को पटरी से उतरने का खतरा था। लेकिन अप्रत्याशित रूप से, हमने अपने निर्धारित लक्ष्य का न केवल बहुत कुछ

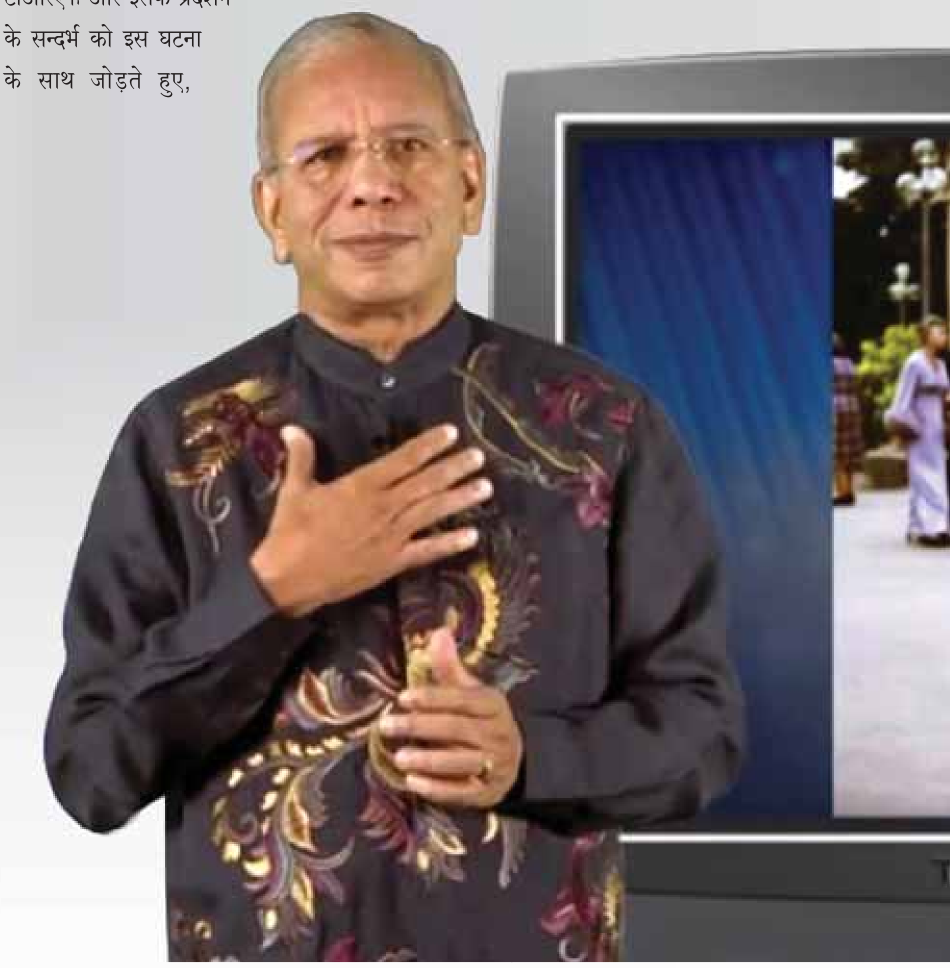

हासिल कर लिया है बल्कि जनवरी 21 की शुरुआत में, अपने लक्ष्य (जनवरी तक वर्ष के लिए निर्धारित लक्ष्य) को भी पार कर लिया है। हमने टीआरएफ को ढहने नहीं दिया।''

ट्रस्टी चेयर ने सभी रोटेरियनों से आग्रह किया कि ''हमारे वास्तुशिल्प को देखें और भविष्य में ऐसी नींव की परिकल्पना करें जो क्षितिज से उठने वाले हर तूफ़ान का सामना करेगी।'' टीआरएफ ने रोटरी के सातवें फोकस क्षेत्र पर्यावरण के लिए, इस साल 1 जुलाई से शुरू होने वाले कार्यक्रम का ढांचा तैयार किया है ''ताकि हमारे क्लबों को नए तरीकों के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया जा सके जो हमारे ग्रह की रक्षा करने और जलवायु परिवर्तन के बढ़ते खतरे कम करने में सहायक होंगे करेंगे।''

''हमने वैश्विक अनुदान के लिए आवेदन करने के लिए, रोटरेक्ट क्लबों के लिए भी अपने दरवाजे भी खोल दिए हैं। 2022 से, रोटरेक्टर्स, हमें परिभाषित करने वाली सेवा परियोजनाओं को आकार देने में एक नई और महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। यहां तक कि रोटरी ने अफ्रीका को पोलियो मुक्त घोषित किए जाने का जश्न मनाने के साथ, टीआरएफ ने बड़े पैमाने की हमारी पहली परियोजना को अनुदान दिया हैं जो जाम्बिया में मलेरिया रोग में 90 प्रतिशत की कमी लाने में सहायक होगा और योजना काफी प्रभावशाली रहेगी, जिसके फलस्वरूप अनगिनत बच्चों और गर्भवती महिलाओं की ज़िंदगी बचाई जा सकेगी। इसमें गेट्स फाउंडेशन और वर्ल्ड विजन से फाउंडेशन को बराबर का वित्तीय योगदान मिला है। भविष्य में यह एक अग्रणी और महत्वपूर्ण उदाहरण साबित हो सकता है। यह योजना, विशाल परियोजनाओं के माध्यम से समाज पर बड़ा प्रभाव डालने के लिए हमारे साथ साझेदारी करने की इच्छा रखने वाले निगमों और बड़ी कंपनियों के लिए द्वार खोल सकती है।

टीआरएफ ने बड़े पैमाने की हमारी पहली परियोजना को अनुदान दिया हैं जो जाम्बिया में मलेरिया रोग में 90 प्रतिशत की कमी लाने में सहायक होगा और योजना काफी प्रभावशाली रहेगी, जिसके फलस्वरूप अनगिनत बच्चों और गर्भवती महिलाओं की ज़िंदगी बचाई जा सकेगी।

रवींद्रन ने औटो और फ्रैन वाल्टर फाउंडेशन द्वारा एक असाधारण शपथ की घोषणा के लिए धन्यवाद दिया, ''फाउंडेशन द्वारा मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका क्षेत्र में एक नया पीस सेंटर (शांति केंद्र) खोला जाएगा, जिसमें हमारी कोई लागत नहीं आएगी।''

''इन सभी महत्वाकांक्षी प्रयासों के बीच, ट्रस्टी लगातार टीआरएफ के बेहद लोकप्रिय प्रमुख कार्यक्रम, वैश्विक अनुदान के लिए अधिक धन जुटाने के तरीकों पर चर्चा कर रहे थे। आंकड़ों का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि 2013-14 में जब जीजी शुरू की गई थी, तो 47.3 मिलियन डॉलर के 868 अनुदानपारित किये गए थे; 2019-20 तक, इन अनुदानों की संख्या बढ़कर 1,359 (95.6 मिलियन डॉलर मूल्य) हो गई थी! एक तरफ जहां वैश्विक अनुदान निधि में 100 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई, वहीं इसी अवधि के दौरान संबंधित वार्षिक अनुदान में वृद्धि उतनी गति से नहीं हुई, केवल 6 प्रतिशत की वृद्धि हुई।''

आगामी वर्षों में भी ''जीजी टिकाऊ बनी रहे, यह सुनिश्चित करने के लिए सुधारात्मक कार्रवाई की गई और जैसा कि हम देख सकते हैं कि भविष्य में उनकी मांग और बढ़ेगी। और हम वहाँ नहीं रुक रहे हैं; टीआरएफ बाहरी एजेंसियों से अधिक धन जुटाने के रास्ते तलाश रहा है। इस साल हमने USAID से इतालवी कोविड संबंधित परियोजनाओं को निधि देने के लिए 5 मिलियन डॉलर प्राप्त किए।'' ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी क्लब क्वींस नेकलेस कहता है ब्रीद इंडिया, ब्रीद

रशीदा भगत

ये ऐसा समय है जब लाखों भारतीय नौकरी खोने का नुकसान झेल रहे है, और इनमें सबसे ज्यादा प्रभावित दैनिक वेतन भोगी, प्रवासी मजदूर और बेघर लोग है। जो लोग अपना भोजन खरीदकर नहीं खा सकते उनकी भूख की पीड़ा को कम करने के लिए मुंबई के रोटरी क्लब क्वीन्स नेकलेस, रो ई मंडल 3141, ने *कम्यूनिटी फ्रिजेस* नामक एक परियोजना शुरू की है।

181 सदस्यों वाले इस 35 वर्ष पुराने क्लब ने अंधेरी, बांद्रा, परेल आदि क्षेत्रों सहित पूरे मुंबई शहर में अनेक सामुदायिक फ्रिज स्थापित किए है, जिन्हें स्थानीय लोगों द्वारा ताज़े भोजन, बचा हुआ भोजन, फल एवं सब्जियों से भरा जाता है। ''जिन्हें भोजन की आवश्यकता होती है वे फ्रिज में से जो कुछ भी चाहिए ले जा सकते है। न कोई उन्हें देखता है और न ही कोई उनकी बेबसी पर अपनी राय बनाता है। जरूरतमंद लोगों की गरिमा को बरकरार रखना और भीख मांगने के कलंक को दूर करना ही इस पहल का उद्देश्य है'', क्लब की अध्यक्ष स्नेहा पाठक कहती है।

दो महत्वपूर्ण कारक है जिनकी वजह से यह परियोजना कार्य कर रही है; अब तक लगभग 45,000 की लागत वाले पांच फ्रिज स्थापित किए जा चुके है। ''पहला कारक फ्रिज का स्थान है, उन्हें देने वाले और लेने वाले दोनों के करीब होना चाहिए। दूसरा, निश्चित रूप से, किसी को, अधिमानतः एक संगठन जिसके परिसर में फ्रिज स्थापित किया गया है, को इसकी जिम्मेदारी लेनी होगी।'' वह कहती है, मंदिर, मस्जिद, चर्च, स्कूल और यहां तक कि रेस्टोरेन्ट भी सफल स्थान साबित हुए है। दो सदस्य - आसिफ पोरबंदरवाला और झझ संजीव मेहता - इस परियोजना के प्रभारी है और वे सुनिश्चित करते है कि फ्रिज में पर्याप्त मात्रा में भोजन मौजूद रहे, कोई बासी भोजन न हो और फ्रिज साफ रहे।

स्नेहा कहती है कि विचार पूरे मुंबई में ऐसे 50 सामुदायिक फ्रिज स्थापित करने का है, लेकिन ''हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि स्थानीय निवासी यह सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी लें कि इन फ्रिजों में हमेशा भोजन भरा रहे।'' फ्रिज में उपलब्ध भोजन के प्रकार पर, आसिफ पोरबंदरवाला कहते है, ''अधिकांशतः इनमें केले, दाल-चावल के पैकेट, या खिचड़ी होती है, कुछ लोग डबलरोटी भी रखते है, जबकि कुछ समोसे या वड़ा-पाव खरीदकर उन पैकेटों को इनमें रखते है। इन फ्रिजों में पानी की बोतलें रखना भी एक बहुत ही विचारशील बात है।''

यह जानना दिलचस्प है कि जो लोग भोजन उठाते है उनमें केवल दिहाड़ी मजदूर या बेघर ही नहीं, बल्कि सड़क पर गश्त करने वाले स्थानीय पुलिसकर्मी या सफाई कर्मचारी भी शामिल होते है। ''हमने छात्रों को भी हमारे फ्रिज से कुछ खाना लेते देखा है। उनमें

एक छोटा बच्चा, रोटरी क्लब क्वीनस नेकलेस द्वारा स्तापित कम्युनिटी फ्रिज में से खाने का पैकेट ले रहा है।

जरूरतमंद लोगों की गरिमा को बरकरार रखना और भीख मांगने के कलंक को दूर करना ही इस पहल का उद्देश्य है।

से एक फ्रिज को कॉन्वेंट स्कूल में रखा गया है और नन ने यह सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी ली है कि फ्रिज पर्याप्त रूप से भरा हुआ हो और साफ भी हो,'' पूर्व अध्यक्ष संजीव मेहता कहते है।

अपनी परोपकारी परियोजनाओं के लिए धन जुटाना इस क्लब लिए कभी समस्या नहीं रही। इस बात को याद किया जाना चाहिए कि पहले लॉकडाउन के दौरान, जब मुंबई के बेघर, सड़क पर रहने वाले, प्रवासी और दिहाड़ी मजदूर आजीविका के लिए संघर्ष कर रहे थे, तब रोटरी क्लब क्वीन्स नेकलेस ने अप्रैल और मई 2020 में जरूरतमंद मुंबईकरों को एक करोड़ ताजे, पके हुए भोजन की आपूर्ति करने के लिए ₹14 करोड़ जुटाए थे।

स्नेहा आगे कहती है, ''कांच के दरवाजे वाले हर फ्रिज को हम रोटरी चक्र की ब्रांडिंग के साथ तैयार करते है, और अगर इसे किसी सदस्य द्वारा किसी प्रियजन की याद में दान किया जाता है, तो उसका नाम भी उस पर प्रदर्शित किया जाता है। इस परियोजना का विस्तार करके हम 50 सामुदायिक फ्रिज लगाना चाहते है, लेकिन इनकी स्थापना हम धीमी गति से कर रहे है, क्योंकि सबसे पहले हम यह सुनिश्चित करना चाहते है कि स्थानीय लोग परियोजना का स्वामित्व ले, बासी भोजन फ्रिज में ना बचे, और इसे नियमित रूप से साफ किया जाता रहे। दूसरी लहर के दौरान, जैसे-जैसे मामले बढ़ रहे थे, और भोजन की मांग भी बढ़ रही थी, क्लब स्वयं ही मांग की कमी को पूरा करने के लिए प्रत्येक फ्रिज में कम से कम 150 भोजन के पैकेटों को भर रहा रहा था।''

मांग की अधिकता के इस समय में, एक व्यक्ति को कई पैकेट एक साथ ले जाने से क्या चीज़ रोकती

है, मैंने उनसे पूछा। वह मुस्कुराती है और कहती है: ''हमें अभी तक ऐसा एक भी नकारात्मक अनुभव देखने को नहीं मिला है। उनमें से कुछ फ्रिज के उद्घाटन समारोहों में मैं वहां मौजूद थी और मैंने लोगों को केवल उनकी जरूरतानुसार भोजन ले जाते देखा। हां, कभी-कभी कोई घर पर मौजूद किसी अन्य व्यक्ति के लिए एक नहीं बल्कि दो भोजन के पैकेट ले जा सकता है, जो ठीक है।''

क्लब की एक और सराहनीय परियोजना, जिसे उचित रूप से *'ब्रीद इंडिया ब्रीद'* नाम दिया गया है, के अंतर्गत कोरोना संक्रमित एवं सांस लेने में तकलीफ महसूस करने वालों को ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर प्रदान किए जा रहे है। इसकी शुरुआत तीन महीने पहले हुई थी, मुंबई और भारत के अन्य स्थानों पर दूसरी लहर द्वारा तबाही मचाने से पहले ही। ''एक कमांडर जिन्हें 26/11 के ताजमहल होटल आतंकवादी हमले में बहादुरी दिखाने के लिए राष्ट्रपति से वीरता पुरस्कार प्राप्त हुआ था, ने ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर (OC) की मांग की थी।'' स्नेहा कहती हैं कि भिवंडी की एक महिला ने फोन किया और कहा कि उनके पास जउ की जमा राशि का भुगतान करने के लिए पैसे नहीं है, लेकिन परिवार के एक सदस्य को इसकी तत्काल आवश्यकता है।

अस्पतालों से छुट्टी मिलने वालों को 15 दिनों के लिए घर पर ऑक्सीजन लेने की आवश्यकता होती है, और चूंकि ऑक्सीजन उपलब्ध नहीं थी, इसलिए HNIs लोग भी जो घर में आइसोलेट रह सकते थे और ऑक्सीजन की सहायता से ठीक हो सकते थे, वे अस्पतालों में भर्ती होने के लिए भाग रहे थे, और गंभीर रूप से बीमार व्यक्ति के लिए आवश्यक बेड घेर रहे थे, क्योंकि OC ज्यादा कीमत देने पर भी उपलब्ध नहीं हो रहे थे।

हमें अभी तक ऐसा एक भी नकारात्मक अनुभव देखने को नहीं मिला है। मैंने लोगों को केवल उनकी जरूरतानुसार भोजन ले जाते देखा।

ऑक्सीजन की कमी की गंभीरता को देखते हुए पालघर, महाड और नासिक के अस्पताल भी मदद के लिए पहुंचे.

क्लब की सेवा शाखा, *टीम मिरेकल*, हरकत में आई और जउ को उधर देने एवं जरूरतमंद मरीजों को मुफ्त में देने के लिए इस परियोजना को शुरू किया गया। ''हमने जाति, वर्ग या पंथ के बारे में कोई सवाल नहीं पूछा; हमारा एकमात्र उद्देश्य मरीजों को स्थिर करके घर पर रहने में मदद करना था और ऐसा करके अस्पतालों में बिस्तरों की मांग और दबाव को कम करना था। हमने जल्द ही 40 मशीनों का एक बैंक बनाया, जिसे ₹50,000 की औसत लागत से हासिल किया गया था, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हमें कभी किसी को ना नहीं कहना पड़े,'' स्नेहा कहती है।

प्रशंसनीय ढंग से, इस परियोजना के लिए आवश्यक धन को क्लब के सदस्यों के माध्यम से जुटाया गया था। इस परियोजना में ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर को 10-15 दिनों के लिए निःशुल्क उधार दिया जाता है, और लगभग 35 कन्सन्ट्रेटर लगातार परिचलन में रहते है, और 200 से अधिक लोग पहले ही इस योजना से लाभान्वित हो चुके है।

इन OC की उपलब्धता के बारे में सोशल मीडिया के माध्यम से जागरूकता फैलाई गई और ''हमारा संदेश वायरल हो गया। हमने अस्पतालों में पोस्टर भी लगाए और डॉक्टरों को भी इस बात की जानकारी दी, उन्होंने आगे कहा। एक क्लब सदस्य द्वारा बांद्रा स्थित उनके एक अतिरिक्त घर को उपयोग करने की मंजूरी देने के बाद, OC को वहां रखा जाता है और क्लब द्वारा नियुक्त किए गए दो

यह और सामने वाला पृष्ठ: क्लब द्वारा किराए पर दिए गए ऑक्सीजन सांद्रता की मदद से कोविड रोगियों को ऑक्सीजन का समर्थन मिला।

टेली-कॉलर फोन का जवाब देते है। तीन सदस्यीय कोर टीम - जिसमें रीमा शाह, PP मनोज गुरसाहनी और ऐन शेफाली मेहता शामिल है - फिर अनुरोध की वास्तविकता पर निर्णय लेती है, और रोगी को ट्रैक करती है। ''हम सुनिश्चित करते है कि कन्सन्ट्रेटर अच्छी स्थिति में लौटाया जाए, ताकि इसे साफ किया जा सके और अगले रोगी के लिए तैयार किया जा सके। अब तक, हमारे साथ एक भी बुरा अनुभव नहीं हुआ है,'' रीमा शाह कहती है।

मौजूदा सहरुग्णता की वजह से अस्पताल में भर्ती किए गए दो मरीजों को छोड़कर, क्लब से इस सुविधा का लाभ उठाने वाले सभी लोगों ने होम आइसोलेशन में अच्छा प्रदर्शन किया, ''और इसलिए अस्पताल के बिस्तरों पर दबाव कम करने का हमारा प्रयोजन भली-भांति पूरा हुआ,'' पूर्व अध्यक्ष मनोज गुरसाहनी कहते है।

क्लब की एक अन्य महत्वपूर्ण सेवा परियोजना अंदरूनी इलाकों में स्थित गांवों के रोगियों की मदद कर रही है, जो जिला मुख्यालय के अस्पतालों से लगभग दो घंटे की दूरी पर है। ''उन्हें उन्नत जीवन रक्षक एम्बुलेंस की सख्त जरूरत थी। उन्होंने अक्सर देखा कि इतनी दूरी तय करने के बाद भी, अत्यधिक दबाव झेलने वाले अस्पतालों में भर्ती होने में घंटों लग रहे थे, क्लब अध्यक्ष कहते है। ₹1.4 करोड़ की कुल लागत से महाराष्ट्र के ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसी सात अच्छी तरह से सुसज्जित एम्बुलेंसों का परिचालन किया जा रहा है।

लागत की आधी राशि CSR के जरिए जुटाई गई, बाकी आधी क्लब सदस्यों ने इकट्ठा की।

जरूरतमंद व्यक्ति को भोजन का पैकेट प्रदान करते स्वयंसेवक।

एम्बुलेंसों को अन्य मॉनिटरों के साथ ऑक्सीजन की आपूर्ति एवं वेंटिलेटर से सुसज्जित किया गया है और ये एम्बुलेंस दूरदराज के गांवों से एक गंभीर रोगी को निकटतम अस्पताल पहुंचने तक सहायता प्रदान करने में सक्षम है। इस परियोजना को राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग, महाराष्ट्र, के साथ मिलकर किया जा रहा है, जो एम्बुलेंसों का रखरखाव एवं प्रबंधन करेगी।

हमने एक व्हाट्सएप संदेश डाला गया, और तीन घंटे के अंदर हमने अपने क्लब के सदस्यों से 4,000 किराना राशन किट के लिए ₹34 लाख जुटाए। एक बाहरी दानकर्ता।

इसके बाद यह पाया गया कि ग्रामीण और सरकारी अस्पतालों के साथ-साथ दैनिक रूप से बढ़ रहे कोविड केंद्रों में आ रहे हजारों लोगों के लिए दवाओं की आवश्यकता थी। हमने दवाइयाँ भी प्रदान की। क्लब द्वारा नेहरू सेंटर और पोद्दार अस्पताल में स्थित कोविड उपचार केंद्रों के अलावा, सेंट जॉर्ज, KEM और GT अस्पताल जैसे सरकारी अस्पतालों के साथ-साथ महाड के अस्पतालों में भी 7 लाख की दवाइयों की आपूर्ति की गई।

क्लब द्वारा दान की गई एक ऑक्सीजन युक्त वैन को क्यूपेम कोविड केयर सेंटर, गोवा, में तैनात किया गया था, और इसने गोवा शहर के भीतर रोगियों को घर से अस्पताल और वापस घर पहुंचाया और एक बिस्तर मिलने तक उन्हें ऑक्सीजन प्रदान की।

जब मई 2021 में मुंबई को कोविड महामारी की दूसरी और अधिक घातक लहर की वजह से लड़खड़ाते देखा गया, और शहर में लॉकडाउन लगा दिया गया, तब क्लब ने 3,100 राशन किटों की आपूर्तियां करने का फैसला किया, और प्रत्येक किट में एक महीने तक चार लोगों के परिवार को खिलाने के लिए पर्याप्त राशन था। इस क्लब के लिए धन जुटाना कभी कोई समस्या नहीं रही। इस क्लब के कम से कम 70 प्रतिशत सदस्य सामुदायिक कल्याण परियोजनाओं के लिए धन दान करते है, और पैसा अक्सर, और तेजी से, क्लब के व्हाट्सएप ग्रुप पर इकट्ठा किया जाता है। ''प्रत्येक राशन किट की कीमत ₹850 है; हम 3 जून को वितरण शुरू करना चाहते थे, और एक दिन पहले शाम 8 बजे एक व्हाट्सएप संदेश डाला गया, और तीन घंटे के अंदर हमने अपने क्लब के सदस्यों से 4,000 किराना राशन किट के लिए ₹34 लाख जुटाए। एक बाहरी दानकर्ता ने 1,000 किट के लिए योगदान किया।'' इस प्रकार कुल कुल 5,000 राशन किटें वितरित की गई, स्नेहा कहती है।

यह साबित करते हुए कि यह क्लब वास्तव में परवाह करता है, पिछले लॉकडाउन के दौरान, जब सामुदायिक फ्रिजों में भोजन की आपूर्ति बंद हो गई थी, तब क्लब ने पांच सामुदायिक फ्रिजों में हर दिन 150 पका हुआ भोजन रखने के लिए पैसा जुटाया था। ■

रोटरी-रोटरेक्ट में तालमेल

जयश्री

रोटरी आभासी सम्मेलन में रोटरी क्लब ताइपे डेलाइट, ताइवान, की चार्टर अध्यक्ष, यिचुन एलिस लिन ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे रोटरी के समान लक्ष्य - समुदायों को बदलना - के लिए रोटेरियन और रोटरेकटर एक साथ मिलकर काम कर सकते है।

2019 में विधान परिषद द्वारा रोटरेक्ट क्लबों को एक सदस्यता प्रकार के रूप में आधिकारिक तौर पर मान्यता देने के बाद, तत्कालीन रो ई अध्यक्ष मार्क मलोनी द्वारा नियुक्त एलीवेट रोटरेक्ट टास्क फोर्स ने इस नई स्थिति को प्रतिबिंबित करने और एक समावेशी, अभिनव एवं लचीले सदस्यता अनुभव हेतु रोटरेक्ट नीतियों को अपडेट करने की अनुशंसा की।

एलिस, स्वयं एक दोहरी सदस्य, ने प्रशंसा की कि कैसे इस उन्नत दर्जे से रोटेरियनों और रोटरेक्टरों दोनों को लाभ हो सकता है। ''क्लब स्तर पर, एक सेवा परियोजना या कार्यक्रम की योजना बनाते समय, जब रोटरेकटर अच्छे विचार पेश कर सकते है, तो उन्हें नेतृत्व करने और साथ ही परियोजना का प्रबंधन करने हेतु आमंत्रित किया जाना चाहिए। रोटरेकटर महान नेतृत्वकर्ता है,'' रोटेरियनों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा और रोटरेकटरों को उन्होंने सुझाव दिया, ''यदि आपके पास कोई सेवा परियोजना है, तो आप मदद के लिए रोटेरियनों के पास जा सकते है। उनके पास अपने सुविकसित नेटवर्क के माध्यम से पेशेवर अनुभव और संसाधन है।''

इंस्टाग्राम और फेसबुक जैसे सामाजिक मीडिया मंचों का उपयोग करने में रोटरेकटर अच्छे है। टीम में एक रोटरेकटर के होने से रोटेरियनों को अपनी पहुंच का विस्तार करने में मदद मिल सकती है। एलिस ने सिफारिश की कि रोटरी की मंडल समितियों का हिस्सा बनने के लिए रोटरेकटरों को आमंत्रित किया जाना चाहिए। ''प्रौद्योगिकी में उनका ज्ञान प्रभावी मंडल प्रशिक्षण कार्यक्रमों को विकसित करने में मदद करेगा,'' और उन्होंने आगे कहा कि उनकी मंडल समितियों को रोटेरियनों और रोटरेकटरों दोनों के योगदान से अत्यधिक लाभ हुआ है। ''जब हमने अपनी प्रशिक्षण सेमिनारों संगोष्ठियों में भाग लेने के लिए रोटरेकटरों को आमंत्रित किया तो हमने एक अद्भुत श्रृंखलित प्रतिक्रिया की शुरूआत की। कई युवा मंडल समितियों के अध्यक्षों ने रोटरेकटरों को अपनी समितियों में शामिल होने और सेवा करने हेतु आमंत्रित करना शुरू कर दिया। बदले में, DRR ने मंडल सेवा परियोजनाओं को विकसित करने के लिए रोटरी क्लबों से मदद मांगी। रोटरी और रोटरेक्ट के पास साथ मिलकर काम करने हेतु तालमेल विकसित करने के लिए अभी भी बहुत सारे तरीके है। इससे न केवल उन लोगों को लाभ होता है जिनकी हम सेवा करते है, बल्कि स्वयं को भी लाभ होता है। हम जितने अधिक जुड़े रहेंगे, हमारे पास उतने ही अधिक अवसर होंगे। लंबे समय में, हम रोटरी के लिए भी अवसर खोल रहे है,'' एलिस ने कहा। ■

रो ई मंडल 3232 का मेडिकल गूगल

रशीदा भगत

हम सभी ने कोविड महामारी की विनाशकारी दूसरी लहर के दौरान अस्पतालों के बाहर खड़ी एम्बुलेंस की कतारों की तस्वीरें देखी हैं। हम सब ऑक्सीजन के साथ साथ अस्पताल में बेड और यहां तक कि वेंटिलेटर खोजने के जबरदस्त दबाव से गुजरे थे। एक पूर्व रोटेरियन का फोन आया कि वह चेन्नई में सरकारी अस्पताल के बाहर इंतजार कर रहा था। ''यहां एम्बुलेंस की कतार लगी हुई है, मेरा दामाद बीमार है और उसका ऑक्सीजन का स्तर गिर कर 80 तक पहुँच गया है'' रो ई मंडल 3232 के डीजीएन और प्रख्यात मैक्सिलोफेशियल सर्जन डॉ एन नंदकुमार याद करते हैं।

आईपीडीजी जी चंद्रमोहन की इस पहल के लिए उन्हें धन्यवाद है जिन्होंने समय रहते, रोटेरियनों की स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों में सहायता करने के लिए रोटरी मण्डल के डॉक्टरों का एक समूह बना लिया था जिसमें रो इ मण्डल 3232 के 165 डॉक्टरों सहित 193 स्वास्थ्य पेशेवरों का एक मजबूत समूह तैयार था। डॉक्टरों का समूह, जिसे मंडल की सामुदायिक सेवा समिति के अध्यक्ष, डॉ वी श्रीराम इसे 'मेडिकल गूगल' के रूप में संदर्भित करते हैं - क्योंकि इसमें न केवल विशेषज्ञ और सुपर विशेषज्ञ चिकित्सक हैं, बल्कि अस्पताल प्रबंधन, फार्मा उद्योग और चिकित्सा उपकरण निर्माताओं से जुड़े पेशेवर भी शामिल हैं। वर्तमान डीजी एस मत्तपलनियप्पन द्वारा इसे और सुदृढ़ किया गया क्योंकि वो महामारी को देश पर अपना शिकंजा कसते देख रहे थे।

SOS मिलने पर, डॉ नंदकुमार तुरंत डॉक्टरों के समूह में पहुंचे और कहा, ''हमें तत्काल अस्पताल में एक बेड की जरूरत है।'' डीआरएफसी एम अंबालावनन ने तुरंत जवाब दिया कि एमएमआरवी अस्पताल में एक बिस्तर उपलब्ध है और ''हमने उसे तुरंत वहां स्थानांतरित कर दिया। उन्होंने रोटरी छोड़ दी थी लेकिन मैं अभी भी उनके संपर्क में था। दामाद ने इलाज कराया, ठीक हो गए और छुट्टी दे दी गई।''

इस मदद का नतीजा यह हुआ कि ''वह कृतज्ञ व्यक्ति रोटरी में लौट आया, समय रहते रोटरी की मदद के लिए धन्यवाद, आज मेरा दामाद जीवित है।''

एक महान उदारता

ऐसे बहुत सारे किस्से हैं। डीजी मुत्तु दो दिलचस्प किस्से सुनाते हैं। इस डॉक्टरों के समूह के एक सदस्य और मध्यम और निम्न वर्गों की ज़रूरतों को पूरा कर रहे चेन्नई के एक प्रमुख अस्पताल वॉलेंटरी हैल्थ सर्विस (वीएचएस) के सचिव, डॉ एस सुरेश ने उन्हें एक हृदयविदारक कहानी सुनाई। दशकों से वीएचएस को रोटरी प्रोन्नत करने में सहायता करता रहा है। तिरुवन्नामलाइ में एक रोटेरियन अपने माता-पिता

बाएं से: RID 3232 कोविड टास्क फोर्स के अध्यक्ष पी सतीश, डीजीएन डॉ एन नंदकुमार, आईपीडीजी जी चंद्रमोहन, डीजी एस मुत्तुपलनियप्पन, मंडल सामुदायिक सेवा अध्यक्ष डॉ वी श्रीराम, और रोग निवारण और उपचार अध्यक्ष डॉ वसुधा राजशेखर।

में से एक को महामारी में खो चुका था और उसने अपनी कोविड-पॉजिटिव पत्नी को अस्पताल में भर्ती कराया जो बहुत बीमार थी जिसे बहुत गंभीर स्थिति में वीएचएस लाया गया था। ''अपनी पूरी कोशिश के बावजूद वो उसे बचा नहीं सके। इस दंपति की दो छोटी बेटियां थीं। ₹3.8 लाख का बिल आया था और रिश्तेदार इस राशि को जुटाने की कोशिश कर रहे थे।'' ''लेकिन क्योंकि वह अपने पीछे दो छोटी बेटियों को छोड़ गई थी, डॉ सुरेश ने इस परिवार से एक रुपया भी नहीं लेने का फैसला किया। इस महामारी के दौरान इस तरह की अद्भुत उदारता कई जगह देखने को मिली है।''

डीजी ने वीएचएस की ही एक और घटना का जिक्र किया। सामुदायिक सेवा प्रमुख डॉ श्रीराम ने एक मरीज को रेफर किया था और ''उसके परिवार को काफी बड़े बिल की उम्मीद थी, लेकिन एक छोटा सा बिल मिला था हालांकि उन्होंने उस बिल से 30,000 रुपये अधिक भुगतान करने पर जोर दिया था। जिसके एवज में डॉ सुरेश ने अस्पताल प्रबंधन से फोन पर शिकायत कर दी कि वे बिस्तर खाली नहीं कर रहे हैं और ज़्यादा पैसे देना चाहते हैं!''

उन्होंने डॉक्टरों के समूह को धन्यवाद देते हुए कहा: ''इस समूह ने बहुत सारे लोगों की जान बचाने के लिए शानदार सेवाएं दी हैं। ऐसे उदाहरण भी हैं जब मैंने रात 10 बजे एक अनुरोध किया और इस समूह ने जरूरतमंदों की मदद के लिए सुबह 3 बजे तक काम किया है। मंडल 3232 उनकी मदद के बिना इस महामारी को इतनी अच्छी तरह से नहीं संभाल सकते थे। डॉ श्रीराम, डॉ नंदकुमार और मंडल रोग निवारण और उपचार अध्यक्ष डॉ वसुधा राजशेखर को उनके इस अथक परिश्रम के लिए सलाम है।''

उनकी सफलता का राज़

डॉ नंदकुमार का कहना है कि अगर चेन्नई और तमिलनाडु वास्तव में ऑक्सीजन की आपूर्ति के सम्बन्ध में कभी संकट में नहीं पड़े, तो इसका श्रेय जाता है TNMSC (तमिलनाडु चिकित्सा सेवा निगम) के एमडी पी उमानाथ को। उनकी योजना और कार्रवाई को धन्यवाद है, हमारे पास ऑक्सीजन की आपूर्ति पर्याप्त थी। एक और चीज जिसने मदद की वह है तमिलनाडु की मजबूत स्वास्थ्य सेवा वितरण प्रणाली, जिसने हमारे डॉक्टरों के समूह को प्रभावी रूप से मददगार होने में सहायता की।'' लगभग हर अस्पताल, चाहे वह सरकारी हो या निजी या गैर-लाभकारी, प्रत्येक में कम से कम एक रोटेरियन डॉक्टर ज़रूर है, वह कहते हैं।

उनका उद्देश्य, वह कहते हैं कि प्रत्येक अस्पताल से कम से कम एक प्रतिनिधि रखना था और डॉक्टरों के व्हाट्सएप ग्रुप में कहते: ''हम सामान्य स्थिति में ऐसा नहीं करते हैं, लेकिन ये असाधारण परिस्थिति हैं और आपकी मदद से अस्पताल में बिस्तर उपलब्धता की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करने से बहुत फर्क पडेगा।''

डॉ वसुधा कहती हैं कि हालांकि RID 3232 ने काफी तादाद में बेड बनाए, ''लेकिन तमिलनाडु सरकार पहले ही 15,000 कोविड बेड जोड़ चुकी थी लेकिन उनके पास ऑक्सीजन सिलेंडर, सांद्रक, नर्स, पीपीई इत्यादि बुनियादी चीजें नहीं थीं।''

वह याद करती हैं कि दूसरी लहर के दौरान एक समय ऐसा भी था जब चेन्नई के सबसे बड़े सरकारी अस्पतालों में से एक, स्टेनली अस्पताल में दवाओं की कमी हो गई थी। ''इसलिए नहीं कि उनके पास पैसा नहीं था, बल्कि इसलिए कि पीछे से स्टॉक नहीं आ रहा था। वे हम रोटेरियन के पास पहुंचे, क्योंकि उन्होंने पहली लहर में हमारा काम देखा था। हमारे सहपाठी और दोस्त सभी सरकारी अस्पतालों में थे और वे हमारी मदद मांगते थे कि क्या हम निजी आपूर्तिकर्ताओं से दवाएं खरीद कर दे सकते हैं। इसमें रक्त के थक्कों को रोकने के लिए ब्लड थिनर जैसी आम दवाएं भी शामिल थीं।''

डॉ श्रीराम कहते हैं, ''ऑक्सीजन कॉन्सेंट्रेटर की आवश्यकता कई जगहों पर थी और डीजी मुत्तु ने हमारे क्लब से यह कहा था कि अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद ऑक्सीजन की आवश्यकता वाले लोगों को घर पर ही ओसी उपलब्ध करवाई जाए।''

उत्पत्ति

इस समूह की उत्पत्ति के बारे में बताते हुए आईपीडीजी चंद्रमोहन ने कहा कि मार्च 2020 में जब कोरोनो वायरस फ़ैल गया और लॉकडाउन की घोषणा कर दी गई थी, ''सब परेशान थे, हमें इस वायरस के बारे में कोई जानकारी नहीं थी और यहां तक कि डॉक्टरों को भी पूरी तरह से मालूम नहीं था कि वास्तव में यह बीमारी क्या है। मैंने सोचा कि फ्लू, मलेरिया, टाइफाइड आदि सामान्य बीमारियों के लिए भी मंडल के लगभग 5,000 रोटेरियन (अपने परिवारों के साथ 20,000) को चिकित्सकीय परामर्श की आवश्यकता रहती है। और RID 3232 में इतने अद्भुत डॉक्टर हैं, सामान्य स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध करवाने के लिए डॉक्टरों का एक समूह शुरू किया गया था और महामारी ने ठीक उसके बाद प्रहार किया था।''

60 सदस्यों के साथ जिस समूह की शुरुआत हुई थी आज वो संख्या 193 तक पहुंच गई है जिसमें 165 डॉक्टर हैं; शेष सम्बंधित स्वास्थ्य सेवा क्षेत्रों से हैं। जैसे-जैसे महामारी ने विकराल रूप धारण किया, इस समूह ने परामर्श, सलाह, अस्पताल में भर्ती होने में ज़बरदस्त मदद की।

डीजी मुत्तु ने कहा कि ''आपस में ज्ञान साझा करके यह समूह उचित कीमत पर सही उपकरण खरीदने में एक-दूसरे की मदद कर रहा है। उन्होंने आपस में कई बार विचार विमर्श कर मंथन के सत्र आयोजित किये जिनमें मैं ने भी भाग लिया था, भले ही उनकी बातचीत और चर्चा मेरे लिए ग्रीक या लैटिन भाषा के समान होती थी, कुछ पल्ले नहीं पड़ता था। लेकिन उनकी प्रतिबद्धता और जानकारी का उपयोग अनुकरणीय है।''

उन्होंने कहा कि रो इ मंडल 3232 ने दृष्टिबाधित, विकलांग और वरिष्ठ नागरिकों के टीकाकरण के लिए चेन्नई निगम को 15 मोबाइल वैन दान में दी हैं। ट्रैफिक सिग्नल पॉइंट्स पर ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों के महत्वपूर्ण स्वास्थ्य मानकों की जांच के लिए के लिए चार वैन प्रदान की गई हैं ताकि उनका स्वास्थ्य बढ़िया रहे। ''यह सब डॉ श्रीराम के मार्गदर्शन और नेतृत्व में किया गया। इस समूह को धन्यवाद है जिसकी बदौलत ऐसे

कई प्रख्यात डॉक्टर रोटरियनों के परामर्श के लिए उपलब्ध हैं जिनके साथ अन्यथा मुलाकात अक्सर मुश्किल होती। अन्य मंडलों को भी हमारे उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए, डीजी ने कहा।

बिस्तरों की अप्रत्याशित मांग

ईएनटी सर्जन, डॉ श्रीराम, जो अब स्वास्थ्य देखभाल प्रबंधन में अधिक समय देते हैं और चेन्नई में अपना क्लिनिक चलाते हैं, उन्होंने कहा कि मई माह के दौरान, जब भारत में दूसरी कोविड लहर आई, ''अस्पतालों में बिस्तरों की मांग अप्रत्याशित रूप से बढ़ गई थी, ऑक्सीजन की आपूर्ति और रेमडेसिविर जैसी दवाओं की कमी हो चली थी। एक महीने तक, सुबह से देर रात तक अस्पताल में बिस्तर दिलाने के लिए हमें अनगिनत कॉल आते रहे। पैसा तो कोई मानदंड था ही नहीं बस, लोग अपने प्रियजनों को कुछ चिकित्सकीय उपचार दिलवाना चाहते थे।''

''हमने ऑक्सीजन कंसन्ट्रेटर (ओसी) खरीदने का निर्णय लिया; हमने 100 ओसी जुटाना शुरू कर दिए और अतिरिक्त 100 ओसी के लिए एक भागीदार के साथ करार किया है, जिसे हम उपयोग के लिए मुफ्त में देंगे। कई मरीज हैं जिन्हें अस्पतालों से तो छुट्टी मिल जाती है, लेकिन इसके बावजूद उन्हें घर पर ज2 सपोर्ट की जरूरत होती है और ऐसे लोगों के लिए जउ एक बहुत बड़ी मदद है।''

इनकी फंडिंग पर, डॉ श्रीराम कहते हैं, ऑनलाइन डॉक्टर के परामर्श ऐप, ''पोर्टिया द्वारा 100 ओसी दान किए गए थे, अन्य 100 ओसी रोटरी क्लब वडापलानी, चेन्नई टेम्पल टावर्स, चेन्नई सेंट्रल और मेरे अपने रोटरी क्लब मद्रास वेस्ट द्वारा जुटाई गई धनराशि से खरीदे गए थे।''

इस समूह ने बहुत सारे लोगों की जान बचाने के लिए शानदार सेवाएं दी हैं। उनकी मदद के बिना इस महामारी को इतनी अच्छी तरह से नहीं संभाल सकते थे।

एस मुत्तुपलनियप्पन
मंडल गर्वनर

बिस्तर के लिए लम्बी प्रतीक्षा

एक एनेस्थेटिस्ट और प्रशिक्षित स्वास्थ्य प्रबंधन विशेषज्ञ वसुधा राजशेखर ने कहा कि पिछले कुछ हफ्तों से दबाव कम हो गया था (मई के अंत में)। ''लेकिन जब तक यह रहा तब तक बदहवास की स्थिति रही।'' उन्होंने स्वीकार किया कि वह देर से सोती थी इसलिए उठती भी देर से थी, एक दिन सुबह 5.45 बजे ''रोटरी क्लब मद्रास सेंट्रल से रोटेरियन सूर्यनारायण राव का फोन आया। उन्होंने कहा, 'मेरा एक स्टाफ सदस्य एम्बुलेंस में एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल भटक रहा है, उसे बेड नहीं मिल रहा है, और उसकी ऑक्सीजन संतृप्ति 82 रह गई है। वह करीब 40 साल की है और मरने के कगार पर है'।''

रोगी एक ''महंगे अस्पताल का खर्च नहीं उठा सकता था और केवल एक ही स्थान था जिसके बारे में मैं तुरंत सोच सकती थी, वह था तांबरम में थोरैसिक मेडिसिन सरकारी अस्पताल।'' पिछले साल उनके क्लब (रोटरी क्लब चेन्नई टेम्पल टावर्स) ने अस्पताल के लिए ₹1.25 करोड़ का आईसीयू प्रोजेक्ट किया था। उसने अस्पताल के अधीक्षक डॉ श्रीधर को फोन किया जिन्होंने कहा कि यह हो जाएगा। अतिरिक्त चिकित्सा अधीक्षक को भी इसमें शामिल किया गया था। ''लेकिन तब से सुबह 9.45 बजे तक, हर 10 मिनट में मुझे फोन आता रहा कि 'हम कोविड वार्ड में गए, वहां कोई नहीं है, कोई भी हमारी देखभाल नहीं कर रहा है' आदि। मैंने डॉ श्रीधर को फिर से फोन किया और कहा कि कृपया कुछ करो, अब मैं यह तनाव और नहीं सह सकता।''

उन्होंने बताया कि डॉ श्रीधर को सीधे वार्ड में फोन करना पड़ा और ''आमतौर से धैर्यशील डॉ श्रीधर की आवाज़ मैं सुन सकती थी, जिन्होंने उत्तेजित स्वर में सिस्टर से कहा: 'उस मरीज को अभी भर्ती करो, एक तस्वीर खींचो और मुझे भेज दो, ताकि मैं डॉ वसुधा के साथ इसे साझा कर सकूं।' आखिरकार बिस्तर मिलने में उसे चार घंटे लग गए। एक हफ्ते के बाद उसे छुट्टी मिल गई और वह बिलकुल ठीक है।''

डॉ नंदकुमार कहते हैं ऐसे कई मामले हैं कि लंबे समय तक देर रात काम करने, संसाधनों की सूची बनाना और रोगी की स्थिति के आधार पर रेफ़रल देने, चाहे उसे ऑक्सीजन के साथ बिस्तर की आवश्यकता हो या वेंटिलेटर सहित आईसीयू बिस्तर की, इन सब के बावजूद कभी-कभी उनकी मदद मिलने में बहुत देर हो जाती थी। ''
ज्यादातर फोन रोटेरियनों से अपने परिवार या दोस्तों की मदद के लिए आए। मुझे लगता है कि 90

प्रतिशत मामलों में समय पर उपयुक्त बिस्तर दिलाने में हम सफल रहे।''

उनका कहना है कि समय पर प्रभावी मदद हम सिर्फ इसलिए कर पाए क्योंकि ''महामारी की शुरुआत से ही हमारे पास डॉक्टरों की एक टीम पहले से ही उपलब्ध थी। जनवरी 2020 में ही हमें मालूम था कि कुछ बुरा होने वाला है। शुक्र है कि मंडल नेतृत्व इस समूह के साथ भली भांति जुड़ा हुआ है और डीजी चंद्रमोहन ने मुझे रोटरी में सभी डॉक्टरों की एक सूची तैयार कर उन्हें इस समूह में जोड़ने के लिए कहा।''

समूह में इतने सारे वरिष्ठ डॉक्टरों के होने के कारण, ''रोटरी क्लब मद्रास से लेकर सबसे युवा क्लब तक, कनिष्ठ और युवा डॉक्टरों ने जुड़ने में अनिच्छा जताई कि 'हम इस समूह में फिट नहीं होंगे,' लेकिन मैंने कहा कि हमें कोविड के समय में ये करना ही होगा, कई डॉक्टर आगे आए। कुछ नहीं भी आये लेकिन जब भी हमने उनसे मदद मांगी वो भी मदद के लिए आगे आये थे।''

इस समूह ने डॉक्टरों, अस्पतालों और उपकरण के निर्माताओं, आपूर्तिकर्ताओं के साथ बहुत तीव्र गति से संपर्क करने की आवश्यकता महसूस की, ''सरकार से लेकर निजी क्षेत्र तक और स्वास्थ्य सेवा उद्योग के सभी क्षेत्रों में। विशेष रूप से हमने सरकार के साथ मिलकर काम किया क्योंकि हम जानते हैं कि यदि बड़े पैमाने पर कुछ करना हो तो वो केवल सरकार द्वारा ही नियंत्रित किया जा सकता है।''

अस्पताल में भर्ती होने की प्रतीक्षा में एम्बुलेंस में कोविड रोगियों की कतार।

सौभाग्य से समूह में काफ़ी रोटेरियन सरकार से जुड़े हुए हैं और किसी परियोजना या कार्यक्रम करने के लिए, एक ही इशारे में पलक झपकते ही हम सरकार में सबसे वरिष्ठ लोगों तक पहुंच सकते हैं, वे कहते हैं।

डॉ वसुधा कहती हैं कि कोविड मामलों में सहायता करने के अलावा, अपनी स्थापना के समय से ही यह समूह रोटेरियनों को चिकित्सा विशेषज्ञों के पास भेजता रहा है। ''जब हमें कॉल आती है तो हम कार्डियो, न्यूरो, ऑर्थो, गायनेऔर अन्य मामलों के मरीजों को आगे भेजते हैं। ये न केवल रोटेरियन को प्रभावी उपचार यह सुनिश्चित करता है बल्कि रोटेरियन डॉक्टरों को भी इस नेटवर्किंग के माध्यम से पेशेवर फायदा होता है।''

प्रारंभिक टीकाकरण

रोटरी क्लब मद्रास नॉर्थ के पूर्व अध्यक्ष पी सतीश एक फार्मा कंपनी के मालिक हैं, वर्तमान वर्ष में रो ई मंडल 3232 कोविड टास्क फोर्स के अध्यक्ष हैं। ''और इस मंडल में जल्दी टीकाकरण कराने वाला हर व्यक्ति उनका ऋणी है; इससे पहले कि कोई टीकाकरण को गंभीरता से लेता, वह उन्हें केएमसी ले गए और मंडल के सभी पीडीजी का टीकाकरण करवाया। हमने इस के लिए उन्हें ज़ोर दिया था जब उन्होंने कहा कि आप इतना ज़ोर क्यों दे रहे हैं, हमने कहा कि नेताओं के रूप में आपको एक उदाहरण स्थापित करना चाहिए। इसलिए, रो इ अध्यक्ष वेंकी और विनीता के साथ सभी लोगों ने टीका लगवाया और साथ ही मेरी पत्नी डॉ सुमेधा ने भी जो विनीता की तरह ही रो क्लब चेन्नई टेम्पल टावर्स की सदस्य हैं,'' डॉ नंदगोपाल कहते हैं। उन्होंने कहा, ''उन्होंने गंभीर और अति आवश्यक दवाओं की खरीद में भी मदद की और एक सप्ताह के भीतर बहुप्रतीक्षित रेमडेसिविर की आपूर्ति सुनिश्चित की।''

डॉ श्रीराम ने बताया ''मैंने कहा था ना, यह 'मेडिकल गूगल' का ग्रुप है ... आईसीयू/ऑक्सीजन बिस्तर से लेकर दवाओं तक जो कुछ भी चाहिए, आपको उसका समाधान फ़टाफ़ट मिल जाएगा।

सतीश बताते हैं कि दूसरी लहर के चरम पर, जब अस्पतालों के सामने लंबी कतारों में एम्बुलेंस इंतजार कर रही थीं ... और अस्पताल के बाहर खड़ी एम्बुलेंस में मरीज ऑक्सीजन की आपूर्ति से चिपके पूरी रात गुजार रहे थे, हमने ऑक्सीजन युक्त अतिरिक्त बेड बनाने के लिए तुरत कार्रवाईशुरू कर दी। उन्होंने क्रेडाई (कॉन्फेडरेशन ऑफ रियल एस्टेट डेवलपर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया), तमिलनाडु के अध्यक्ष और उनके क्लब के पूर्व अध्यक्ष सुरेश कृष्णा के साथ बातचीत की और ''उन्होंने बिस्तर प्रायोजित करने का आश्वासन दिया। हमने तुरंत ही तमिलनाडु के स्वास्थ्य सचिव जे राधाकृष्णन को फोन किया और कहा कि हम अतिरिक्त बेड की मदद करना चाहते हैं।''

देखते ही देखते राज्य सरकार के प्रशासन ने काम करना शुरू कर दिया, ''स्वास्थ्य, पी डब्ल्यू डी, जैसे सभी आवश्यक विभागों के साथ के एम सी की सम्पूर्ण अस्पताल प्रबंधन टीम हरकत में आ गई और दिन रात एक कर, सिर्फ एक सप्ताह के भीतर 50 आईसीयू बेड और 200 बेड ऑक्सीजन आपूर्ति के साथ हमने 250 बेड स्थापित कर दिए।''

आगे उनका लक्ष्य था ओमांदुरार, अन्नानगर पेरिफेरल और सैदापेट, सभी सरकारी अस्पतालों में और 250 बेड लगाना।10 दिनों के भीतर ही कुल 500 बेड की व्यवस्था हो गई। इतनी तेजी से काम इसलिए हुआ क्योकि इसमें CREDAI शामिल था और वे इस प्रक्रिया से परिचित थे, सतीश मुस्कुराते हैं। इसके बाद, मदुरै, सेलम और कोयंबटूर में भी अतिरिक्त बिस्तर जोड़े गए।

वह आगे कहते हैं: ''यहां मैं एक बात साफ़ करना चाहूंगा कि बिस्तर, अतिरिक्त ऑक्सीजन आपूर्ति या अन्य उपकरण के मामले में हम जो कुछ भी करना चाहते थे, उसके लिए धन की कमी कभी भी नहीं रही क्योंकि जितना पैसा आया वह अविश्वसनीय था। विदेशों में रह रहे भारतीय, भारत से हताशा की तस्वीरें देखकर देश में सिर्फ पैसा बरसा रहे थे। और बहुत सारे क्लबों ने व्यक्तिगत रूप से कोविड राहत कार्य में मदद करने के लिए वैश्विक अनुदान दिया है।''

सीएसआर से भी पैसा आया था; ''डॉ वसुधा के क्लब ने कॉग्निजेंट फाउंडेशन के साथ साझेदारी की बदौलत वीएचएस के लिए 40 आईसीयू बेड की (₹1.25 करोड़) परियोजना की थी। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी ने की कोविड मरीजों के लिए ₹300 करोड़ की एक परियोजना

वी मुत्तुकुमारन

यहां पर हमारे सामने RIPE शेखर मेहता का बड़ा सोचने एवं ग्रामीण और शहरी भारत में हजारों कोविड रोगियों की मदद करने के लिए त्वरित निर्णय लेने का एक और उदाहरण है।

रोटरी इंडिया ह्यूमैनिटी फाउंडेशन (RIHF) और यूएस, यूके एवं अन्य देशों के संरक्षकों वाले एक गैर सरकारी संगठन यूनाइटेड वे, बेंगलुरु, के बीच एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया गया, जिसके तहत 100,000 ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर की डिलीवरी, चिकित्सीय ऑक्सीजन बनाने के लिए 100 PSA संयंत्रों की स्थापना; और ₹300 करोड़ की परियोजना लागत से 5,00 बाई-पैप्स (गैर-आक्रामक वेंटिलेटर) और 50,000 ऑक्सीमीटर की आपूर्ति की जानी है।

आभासी हस्ताक्षरण समारोह में बोलते हुए, मेहता ने PDG जी ओलिवनन, रो ई मंडल 3232, के साथ अपनी फोन पर हुई चर्चा को याद किया, और देश में अब तक की सबसे बड़ी कोविड परियोजनाओं में से एक को आगे बढ़ाने में उन्होंने भागीदारों के अंदर मौजूद तात्कालिकता की भावना का उल्लेख किया। महामारी की पहली लहर में, रोटरी क्लबों ने सरकारों द्वारा किए जा रहे राहत कार्यों में आए अंतराल को भरने के लिए जमीनी स्तर पर कोविड केंद्र स्थापित किए और झझए किट, सैनिटाइज़र और खाद्यान्न वितरित करने जैसी परियोजनाएं की, जिनकी कुल कीमत ₹150 करोड़ थी। एक बार फिर से रोटेरियन चुनौती का डटकर सामना कर रहे है जब दूसरी लहर ने कहर बरपाने में किसी प्रकार की कोई कसर नहीं छोड़ी, उन्होंने कहा। मंडल गवर्नरों ने अस्पतालों और ग्रामीण प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर एवं अन्य चिकित्सीय उपकरणों के वितरण में क्लबों का नेतृत्व किया है।

मेहता ने समझाया कि कोविड टास्क फोर्स की राष्ट्रीय समिति ने तेजी से कार्यवाही की और मेडिकल ऑक्सीजन एवं अन्य आपूर्तियों की जरूरत वाले स्थानों का पता लगाने के लिए आर्टफिशियल इन्टेलिजन्स एवं अल्गोरिद्म पर काम किया, जिसके बाद तुरंत ही इन चीजों का वितरित करके रोगियों तक पहुंचने तक उनके उपयोग पर नज़र रखी गई एवं निरीक्षण किया गया। रोटरी एक साल तक इस परियोजना के अंतर्गत वितरित किए जाने वाले ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर का वितरण, ट्रैक और निरीक्षण करेगा। पहले चरण में, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल के जिला अस्पतालों एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को ये मशीनें मिलेंगी, इसके बाद दूसरे चरण में आठ और राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों - राजस्थान, कर्नाटक, दिल्ली, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, छत्तीसगढ़, गोवा और हरियाणा - को इस साझेदारी से लाभ मिलेगा।

एक रोमांचक यात्रा

पिछले दो हफ्तों के अपने अनुभव को साझा करते हुए, जब पहले चरण को लागू किया जा रहा था, RIDE ए एस वेंकटेश ने कहा कि रोटेरियनों की उनकी टीम पूरे तमिलनाडु में अस्पताल एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के कर्मचारियों को मशीनों के सही तरह से संचालन में

मयिलादुथराई विधायक एस राजकुमार (बीच में, बाएं) ने डीजी आर बालाजी बाबू (दाएं से तीसरे), रोटरी क्लब मयिलादुथराई के अध्यक्ष के दुरई (दाएं) और परियोजना समन्वयक वी रमन (बाएं से चौथे) की उपस्थिति में सरकारी अस्पताल के सीएमओ डॉ आर राजशेखर को ऑक्सीजन सांद्रता सौंपे।

प्रशिक्षित करने के लिए उत्साहित थी। उन्होंने कहा, पिछले 15 दिनों में, हमने तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में PHC, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों और जिला अस्पतालों में 2,300 से अधिक मशीनें वितरित की हैं, और आगे कहा कि अगले एक सप्ताह में आठ और राज्यों को कवर करते हुए 7,500 इकाइयों का वितरण किया जाएगा। कोविड की स्थिति परिवर्तित होती रहती है इसलिए हमें अस्पतालों की जरूरतों एवं कोविड के मामलों में वृद्धि के आधार पर वास्तविक स्थिति का आँकलन करना होता है, उन्होंने कहा।

रोटरी इंडिया कोविड टास्क फोर्स के अध्यक्ष PRID अशोक महाजन ने कहा कि 150,000 से अधिक रोटेरियन कोविड केंद्रों की स्थापना करने, टीकाकरण शिविरों का आयोजन करने और देश भर के अस्पतालों में चिकित्सीय उपकरणों को वितरित करने में जुटे हुए है। अब तक रोटरी बैनर के तले 300,000 से अधिक लोगों को टीका लगाया जा चुका है। हम आगामी महीनों में पक्षसमर्थन की भूमिका निभाते रहेंगे, टीकाकरण अभियान का समर्थन करेंगे और अस्पताल में उपकरण पहुंचाएंगे, उन्होंने कहा।

PRIP राजेंद्र साबू और PRIP कल्याण बेनर्जी ने इस विशाल कोविड परियोजना को गति देने के लिए मेहता की प्रशंसा की जिससे भारत की स्वास्थ्य प्रणाली में सुधार के अलावा तीसरी लहर के लिए भी तैयार होने में मदद मिलेगी। राज्यसभा सांसद PDG विवेक तन्खा ने कहा, मेहता के नेतृत्व में यह एक शानदार पहल थी जिसमें दूसरी लहर के साथ आई तकलीफों को कम करने एवं तीसरी लहर के लिए तैयार होने हेतु गैर सरकारी संगठनों के साथ एक गठबंधन किया गया है। मैं इस पहल के लिए रोटरी की सराहना करने हेतु संसद में 'धन्यवाद' प्रस्ताव पारित करूंगा।

नगर निगम प्रशासन, शहरी और जल आपूर्ति मंत्री के एन नेहरू की उपस्थिति में सरकारी अस्पताल को रोटरी क्लब त्रिची मेट्रो ने सौ सांद्रक सौंपे।

PDG ओलिवनन ने कहा कि रोटरी में उनके 27 वर्षों के अनुभव में, यह मेरा सबसे बड़ा क्षण है क्योंकि मैंने पहली बार RIPE शेखर मेहता को 15 मई को सम्पन्न हुई ज़ूम कॉल, जिसमें मैंने उनके साथ इस परियोजना को अपने हाथों में लिया, से लेकर अवधारणा से कार्यान्वियन चरण तक करीब से काम करते देखा।

RID कमल संघवी, RID डॉ भरत पांड्या, न्यासी गुलाम वाहनवटी, RIDE डॉ महेश कोटबागी और रोटरी क्लब मद्रास नॉर्थ के अध्यक्ष वेंकटरमन विश्वेश्वरन, जिन्होंने मेहता और ओलिवनन के साथ मिलकर इस पहल की शुरुआत की, ने हस्ताक्षरण समारोह में बात की। *रोटरी न्यूज* से बात करते हुए, RIHF के मुख्य परिचालन एवं योजना अधिकारी बिस्वजीत घोष ने कहा, अब तक हमनें 18,000 ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर की आपूर्ति की है और आने वाले दिनों में हम 32,000 अतिरिक्त इकाइयों के वितरण की उम्मीद कर रहे है। PSA संयंत्रों की स्थापना के लिए राज्यों में सम्यक तत्परता दिखाई जा रही है। इसके अलावा, अगर हमारे आँकलन के आधार पर जरूरत पड़ी तो हम महत्वपूर्ण उपकरणों की अपनी वितरण सूची का विस्तार भी कर सकते है, जिससे परियोजना की लागत बढ़ सकती है।

जहां यूनाइटेड वे ने रोटरी के साथ समझौते किया, वहीं स्वस्थ, सिकोया कैपिटल, सत्व, कैपलेरी टेक्नॉलजी, ACT (एक्शन कोविड-19 टीम), 24/7.ai और ज़ोमैटो फीडिंग इंडिया जैसे अन्य कार्यान्वियन भागीदार भी है। आभासी समारोह में DG, PDG और रोटरी नेतृत्वकर्ताओं सहित लगभग 420 रोटेरियन मौजूद थे। ■

RID 3232 समन्वयक एन एस सरवनन (बाएं) ने डॉ गुप्ता, निदेशक, स्वैच्छिक स्वास्थ्य सेवाएं, चेन्नई को ऑक्सीजन सांद्रता सौंपे।

जालना के रोटेरियन कोविड के लिए अनुकरणीय काम कर रहे है

रशीदा भगत

21अप्रैल को,महाराष्ट्र में नासिक के एक अस्पताल में 24कोविड रोगियों की मौत हो गई,जब ऑक्सीजन टैंकर से रिसाव के कारण उनकी ऑक्सीजन की आपूर्ति बाधित हो गई। इस घटना से पहले भी,जालना के कई रोटरी क्लबों के रोटेरियनों का एक समूह,जो कोविड से बचाव एवं राहत कार्य में लगा हुआ था,अस्पतालों में पाइप से ऑक्सीजन की आपूर्ति को बनाए रखने एवं उनकी मरम्मत करने के तरीकों की खोज कर रहा था।

इनमें रोटरी क्लब जालना, जालना सेंट्रल, जालना रेनबो, जालना मिडटाउन और अंबाद के सदस्य शामिल थे। इस त्रासदी से पहले भी,जब कोविड की दूसरी लहर का आना शुरू हुआ था,जिला कलेक्टरों और अस्पताल के प्रतिनिधियों के साथ मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई महाराष्ट्र सरकार की एक ऑनलाइन बैठक में,जालना के एक रोटेरियन एवं रोटरी कोविड टास्क फोर्स (रो ई मंडल 3132) के एक क्लब निदेशक डॉ हितेश रायथाथा, जिनका शहर में एक अस्पताल भी है, ने बहुमूल्य जानकरि प्रदान की। उन्होंने सुझाव दिया कि सभी अस्पतालों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनकी ऑक्सीजन पाइपलाइन अच्छी तरह से बिना किसी रिसाव के काम कर रही है। ''मुख्यमंत्री को उनका सुझाव पसंद आया और जिला आयुक्त ने सुझाव दिया कि रोटेरियन इसे एक प्रायोगिक परियोजना के रूप में कर सकते है,'' रोटरी कोविड टास्क फोर्स, रो ई मंडल 3132, के सहायक गवर्नर एवं क्षेत्रीय समन्वयक गोविन्दराम मंत्री कहते है।

जालना में टास्क फोर्स फौरन हरकत में आ गई और उन्होंने सरकारि जिला अस्पताल,सरकारी महिला अस्पताल, जालना मिशन अस्पताल और चार अन्य निजी अस्पतालों में ऑक्सीजन पाइपलाइनों के उचित रखरखाव को सुनिश्चित करने के लिए एक

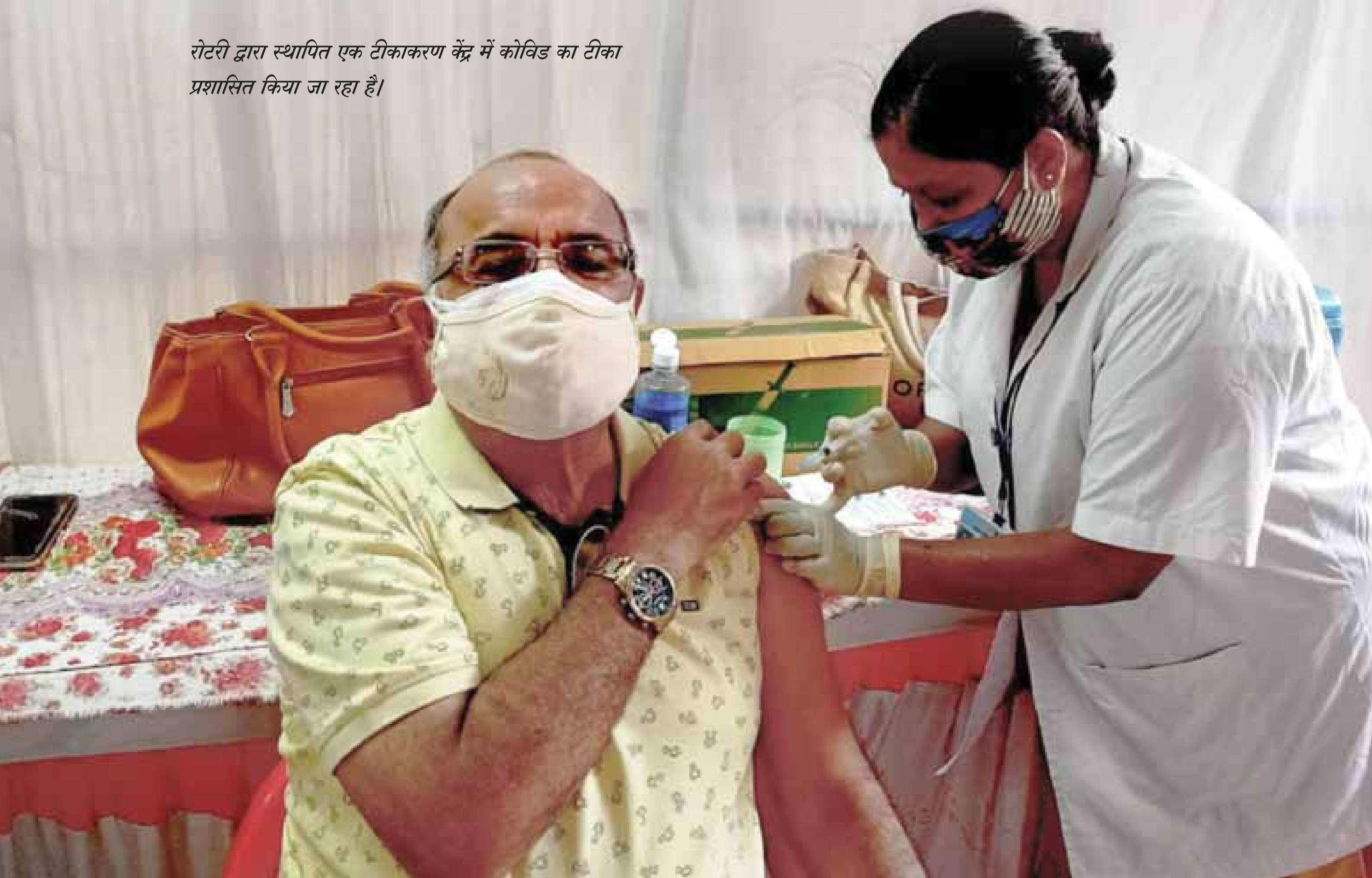

रोटरी द्वारा स्थापित एक टीकाकरण केंद्र में कोविड का टीका प्रशासित किया जा रहा है।

महत्वपूर्ण एवं समयोचित कवायद की। ''हम जानते थे कि पहले से ही इतना दबाव झेल रहे डॉक्टरों एवं अस्पताल प्रशासकों के पास ऐसा करने का समय नहीं है, इसलिए हमने यह जिम्मेदारी अपने हाथों में ली।'' रिसाव का पता लगाने के लिए अल्ट्रासोनिक मशीनों का इस्तेमाल किया गया।

वह समझाते है कि पाइप से होने वाली ऑक्सीजन आपूर्ति के रिसाव को रोकने की प्रति अस्पताल की लागत केवल ₹3,000-4,000 है। ''आम तौर पर एक रिसने वाले ऑक्सीजन पाइप की मरम्मत के लिए आपको आपूर्ति को निलंबित करना पड़ता है और पाइपलाइन को काटना पड़ता है। लेकिन संकट की इस घड़ी में, जब लोग ऑक्सीजन की कमी के कारण मर रहे है,ऐसा करना संभव नहीं है। इसलिए हम ऐसी मशीनों का उपयोग करते है जो ऑक्सीजन की आपूर्ति को रोके या बाधित किए बिना रिसाव को रोक पाती है।''

वह कहते है कि इस सरल पहल के माध्यम से इस जीवन रक्षक पदार्थ को कम से कम 20 से 30 प्रतिशत तक व्यर्थ होने से बचाया जा सकता है।

रोटेरियनों की यह टीम 10 सेल्फी पॉइंट्स के साथ जालना में पांच स्थानों पर कोविड टीकाकरण के लिए हेल्पडेस्क स्थापित करने हेतु एक साथ आई है! 17 टीकाकरण केंद्रों पर कर्मठता से काम करते हुए, रोटेरियनों ने टीका लगवा चुके 12,800 से अधिक लोगों को स्टिकर वितरित किए। दूसरी लहर के कारण आई ऑक्सीजन की तीव्र कमी पर तेजी से प्रतिक्रिया देते हुए, रोटेरियनों ने 18 ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर जरूरतमंद मरीजों को मुफ्त में दिए है।

ऑक्सीजन पाइपलाइन में रिसाव का पता लगाने और उसे ठीक करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली एक अल्ट्रासोनिक मशीन।

आम तौर पर एक रिसने वाले ऑक्सीजन पाइप की मरम्मत के लिए आपको आपूर्ति को निलंबित करना पड़ता है और पाइपलाइन को काटना पड़ता है। लेकिन संकट की इस घड़ी में, जब लोग ऑक्सीजन की कमी के कारण मर रहे है,ऐसा करना संभव नहीं है।

एक बार रोगी के ठीक हो जाने पर, कन्सन्ट्रेटर किसी और को दे दिया जाता है,और अब तक कुल 121 रोगियों को इससे लाभ हुआ है। इनमें से पांच मशीनों को मंडल 3132 निधि की मदद से खरीदा गया है।

उन्होंने टीकाकरण केंद्रों को साफ-सुथरा रखने की जिम्मेदारी भी ली और टीकाकरण के लिए आने वाले लोगों के लिए मास्क,सैनिटाइजर बांटने एवं सोशल डिस्टेंसिंग सुनिश्चित करने के अलावा कुर्सियों की व्यवस्था की।

टीका लगवाने की इस अत्यंत महत्वपूर्ण आवश्यकता को महसूस करते हुए,विशेष रूप से साक्षरता और जागरूकता की कमी वाले क्षेत्रों में,रोटेरियनों ने झुग्गी क्षेत्रों में किराए के रिक्शा के माध्यम से सार्वजनिक सूचना का प्रसार किया एवं सड़क किनारे बैठकों का आयोजन किया। ''ऐसा टीकाकरण के प्रति व्याप्त किसी भी प्रकार के भय को दूर करने के लिए किया गया था,'' मंत्री ने कहा।

कोविड टीके के लाभों के बारे में संदेश देने वाले मास्क के आकार के होर्डिंग भी सुविधाजनक स्थानों पर लगाए गए थे।

जागरूकता फैलाने के अलावा,ठोस कार्रवाई भी की गई - रूपम हॉल और कारवा अस्पताल में विशाल टीकाकरण केंद्र स्थापित किए गए,जिनमें अप्रैल अंत तक 2,700 से अधिक लोगों को मुफ्त टीके लगाए गए। उन्होंने कहा, ''टीके की दोनों खुराक लगवा चुके रोटेरियनों कोकोविड इम्यून पासपोर्ट जरी किए जाएंगे।''

रोटरी कलब जालना के एक पूर्व सदस्य,राजेंद्र बरवाले,जो अब रोटरी क्लब बॉम्बे मिडटाउन के सदस्य है और एक उद्योगपति है,ने जालना में ₹2 करोड़ की लागत से ऑक्सीजन प्लांट लगाया था। ''इसका उद्घाटन महाराष्ट्र के स्वास्थ्य मंत्री राजेश टोपे ने किया जो जालना से है। यह एक कारण है कि हम सभी उन्हें अच्छी तरह से जानते है और हमें सामुदायिक सेवा परियोजनाओं को करने के लिए सरकार से अच्छा सहयोग एवं त्वरित प्रतिक्रिया प्राप्त होती है,'' रायथाथा कहते है।

मंत्री आगे कहते है कि ये सभी पहल सामूहिक क्लब नेतृत्व एवं डॉ हितेश रायथाथा,डॉ राजीव जेठालिया, डॉ रवींद्र बेदारकर, डॉ प्रतीक लाहोटी और डॉ रोहित भाला जैसे रोटेरियनों द्वारा किए गए अथक कार्यों के माध्यम से सम्पन्न हुई। जहाँ तक इस काम के लिए आवश्यक धन की बात है,वह मुस्कुराते है: ''ओह, जालना में बहुत से अच्छे लोग है और योग्य सेवा परियोजनाओं के लिए दानदाताओं की कोई कमी नहीं है।'' ■

विशाल परियोजनाओं के लिए रोटरी-टाटा की साझेदारी

वी मुत्तुकुमारन

यह दो विरासती संगठनों - 116 से अधिक वर्षों से सामुदायिक सेवा के क्षेत्र में कार्यरत रोटरी और 130 वर्षीय कॉर्पोरेट समूह टाटा - के बीच एक आदर्श मेल है क्योंकि वे अगले पांच वर्षों में समस्त भारत में रो ई के सात ध्यानाकर्षण क्षेत्रों से जुड़ी विशाल परियोजनाओं के निष्पादन हेतु एक साथ आए है, रो ई के नवनिर्वाचित अध्यक्ष शेखर मेहता ने आभासी मंच पर रोटरी इंडिया ह्यूमैनिटी फाउंडेशन (RIHF) और टाटा ट्रस्ट्स के बीच हुए एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरण समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा।

यह परियोजनाओं की व्यापक श्रेणी में कार्य करने के लिए रोटरी और टाटा के बीच 50:50 की साझेदारी होगी। जहां रोटरी जल, स्वच्छता और सफाई में भारत सरकार की 10 प्रतिशत परियोजनाओं को हासिल करने का लक्ष्य बना रही है, ''हम टाटा ट्रस्ट के साथ एक बढ़िया तालमेल बैठा सकते है क्योंकि वे भी रोधक बांधों के निर्माण, WASH सुविधाएं प्रदान करने, जल निकायों के कायाकल्प, RWH इकाइयों की स्थापना, ग्रामीण घरों को शौचालय एवं नल का पानी उपलब्ध कराने, सामुदायिक शौचालयों का निर्माण करने और झएढ बोतल क्रशिंग इकाइयां स्थापित करने में संलिप्त है।'' कुछ मोर्चों पर, टाटा की रोटरी की तुलना में बड़ी महत्वाकांक्षाएं है जैसे नल के पानी के कनेक्शन के मामले में। जहाँ अगले पांच वर्षों में रोटरी का लक्ष्य 1,000 गांवों को नल का पानी उपलब्ध कराना है वहीं टाटा 1,500 गांवों को कवर करने की योजना बना रहा है, उन्होंने कहा।

रोटरी भी पौधों के वितरण में शामिल है (2020-21 में वितरित पांच करोड़ पौधे), और अब तक 25,000 हृदय सर्जरियाँ कर चुकी है। ''अगले पांच वर्षों में हमारा लक्ष्य 5 मिलियन स्वास्थ्य शिविर आयोजित करने, 50 नेत्र बैंक और 3,000 डायलिसिस मशीनें स्थापित करने का है। हम स्कूल छोड़ चुके

1.25 लाख विद्यार्थियों को वापस स्कूल भेजने की कोशिश कर रहे है, देश भर में 12,000 हैप्पी स्कूल और 24,000 पुस्तकालय स्थापित कर रहे है।'' रोटरी क्लबों ने 14,000 आश्रय किटें तैयार की है जिन्हें बचाव कार्यों के लिए आपदा स्थलों पर भेजा जाएगा। ''टाटा ट्रस्ट के साथ हाथ मिलाने से भारत के 1.75 लाख रोटेरियन अपने मंडल के गवर्नरों के नेतृत्व में विशाल परियोजनाओं की योजना बनाने और उन्हें निष्पादित करने में सक्षम होंगे। RIHF क्लबों को परियोजनाओं की

टाटा ट्रस्ट के साथ हाथ मिलाने से भारत के 1.75 लाख रोटेरियन अपने मंडल के गवर्नरों के नेतृत्व में विशाल परियोजनाओं की योजना बनाने और उन्हें निष्पादित करने में सक्षम होंगे।

शेखर मेहता
रो ई अध्यक्ष

पहचान करने और संयुक्त रूप से उन्हें कार्यान्वित करने में टाटा ट्रस्ट के साथ साझेदारी करने की सुविधा प्रदान करेगा,'' मेहता ने कहा।

रोटरी और टाटा दोनों एक जैसे दृष्टिकोण, मूल्यों को साझा करते है और व्यापक स्तर पर कल्याण हेतु काम करते है टाटा ट्रस्ट्स के सीईओ श्रीनाथ नरसिम्हन ने कहा। ''रोटरी की तरह हम भी स्वास्थ्य, पोषण, जल और स्वच्छता, शिक्षा, पर्यावरण और ग्रामीण आजीविका की बेहतरी के क्षेत्रों में काम कर रहे है। एक ही तरह की विचारधारा और गतिविधियों के होने की वजह से, हम पूरे भारत में अपनी परियोजनाओं के पैमाने और प्रभाव को बढ़ाने के लिए एक साथ आ रहे है।''

प्रथम संयुक्त परियोजना

एक प्रस्तुतिकरण में, रोटरी क्लब लेक डिस्ट्रिक्ट मोइनाबाद, रो ई मंडल 3150, के AG उदय पिलानी ने कहा कि तेलंगाना का भूपलपल्ली ज़िला पहला ज़िला होगा जहां अगले तीन वर्षों में रोटरी-टाटा परियोजनाएं की जाएंगी। ''हमने साक्षरता, पोषण, WASH और आजीविका परियोजनाओं के लिए 100 गांवों को चुना है। अगले तीन वर्षों में किसानों की औसत वार्षिक आय को 40,000 से बढ़ाकर ₹1 लाख करने का लक्ष्य है,'' उन्होंने कहा। इस बड़े पैमाने के बदलाव का बजट ₹100 करोड़ है। ''जहाँ तेलंगाना सरकार हमें सब्सिडी राशि दे रही है, वहीं शेष राशि दोनों भागीदार मिलकर साझा करेंगे।''

टाटा ट्रस्ट्स के प्रबंधक (साझेदारी) स्वप्निल चौहान ने कहा, छोटे, सीमांत किसानों की आय बढ़ाने, NCD और कैंसर जांच कार्यक्रमों में वृद्धि करने और कारीगर समूहों की स्थापना जैसे कई कार्यों पर चर्चा चल रही है। RIHF के अध्यक्ष PRID अशोक महाजन और टाटा ट्रस्ट समूह के CFO महराब ईरानी ने एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। रो ई निदेशक कमल संघवी, RIDE ए एस वेंकटेश और RIDE डॉ महेश कोटबागी एवं PRIP कल्याण बेनर्जी ने इस बहुमूल्य साझेदारी का स्वागत किया जिसका उद्देश्य भारत के ग्रामीण परिदृश्य को बदलना है। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी क्लब नासिक ने बचाई 35 शिशुओं की जान

टीम रोटरी न्यूज़

बबल सीपीएपी मशीन पर एक शिशु का इलाज किया जा रहा है।

नासिक के सिविल अस्पताल में बढ़ती शिशु मृत्यु दर ने अस्पताल के बाल रोग विभाग के प्रमुख डॉ पंकज गजरे की रातों की नींद उड़ा दी। 2020 की शुरुआत में कोविड वायरस द्वारा भयानक तबाही मचाने से पहले ही, अस्पताल में औसत शिशु मृत्यु दर बढ़कर लगभग 25 प्रतिशत हो गई थी। जल्द ही उन्हें पता चला कि अपने नवजात बच्चों के साथ माताऐं इस अस्पताल तक पहुंचने से कुछ दिन पहले का कीमती समय बर्बाद कर रही थी, यह अस्पताल इस जिले में स्वास्थ्य सेवा का एक प्रमुख प्रदाता है जिसमें बड़ी संख्या में आदिवासी बस्तियां मौजूद है जिनके आसपास के क्षेत्रों में बुनियादी चिकित्सीय सेवाओं की कमी है। ''अपने नवजात बच्चों के साथ माताएं इस अस्पताल तक पहुंचने के लिए विवश है क्योंकि दूर-दराज के पाड़ों (बस्तियों) में उनकी देखभाल करने के लिए अच्छी चिकित्सीय सुविधाओं वाला कोई अस्पताल या स्वास्थ्य केंद्र मौजूद नहीं है,'' रोटरी क्लब नासिक, रो ई मंडल 3030, के एक सदस्य विनायक देवधर ने कहा।

नासिक के सिविल अस्पताल में बाल रोग विभाग के प्रमुख डॉ पंकज गजरे का अभिनंदन करते हुए डीजी शब्बीर शाकिर (दाएं से दूसरे), रोटरी क्लब नासिक के अध्यक्ष मुग्धा लेले बाईं ओर पर हैं।

समय निकलता जा रहा है

डॉ गजरे और उनकी टीम द्वारा नवजात शिशुओं को बचाने के अथक प्रयासों के बावजूद, नवजात वार्ड में आधुनिक उपकरणों एवं सुविधाओं की कमी ने उनके साहसिक प्रयासों को 'हारने वाली लड़ाई' बना दिया था। मौजूदा चुनौतियों का सामना करने के अलावा, नवजात शिशुओं की देखभाल करने के बढ़ते मामले एक महीने में 350 भर्तियों तक पहुँच गए, यही वह आखिरी चीज़ थी जिसे वे करना चाहते थे, देवधर ने कहा।

ऐसे वक्त में, रोटरी क्लब नासिक की अध्यक्ष मुग्धा लेले का किसी अन्य कारण से अस्पताल का दौरा करना हुआ और उन्हें नवजात विभाग के एक कर्मचारी के साथ मिलने का मौका मिला जिसने उन्हें नवजात शिशुओं की बढ़ती मौतों के साथ उनके सामने आ रहे संकट से अवगत करवाया। क्लब की CSR टीम हरकत में आई और उसने बाल चिकित्सा वार्ड के लिए आवश्यक उपकरणों के वित्तपोषण के विचार के साथ कुछ कॉरपोरेटों को शामिल किया।'' लेकिन फिर कोविड ने प्रचंड रूप से प्रहार किया और कुछ महीनों के लिए क्लब को केवल महामारी-राहत कार्य करना पड़ा।

हालांकि, CSR टीम एक कॉर्पोरेट प्रायोजक खोजने के लिए दृढ़ संकल्पी थी और अंततः उसे ₹12 लाख के उपकरणों के वित्तपोषण के लिए ऑटोकॉम्प से अंतिम स्वीकृति प्राप्त हुई।

''अस्पताल से परामर्श करने के बाद, क्लब ने चार बबल CPAP (श्वसन संबंधी समस्याओं वाले नवजात शिशुओं के लिए एक गैर-आक्रामक वेंटिलेटर) और एक चलित एक्स-रे मशीन दान करने का फैसला किया, देवधर ने याद किया।'' परियोजना टीम ने निर्माताओं को पांच साल तक उपकरणों का वार्षिक रखरखाव करने हेतु राजी किया और इस साल जनवरी में ऑर्डर दिए गए।

अस्पताल के कर्मचारियों के सहयोग से, खरीद आदेश देने के कुछ ही हफ्तों के भीतर बाल चिकित्सा विभाग की सभी मशीनों को अधिकृत कर दिया गया। DG शब्बीर शाकिर और ऑटोकॉम्प के कार्यकारी निदेशक अनिल रामदास साली ने फरवरी में नई नवजात मशीनों का उद्घाटन किया। पिछले तीन महीनों में, मई तक, अस्पताल के नवीनीकृत बाल चिकित्सा विभाग ने 35 से अधिक माता-पिता को खुशी प्रदान की क्योंकि उनके शिशुओं को डॉ गजरे और उनकी टीम द्वारा समय पर उचित कदम उठाकर नए उपकरणों के साथ बचा लिया गया था। इस दौरान 200 से अधिक बार मोबाइल एक्स-रे यूनिट का इस्तेमाल किया गया।

देवधर ने आगे कहा, ''हमारी परियोजना ने न केवल सिविल अस्पताल में शिशु मृत्यु दर को कम किया है, बल्कि यह आदिवासी बस्तियों के वंचित लोगों के चेहरे पर मुस्कान लाने में भी यह सक्षम रही है।'' ■

जरूरतमंदों की सेवा के लिए मैंगलोर अस्पताल में डायलिसिस मशीनें

वेनलॉक जिला अस्पताल में डायलिसिस मशीन का उद्घाटन करते डीजी रंगनाथ भट।

वेनलॉक जिला अस्पताल में, रोटरी मंडल 3181 के अंतर्गत, रोटरी कल्ब मैंगलोर द्वारा ₹11.8 लाख की लागत वाली दो डायलिसिस मशीनें लगाई गईं। हैंड ओवर समारोह में बोलते हुए क्लब के अध्यक्ष आर्चीबाल्ड मेनेजेस ने बताया कि नई सुविधा से अस्पताल में डायलिसिस मशीनों की उपलब्धता बढ़ेगी, क्योंकि यह कम आर्थिक पृष्ठभूमि वाले उन लोगों की ज़रुरतों को पूरा करेगी, जो निजी अस्पतालों में डायलिसिस का खर्च वहन नहीं कर सकते।

ये मशीनें न केवल अस्पताल में स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे को बढ़ाएंगी, बल्कि डायलिसिस की जरूरत वाले लोगों के लिए सही समय पर मदद करेंगी। अस्पताल की मौजूदा डायलिसिस यूनिट अपनी क्षमता से अधिक व्यस्त होने के कारण मरीजों को अपनी बारी के लिए लंबा इंतजार करना पड़ता है। हमारा मानना है कि यह पहल न केवल सस्ती डायलिसिस की ज़रूरत को पूरा करेगी, बल्कि उचित समय पर सुविधा भी मुहैया कराएगी, क्योंकि उन्हें अब अपनी बारी के लिए लंबी कतारों में इंतजार नहीं करना पड़ेगा, उन्होंने कहा।

डीजी रंगनाथ भट ने क्लब के प्रयासों की सराहना की। क्लब ने मैसूर के 'ज़ीउस बायोटेक' के साथ साझेदारी की थी, जिन्होंने डायलिसिस मशीन के लिए अपने सीएसआर फंड से ₹4.5 लाख का योगदान दिया था। जबकि क्लब के सदस्य सतीश कामथ और उनकी पत्नी प्रभा कामथ ने ₹5.8 लाख दान किए और शेष राशि क्लब के चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा फंडिंग की गई। ■

Apply yourself

As members of the family of Rotary, we are people of purpose, people of influence, and people of action. Each year, committees that support Rotary and The Rotary Foundation focus on putting Rotary's strategic priorities into action, challenging us to increase our impact, expand our reach, enhance participant engagement, and increase our ability to adapt.

Would you like to contribute to Rotary's success?

The following committees are searching for qualified Rotarians and Rotaractors to serve as members and apply their leadership skills to advance our organisation. Although the number of openings is limited, they offer an opportunity for you to share your vocational expertise and help ensure diverse perspectives within each committee.

All committees correspond via email and on virtual platforms, and some involve at least one mandatory in-person meeting per year. Dual members of both Rotary and Rotaract are especially encouraged to apply.

To be considered for committee membership or to recommend someone for an appointment, visit *on.rotary.org/application2021*. Applicants must be registered on My Rotary at *rotary.org/myrotary* and should make sure their My Rotary profile includes current contact information. Applications are due by Aug 15 for appointments starting July 1, 2022.

Committee	Function	Prerequisites	Commitment
Communications	Advises the board on communication with key audiences	Professional background and experience in a communications-related field	Two positions for three-year terms; annual in-person meeting in Evanston; virtual meetings as needed
Finance	Advises the board on Rotary's finances, including budgets, investment policy, and sustainability measures	Professional background in a finance-related field; nonprofit experience preferred. Candidates should have experience in financial matters at the club and district levels	Two positions for three-year terms; one or two in-person meetings per year in Evanston; virtual meetings as needed
Leadership Development and Training	Advises the board on Rotary's leadership training programme for Rotarians, clubs and districts with a special emphasis on training for district governors	Must have significant training or education experience with a preference for leadership development	Two positions for three-year terms; annual in-person meeting in Evanston; virtual meetings as needed
Operations Review	Monitors the effectiveness, efficiency, and implementation of operations and all internal systems; advises the Executive Committee on compensation matters; and performs other oversight functions as requested by the board.	Experience in management, leadership development, or financial management, and a thorough knowledge of Rotary's operations. Appointments will be limited to past RI directors	One position for a six-year term; two in-person meetings per year in Evanston; virtual meetings as needed

Committee	Function	Prerequisites	Commitment
Rotaract	Advises the board on Rotaract; develops the Rotaract Preconvention programme	**Rotarians:** Experience working with Rotaract; direct experience as a mentor or Rotaract adviser or district chair. Rotaract alumni are strong candidates **Rotaractors:** Leadership at the club, district, or international level. Strong candidates who have served as a district Rotaract representative, organised projects, or attended a Rotaract Preconvention	**Rotarians:** One position for a three-year term; meets virtually or has annual in-person meeting in Evanston **Rotaractors:** Three positions for one-year terms; meets virtually or has annual in-person meeting in Evanston
Strategic Planning	Reviews Rotary's strategic plan and associated measures; advises leadership on other matters of long-term significance	10+ years of experience in strategy development, monitoring and implementation, and strong understanding of RI and Foundation programmes and services	One position with a four-year term; one or two in-person meetings per year in Evanston; virtual meetings as needed

आपके गवर्नर्स से मिलिए

वी मुत्तुकुमारन

प्रसन्न छात्रों और आनंदमय परिवारों का निर्माण

जसिंता धर्मा,

शिक्षाविद रोटरी क्लब नागरकोइल, RID 3212

1974 में वो 11 वीं कक्षा में पढ़ती थी जब रोटरी के साथ उनका परिचय हुआ। मैं सेंट जोसेफ हायर सेकेंडरी स्कूल, नागरकोइल में इंटरेक्ट क्लब की चार्टर अध्यक्ष और बाद में होली क्रॉस कॉलेज में ग्रेजुएशन और पोस्ट-ग्रेजुएशन के दौरान रोटरेक्टर रही थी।'' इंटरेक्टर्स के स्टाफ सलाहकार के रूप में जसिंता धर्मा को अपने करीब 35 वर्षों का कार्यकाल स्पष्ट रूप से याद हैं। वह 2008 में रोटरी क्लब नागरकोइल की सदस्य बनीं। यह एक स्वाभाविक और क्रमिक विकास था क्योंकि मैं इस क्लब को बहुत चाहती हूँ और इसकी जितनी तारीफ की जाये कम है जिसने मेरे पहले इंटरेक्ट और रोटरेक्ट क्लबों को प्रायोजित किया था।'' उनके पति ए आई धर्मा उसी क्लब के एक अनुभवी रोटेरियन हैं और उनके बेटे डी मोहिन्त, गत वर्ष गठित रोटरी क्लब नागरकोइल सुप्रीम के चार्टर अध्यक्ष हैं। पिता और पुत्र दोनों टीआरएफ के प्रमुख दानदाता हैं।

जसिंता मंडल की पहली महिला डीजी हैं, और तमिलनाडु में पीडीजी रेखा शेट्टी के बाद दूसरी।

लड़कियों की शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण उनकी प्राथमिकता रहेंगी। ''मैं अभिभावक-शिक्षक संघों की सहायता से सरकारी स्कूलों में कम से कम 250 लघु औषधालय खोलना चाहती हूं। प्रत्येक क्लब अपने आस-पास के स्कूलों में इस तरह के स्वास्थ्य जांच क्लीनिक शुरू कर सकता है,'' वह कहती हैं। ग्लोबल और डिस्ट्रिक्ट ग्रांट के माध्यम से ई-लर्निंग सेंटर और आर ओ इकाइयों के माध्यम से स्कूलों में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना उनकी अन्य प्राथमिकताएं होंगी।

उन्होंने मंडल की एक विशेष परियोजना की संरचना की है 'हेल्दी एंड हैप्पी स्टूडेंट्स', जो स्कूल और कॉलेज जाने वालों बच्चों की शारीरिक, बौद्धिक, भावनात्मक उन्नति के साथ-साथ उनके आध्यात्मिक विकास के लिए, लगभग 1,000 कार्यक्रम और कार्यशालाओं का आयोजन करेंगे।

उनका एक प्रिय प्रोजेक्ट होगा 'फैमिली फर्स्ट', जो इस अवधारणा पर आधारित है कि पढ़ाई और स्कूल की गतिविधियों में बच्चे तभी सफल होंगे जब उनका 'परिवार खुशहाल और आनंदमय' होगा। ''हर महीने हम माता-पिता के लिए सेमिनार, कार्यशाला आयोजित करेंगे और क्लबों को अपने क्षेत्रों में इसी तरह के कार्यक्रम आयोजित करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।'' जसिन्ता अपने कॉलेज के दिनों से ही रायला (RYLA) की प्रशंसक रही हैं और इस युवा कॉन्क्लेव का आयोजन वे हर महीने करने की योजना बना रही हैं। ''मैं प्रत्येक क्लब को नियमित अंतराल पर क्लब-स्तरीय RYLA आयोजित करने के लिए प्रोत्साहित करूंगी।''

उनकी अन्य प्राथमिकताएं हैं 100 से अधिक रोटरेक्ट क्लब चार्टर कर इसकी संख्या 175 तक पहुंचाना और रोटरेक्टर्स की ताकत को दोगुना कर उनकी संख्या 9,600 से अधिक करना। अपने रोटरी वर्ष के अंत तक 15 नए रोटरी क्लब और 1,000 रोटेरियन जोड़ना उनका लक्ष्य है, जिनमें आधी महिलाएं होंगी, वे क्लबों की 150 और सदस्यों की संख्या 6,000 तक पहुंचाने की उम्मीद करती हैं। टीआरएफ के लिए उन्होंने 800,000 डॉलर का लक्ष्य रखा है।

दिल्ली के लिए 50 एम्बुलेंस

अनूप मित्तल

इंडस्ट्रियल ऑटोमेशन, रोटरी क्लब दिल्ली चाणक्यपुरी, RID 3011

अपने कार्यकाल में वह 50 क्लब सलाहकारों की नियुक्ति करेंगे और उन्हें मंडल में वर्तमान 112 क्लबों की संख्या में 50 नए क्लब बनाने का दायित्व सौंपेंगे। अनूप मित्तल कहते हैं, ''हम अपने मंडल की सदस्य संख्या 4,200 में 1,500 नए सदस्य और जोड़ेंगे और नए क्लब के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वालों को पॉल हैरिस फेलो का दर्जा दिया जाएगा।'' मंडल में रोटरेक्टर्स की ताकत बढ़ाने के लिए, संस्था और समुदाय आधारित रोटरेक्ट क्लबों के लिए उन्होंने दो मंडल अध्यक्षों का मनोनयन किया है - प्रत्येक पैनल में एक अध्यक्ष और तीन सदस्य होंगे। वर्तमान में, लगभग 2,500 रोटारक्टर हैं और वह अपने कार्यकाल के दौरान इनकी संख्या बढ़ाकर 10,000 करना चाहते हैं।

जुलाई के अंत तक, वह *लाइफ ऑन व्हील्स प्रोजेक्ट* (₹3 करोड़) को हरी झंडी दिखाएंगे, जिसके अंतर्गत 50 एम्बुलेंस दिल्ली और एनसीआर के लोगों को आपातकालीन चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराएंगी। ''टीआरएफ और सीएसआर के सम्मिलित अनुदान से वित्त पोषित परियोजना, रोटरी स्वास्थ्य हेल्पलाइन के साथ आएगी। 20 वाहनों के लिए हम पहले से ही प्रतिबद्ध हैं।''

परिहार्य और आंशिक अंधेपन को मिटाने के उद्देश्य से 360 गांवों में चिकित्सा शिविर आयोजित किए जाएंगे, और इन गांवों को ''हम शत-प्रतिशत प्रौढ़ शिक्षित करेंगे।'' टीआरएफ के लिए उनका लक्ष्य है 1 मिलियन डॉलर। तीसरी पीढ़ी के रोटेरियन, मुझे 2008 में मेरे पिता बी पी मित्तल ने रोटरी में शामिल किया था। मेरा बेटा पीडीआरआर मनुज मित्तल RSAMDIO का पूर्व अध्यक्ष हैं। उनका कहना है कि ''रोटरी द्वारा किये जा रहे अच्छे कार्यों का प्रचार और प्रसार पूरी दुनिया में करना चाहिए ताकि लोग रोटरी क्लब में शामिल होने के लिए कतार में खड़े हों।''

आंध्र के तटीय क्षेत्र के क्लबों के लिए महामारी एक वरदान है

एम रामा राव

चार्टर्ड एकाउंटेंट, रोटरी क्लब विजयनगरम, RID 3020

एम रामाराव कहते हैं कि कोविड महामारी लोगों के लिए छद्म वेष में एक वरदान साबित हुई है जिसमें लोगों के लिए भोजन, दवाएं, कोविड-राहत किट वितरित करने और अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों को ऑक्सीजन सिलेंडर और कॉन्सेंट्रेटर दान करने के लिए रोटेरियन दूरदराज के गांवों तक पहुंचने का प्रयास कर रहे है। ''हमारे आपातकालीन कार्य ने आंध्र के ग्रामीण इलाकों में रोटरी की सार्वजनिक छवि के उत्थान का कार्य किया है जहां लोगों ने पहले रोटरी के बारे में नहीं सुना था।'' इसके अलावा, परियोजनाओं के लिए अब हम वर्चुअल प्लेटफॉर्म पर मिल सकते हैं और उन पर चर्चा कर सकते हैं। वह तटीय आंध्र के छह राजस्व जिलों में चार नए क्लब शुरू करने की योजना बना रहे हैं, जिससे क्लबों की कुल संख्या 80 हो जाएगी। रोटरी वर्ष के अंत तक वह 600 नए सदस्यों को शामिल करने के प्रति आश्वस्त हैं, जिनकी कुल संख्या 5000 से अधिक हो जाएगी।

''हमारे मण्डल के क्लब, कम से कम 10,000 यूनिट रक्त एकत्र करने के लिए आवासीय क्षेत्र और अपार्टमेंट परिसरों में 200 रक्तदान शिविर आयोजित करेंगे,'' वे कहते हैं। सभी क्लबों को WinS, डायलिसिस केंद्र, ब्लड बैंक स्थापित करने, श्मशान घाटों को सुधारने और अन्य आवश्यकता-आधारित परियोजनाओं को लागू करने करने के लिए डिस्ट्रिक्ट और ग्लोबल ग्रांट का भरपूर उपयोग करने के लिए कहा गया है । मंडल में वर्तमान में पांच ब्लड बैंक हैं, साल के अंत तक तीन और जुड़ जाएंगे।

राव बताते हैं, ''हम अगले दो महीनों में सम्पूर्ण मंडल में 24 आरओ प्लांट (जीजी: 67,500 डॉलर) लगाने जा रहे हैं और 300 महिलाओं को (जीजी: 60,000 डॉलर) सिलाई मशीन मुहैया कराएंगे।'' वह रोटरेक्ट क्लबों की संख्या को दोगुना कर 100 और रोटरेक्टर्स संख्या को 5,000 तक पहुंचाना चाहते हैं। टीआरएफ के लिए उन्होंने 500,000 डॉलर का लक्ष्य निर्धारित किया है।

1992 में उनके सहपाठी वीवीएस प्रसाद ने उन्हें रोटरी में आमंत्रित किया था। उनका क्लब, रोटरी क्लब विजयनगरम सेंट्रल, मंडल का सबसे युवा क्लब है, जिसके 264 में से 150 सदस्य 45 से कम उम्र के हैं।

किसानों, ग्रामीणों की आजीविका में सुधार

आर जयक्कन

रियल्टर, रोटरी क्लब स्टार मदुरै, RID 3000

इस वर्ष गांव गोद लेने की परियोजनाओं को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाएगी ''हम ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों और वंचित परिवारों की आजीविका में मूलभूत सुधार करना चाहते हैं। हमारे क्लब 25 गांव गोद लेंगे और इन गांवों में घरों में पीने के पानी की आपूर्ति, महिलाओं को कौशल प्रशिक्षण, सड़कें बिछाने और लोगों में शराब की आदत छुड़वाने के लिए नशा मुक्ति शिविर आयोजित करने जैसी पहल शामिल हैं,'' जयक्कन कहते हैं। वह मंडल में कम से कम 50 हैप्पी स्कूल बनाना चाहते हैं और *कनोली थिट्टम* सहित, *सकारात्मक स्वास्थ्य परियोजना* के तहत 500 चिकित्सा शिविर,एक नेत्र देखभाल परियोजना, स्तन-जांच शिविर आयोजित करना चाहते हैं। वैश्विक और सीएसआर दोनों अनुदान द्वारा सम्मिलित रूप से वित्त पोषित, 10 गांवों में चेक डैम के निर्माण पर भी अपना ध्यान केंद्रित करेगा ।

इन्होने 25 नए क्लबों का इज़ाफ़ा कर इनकी कुल संख्या 154 और 1,000 नए सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा है जिससे सदस्यों की कुल संख्या 6,000 को पार कर जाएगी। मंडल में 73 सक्रिय रोटरेक्ट क्लब हैं, और लगभग 150 क्लब निष्क्रिय स्थिति में हैं। ''मैं निष्क्रिय क्लबों को क्रियाशील करना चाहता हूं और नए क्लब चार्टर कर अगले वर्ष रोटरेक्ट क्लबों की कुल संख्या को 300 तक पहुंचाना चाहता हूं, साथ ही रोटरेक्टर्स की संख्या दोगुना करके 2,000 से अधिक करना चाहता हूं।''

उनकी प्रिय परियोजनाओं में से एक, मियावाकी जंगल ताड़ के पेड़ और अन्य स्वदेशी किस्मों की प्रजातियों का पौधरोपण होते हुए देखेंगे ''जिसे हमारे गांवों के प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित करने के अभियान के रूप में देखा जाएगा।'' टीआरएफ का उनका लक्ष्य 1.2 मिलियन डॉलर है। 2001 में, उन्हें एक बैंक में काम करने वाले अपने दोस्त द्वारा रोटरी में शामिल होने के लिए राजी किया गया था।

हैप्पी विलेज में रचनात्मक परियोजनाएं होंगी

एस बालाजी

रियल्टर, रोटरी क्लब कुंभकोणम, RID 2981

रोटरी मंडल 2981 का प्रत्येक क्लब एक गांव को गोद लेगा और 128 से अधिक गोद लिए सभी खुशहाल गांवों में रचनात्मक परियोजनाएं की जाएंगी जैसे महिलाओं को सशक्त करने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण, डेयरी फार्मिंग को प्रोत्साहन, ग्रामीणों को एक सुरक्षित मासिक आय अर्जित करने के लिए पशुधन का दान, स्थानीय झीलों और तालाबों से गाद निकाल कर उनकी सफाई और प्रौढ़ शिक्षा में सुधार, बालाजी कहते हैं।

वे बताते हैं, ''वर्तमान में 128 क्लब हैं और मेरा लक्ष्य उनमें 12 नए क्लब जोड़ना है, कम से कम 1,200 सदस्यों को शामिल कर रोटरी वर्ष के अंत तक 6,400 सदस्यों का लक्ष्य है।''

हैप्पी विलेज प्रोजेक्ट के तहत सामुदायिक केंद्रों और स्कूलों में शौचालय बनाए जाएंगे। ''हम स्कूल छोड़ने वाले बच्चों को वापस स्कूल लाने पर भी ध्यान केंद्रित करेंगे और क्लबों द्वारा गरीब बच्चों की शिक्षा प्रायोजित की जाएगी। इस पहल से रोटरी की सार्वजनिक छवि में वृद्धि होगी,'' वे कहते हैं। एक महत्वपूर्ण परियोजना है, ₹1.5 करोड़ की एक मैमोग्राफी बस, जो अपने पहले वर्ष में कम से कम 100,000 महिलाओं की स्क्रीनिंग करेगी। ''मैं एक वर्ष में कम से कम 500,000 रोगियों को लाभान्वित करने के लिए आठ दृष्टि केंद्र शुरू करना चाहता हूं। बालाजी इस साल रो इ के आदर्श वाक्य *'Serve to change lives'* में दृढ़ विश्वास रखते हैं, क्योंकि रोटरी वास्तव में परियोजनाओं के माध्यम से वंचित परिवारों के जीवन को बदल सकती है।'' टीआरएफ देने में 1 मिलियन डॉलर के लक्ष्य के साथ उनकी AKS सदस्य बनने की योजना है। वह रोटरी में शामिल होने के लिए 2001 में रोटरी क्लब कुंभकोणम के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ वी सी नेडुंजेलियन से प्रेरित हुए थे।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

Rotary PEOPLE OF ACTION

युवा टैली-सॉफ्टवेयर के साथ काम करना सीख रहे हैं

टीम रोटरी न्यूज़

रोई मंडल 3232 के अंतर्गत, रोटरी क्लब चेन्नई मित्रा की पहल की बदौलत, बारह युवाओं को टैली, जो कि एक अकाउंटिंग सॉफ्टवेयर है के साथ काम करने के लिए प्रशिक्षित किया गया। क्लब के पब्लिक इमेज चेयरमैन राजेश कुमार नटराजन ने कहा, ''मार्च में शुरू हुई वर्कशॉप अप्रैल के अंत तक पूरी रफ्तार से चल रही थी, कि हमें अचानक ठहराव का बटन दबाना पड़ा क्योंकि कोविद की दूसरी लहर ने अपने बदसूरत सिर को दोबारा उठाना शुरू कर दिया था।''

प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्घाटन करने के बाद क्लब सदस्यों के साथ डीजीई जे श्रीधर (बाएं से तीसरे)।

रोटरी क्लब मद्रास ईस्ट ने, रोटरी क्लब चेन्नई मित्रा के टैली-ट्रेनिंग प्रोजेक्ट के लिए शहर के उपनगर थोराईपक्कम में अपना वोकेशनल ट्रेनिंग सेंटर दिया है। क्लब के सदस्य एन एस सरवनन की अध्यक्षता में 'येन्नस इन्फोटेक' कँप्यूटर और शिक्षकों सहित तकनीकी सहायता प्रदान करता है। विद्यार्थियों के पास बुनियादी अकाउंटिंग का ज्ञान होना चाहिए। बाकी सॉफ्टवेयर के लिए कँप्यूटर का उपयोग और प्रशिक्षण केंद्र में प्रदान किया जाएगा, उन्होंने बताया कि जिले और अन्य रोटरी क्लबों द्वारा छात्रों की पहचान की गई थी।

पाठ्यक्रम की अवधि लचीली है और विद्यार्थी तब तक इस कार्यक्रम से सीख सकते हैं, जब तक वे टैली-सॉफ्टवेर में पारंगत न हो जाएँ। डीजीई श्रीधर ने कार्यशाला का उद्घाटन किया था।■

रोटरी ने पय्यानूर में कोविड टीकाकरण शिविर लगाया

गवर्नमेंट बॉयज हायर सेकेंड्री स्कूल पय्यानूर में नगरपालिका और राज्य के स्वास्थ्य विभाग की साझेदारी में रोटरी क्लब पय्यानूर, रो ई मंडल 3202 के द्वारा एक विशाल कोविड टीकाकरण शिविर का आयोजन किया गया।

पय्यानूर के एक शिविर में कोविड टीकाकरण के लिए पंजीकरण कराते लोग।

रोटरी आसलेशम क्लब परियोजना के हिस्से के रूप में सप्ताह भर चलने वाले शिविर के दौरान 7,000 से अधिक लोगों को टीका लगाया गया, जिसने इस शहर में कई कोविड केयर योजनाओं की पहल की है। परियोजना के अध्यजक्ष डॉ संतोश श्रीधर ने कहा कि ''हम पय्यानूर नगर पालिका के कर्मचारियों, फ्रंटलाइनकार्यकर्ताओं, स्कूल अधिकारियों, एनएसएस स्वयंसेवकों, आशा कार्यकर्ताओं, छात्र पुलिस कैडेट, कुडुम्बश्री कार्यकर्ताओं एवं पुलिस अधिकारियों को उनकी सक्रिय भागीदारी हेतुऔर हमारे टीकाकरण शिविर में समर्थन प्रदान करने के लिए सभी को धन्यवाद देते हैं।'' डीजी डॉ हरिकृष्णन नांबियार, डीजीई डॉ राजेश सुभाष, डीजीएन प्रमोद नयनार, जोन-5 समन्वयक पीडीजी सुनील ज़कारिया एवं रोटरी कोविड इंडिया टास्क फोर्स के सदस्यों ने क्लब के टीकाकरण अभियान में अपना समर्थन प्रदान किया। मंडल समन्वसयक डॉ एन मोहनन और कन्नूीर राजस्वन जिला समन्ववयक वेंकटेश पाई ने इस शिविर के सुचारू एवं सफल रूप से संपन्नक करने हेतु सदस्यों् को मार्गदर्शन प्रदान किया, क्लफब के कार्यकरी अध्यनक्ष सी आर नांबियार ने कहा।

विभिन्न चैनलों के माध्यम से टीकाकरण शिविर के प्रचार-प्रसार करने में आदित्यक विड़ला समूह ने वित्तीय सहायता प्रदान की। ■

घर पर बनाने के लिए सेहतमंद मौसमी व्यंजन

शर्मिला चंद

जब आप स्वास्थ्यवर्धक भोजन करते हैं तब आप अच्छा महसूस करते हैं। वर्तमान कठिन समय में, प्रतिरक्षा को मजबूत करने और समग्र स्वास्थ्य में सुधार के लिए पौष्टिक और स्वस्थ खाद्य पदार्थों के महत्व के बारे में लोग पहले से कहीं अधिक जागरूक हुए हैं। शेफ द्वारा सुझाए गए कुछ स्वास्थ्यवर्धक व्यंजन यहां दिए गए हैं जिन्हें आप घर पर आजमा सकते हैं। इसे अपने घर के आराम में आजमाएं!

टॉमेटो धनिया शोरबा

हरगंद सिंह, शेफ और फाउंडर, परत

शोरबे में ताजी धनिया पत्ती के साथ टमाटर का जायका स्वाद को बढ़ाता है और गर्मियों में भूख को जगाता है।

सामग्री:

- 6 बड़े टमाटर, कटे हुए
- 1 सूखी लाल मिर्च
- 3 चम्मच खाना पकाने का तेल
- 1/2 छोटा चम्मच जीरा
- 1/2 छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर
- 4-5 साबुत काली मिर्च, साबुत
- 3 लौंग
- 1/2 इंच दालचीनी
- 1/4 कप हरा धनिया, कटा हुआ (डंडी के साथ)
- 2 टेबल-स्पून हरा धनिया, बारीक कटा हुआ
- नमक स्वाद के अनुसार

विधि:

- पैन को गैस पर रखें और तेल डालें, गरम होने पर जीरा डालें, आंच धीमी कर दें और लौंग, काली मिर्च, दालचीनी स्टिक और अंत में सूखी लाल मिर्च डाल कर आधा मिनट तक भूनें।
- टमाटर डालें और मध्यम आंच पर चलाते रहें।
- नमक और लाल मिर्च पाउडर डालें। मध्यम आंच पर लगभग 2-3 मिनट तक पकाएं।
- टमाटर के नरम हो जाने पर इसमें कटा हुआ हरा धनिया डाल दीजिए. अच्छी तरह से मिलाएं और 1-2 मिनट तक पकाएं।
- आधा कप पानी डालें और चलाएं।
- पानी को तेज आंच पर तब तक उबलने दें जब तक टमाटर नरम न हो जाए।
- आंच को बंद कर दें और मिश्रण को ठंडा होने दें।
- थोड़ा पानी डालें और स्मूथ ग्रेवी बनाने के लिए मिश्रण को पीसें।
- छलनी का उपयोग करके सूप की ग्रेवी को एक पैन में छान लें और आंच बंद कर दें।
- फ्लेम चालू करें और मधयम मात्रा में पानी मिलाएं, स्वाद के अनुसार नमक डालें और अच्छी तरह मिलाएं।
- बारीक कटा हुआ धनिया डालें और उबाल आने तक पकाएं।
- टमाटर और धनिया के शोरबे को सूप के प्याले में निकालिए और इसे गर्मागरम परोसें।

बेक्ड प्रॉन्स सीसेमी टोस्ट

वैभव भास्कर, सलाहकार शेफ

भूख बढ़ाने वाला यह क्लासिक चायनीज़ व्यंजन का एक प्रकार है जिसे आमतौर पर तल कर बनाया जाता है लेकिन हमने कैलोरी की मात्रा को कम करने के लिए इस व्यंजन को सेक कर बनाया है और अपनी पसंद के अनुसार इसे मल्टीग्रेन ब्रेड या ब्राउन ब्रेड के साथ बनाया जा सकता है।

तैयारी समय : 30 मिनट
पकाने का समय : 10 मिनट
4 लोगों को परोसने के लिए

सामग्री:

- 200 ग्राम प्रॉन्स सी ग्रेड, छिला और धोया हुआ

- 10 ग्राम अदरक कटी हुई
- 10 ग्रामलहसुन कटा हुआ
- 1 नग अंडा
- 5 ग्राम ब्रेकफास्ट चीनी
- 5 ग्राम नमक
- 3 ग्राम सफेद कालीमिर्च पाउडर
- 3 मिली थोड़ा सा सोया सॉस
- 10 मिली ऑयस्टर सॉस
- 5 ग्राम ब्रोथ पाउडर
- 20 ग्राम मक्खन
- 5 मिली चायनीज वाइन
- 30 ग्राम हरे प्याज कटे हुए
- 4 पीस ब्राउन पाव स्लाइस
- 5 मिली तिल का तेल
- 80 ग्राम तिल के बीज

विधि:

- झींगों (प्रॉन्स) को धोकर साफ कर लें और उन्हें चॉपर से बहुत बारीक काट लें या फूड प्रोसेसर की मदद से गाढ़ा पेस्ट बना लें।
- सब्जियों को धोकर साफ कर लें। अदरक, लहसुन और हरी प्याज को बारीक काट लें और मिश्रण बनाने के लिए इस्तेमाल करने के लिए एक तरफ रख दें।
- एक कटोरी लें। झींगा पाउडर, कटा हुआ अदरक, लहसुन, हरा प्याज, अंडे का सफेद भाग, चीनी, सोया सॉस, नमक, सफेद मिर्च, पिघला हुआ मक्खन, ऑयस्टर सॉस, चाइनीज वाइन और शोरबा पाउडर डालें और अच्छी तरह मिलाएँ ताकि सभी सामग्री समान रूप से मिश्रित हो जाएँ। ढक्कन लगा दें और 30 मिनट के लिए ठंडा होने दें।
- ब्रेड को तिल के तेल से ब्रश करें, फिर ऊपर से झींगा मिश्रण फैलाएं। फेंटे हुए अंडों को झींगा के मिश्रण पर सावधानी से ब्रश करें, फिर ऊपर तिल छिड़कें।
- मल्टी-फंक्शन ओवन को 200 डिग्री पर प्रीहीट करें या ब्रेड को बेक (सेकने) करने के लिए सैलामैंडर का इस्तेमाल करें। ओवन को प्रीहीट करने में 8 से 10 मिनिट का समय लगेगा और तिल गोल्डन ब्राउन हो जायेंगे.
- ब्रेड के किनारों को काट लें और फिर उन्हें अपनी पसंद के अनुसार आयताकार या त्रिकोण आकार में काट लें।
- स्वीट चिली सॉस या श्रीराचा सॉस के साथ इसे गरमागरम परोसें।

मसालेदार गोभी और चिकन सलाद

विक्रमजीत रॉय, फाउंडर और एक्जीक्यूटिव शेफ, हेलो पांडा

गर्मियों के मौसम के लिए एकदम ताजा और कुरमुरा सलाद जिसमें उचित प्रोटीन और पर्याप्त मसाले हैं !

ड्रेसिंग के लिए:

- 2 छोटी ताजी लाल मिर्च
- 1 लौंग व लहसुन, छिला हुआ एवं कटा हुआ
- 1/2 टेबल स्पून चीनी
- 1 चुटकी नमक
- 6 टेबल स्पून व्हाइट विनेगर
- 3 टेबल स्पून फिश सॉस (वैकल्पिक)

चिकन के लिए

- 1 बोनलेस, स्किनलेस पूरा चिकन ब्रेस्ट
- 1 छोटा लाल प्याज, छिला हुआ और बारीक कटा हुआ
- 3/4 कप व्हाइट विनेगर
- 1/2 छोटी पत्ता गोभी, लंबाई में कटी हुई पतले आकार में
- 1 मध्यम आकार की गाजर, छिली हुई और पतली कटी हुई
- 2 टेबल स्पून ताजा हरा धनिया और बारीक कटा हुआ पुदीना

विधि:

- ड्रेसिंग के लिए: कुटी हुई मिर्च, लहसुन, चीनी और नमक को खल-मूसल में कूटकर सुगंधित गाढ़ा पेस्ट तैयार करें। पेस्ट को एक छोटे कटोरे में डालें, उसके बाद विनेगर और फिश सॉस को मिलाएं (वैकल्पिक)। ड्रेसिंग को एक तरफ रख दें।
- चिकन के लिए: चिकन को मिडियम पैन में डालें, 1 इंच तक कवर करने के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी डालें, फिर इसे मध्यम-उच्च ऑच पर उबाल लें। गर्मी को मध्यम से कम करें और धीरे से उबाल लें, आंशिक रूप से कवर करें, जब तक कि 15-20 मिनट में चिकन पूरी तरह से पक न जाए। छानकर ठंडा होने के लिए अलग रख दें। चिकन को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटें, किसी भी कार्टिलेज या वसायुक्त पीस को हटा दें। एक तरफ रख दें।
- इस बीच, एक बड़े कटोरे में प्याज और सफेद सिरका डालें। 15 मिनट के लिए मैरिनेट होने दें फिर छान लें। प्याज में पत्ता गोभी, गाजर, बचा हुआ चिकन और फिश सॉस (वैकल्पिक) डालें और मिलाएँ। परोसने से कुछ देर पहले, अच्छी तरह मिलाएं और मसालों को स्वाद अनुसार रखें। सलाद थोड़ा सा गल जाएगा।

चुकंदर, मशरूम और एवोकैडो सलाद

सिद्धार्थ शंकर सरमाह, एक्जीक्यूटिव शेफ, हॉलिडे इन, मयूर विहार, नोएडा

यह पत्तेदार सब्जियों का सलाद निश्चित रूप से इसके स्वास्थ्यकारक अनुपात के कारण अनुशंसित है।

सामग्री:

- 4 मध्यम आाकार के मशरूम
- 1/4 नींबू का रस
- 3 बड़े चम्मच जैतून का तेल
- 1 बारीक कटा हुआ प्याज
- 20 ग्राम छोटे पत्तों वाली पालक
- 20 ग्राम पहले से पके हुए चुकंदर, कटे हुए
- 1 पका हुआ एवोकाडो, पतला कटा हुआ
- नमक और कुटी हुई काली मिर्च स्वाद के लिए

विधि:

एक बड़े किनारे वाली बेकिंग शीट पर, मशरूम पर नॉन स्टिक कुकिंग से स्प्रे करें और उस पर आधा चम्मच नमक छिड़कें, 450 डिग्री फारेनहाइट पर 20 मिनट या नरम होने तक भूनें। नींबू का रस, जैतून का तेल, प्याज़, 1/4 छोटा चम्मच नमक और काली मिर्च मिलाएं। छोटे पत्तों वाली पालक, तरमिरा के पत्ते और चुकंदर डालें। सर्विंग प्लेट्स में बांट लें। पतले कटे हुए एवोकाडो और मशरूम रखें। बाकी बची ड्रेसिंग के साथ इसे परोसें।

इंसालाता डि लेगुमी

इवान चिरेगट्टी, एक्जीक्यूटिव शेफ, हयात रीजेंसी, दिल्ली

स्वस्थ हाई-फाइबर सलाद इंसालता डि लेगुमी प्रोटीन से भरपूर है और एक मनभावन सलाद है, जो गर्मी के महीनों के लिए अच्छा है। ताजा और स्वाद से भरपूर, यह सलाद ताजगीभरा और संतुष्टिदायक भोजन है।

सामग्री: (4 लोगों को परोसने के लिए)

- 100 ग्राम जौ (बार्ली)
- 100 ग्राम मसूर की दाल
- 300 ग्राम टमाटर सॉस
- 300 ग्राम भुना हुआ कद्दू
- 20 तुलसी के पत्ते
- 30 मिली अतिरिक्त वर्जिन ऑलिव ऑयल
- 4 टमाटर हल्के उबले हुए
- 100 ग्राम अजवाइन
- 100 ग्राम गाजर
- 100 ग्राम हरी तुरई
- 10 गाम नमक
- 4 ग्राम पिसी हुई काली मिर्च
- 3 ग्राम चिली फ्लेक
- 5 ग्राम कटा हुआ लहसुन
- मिक्स क्रेश

विधि:

- जौ (बार्ली) को पकाने से पहले रात भर भिगो दें। एक बर्तन में पानी और नमक लें। जौ डालें और 10 मिनट तक पकाएं। फिर मसूर दाल डालें और 20 मिनट और पकाएं।
- पानी निथारें और ठंडा होने के लिए एक तरफ रख दें।
- तुरई के बीज निकाल कर ब्रूनोईस में काट लीजिये, इसी तरह गाजर, सेलेरी और टमाटर को भी काट लीजिये. सब्जियों को अलग से नमकीन पानी में ब्लांच करें और उनका रंग बनाए रखने के लिए उन्हें तुरंत बर्फ के पानी में ठंडा होने दें। छानकर फ्रिज में रख दें। एक पैन गरम करें और उसमें जैतून का तेल, कटा हुआ लहसुन और मिर्च डालें और सुनहरा होने तक पकाएँ, टमाटर सॉस डालें और आँच को कम करके कुछ मिनट तक पकाएँ। इसे एक तरफ रख दें।
- एक बड़े सॉस पैन में, जैतून का तेल और बचा हुआ कटा हुआ लहसुन डालें, मसूर दाल और जौ डालें, नमक और काली मिर्च डालें और आँच को कम करें। स्वाद को सोखने के लिए खाना पकाने की प्रक्रिया के दौरान कुछ चम्मच पानी डालें।
- अब तोरी, गाजर और अजवाइन डालें और कुछ मिनट के लिए तब तक पकाएं जब तक कि गाढ़ापन पर्याप्त न हो जाए। एक ट्रे में नमक, काली मिर्च और जैतून के तेल के साथ मिलाएं (अपनी पसंद के अनुसार छिलके सहित साथ या छिलके बिना)।
- इसे कुछ हर्बस के साथ ओवन में रखें और लगभग 35-40 मिनट तक बेक करें जब तक कि यह अच्छी तरह से पक न जाए।
- एक सर्विंग प्लेट में, चौकोर साँचे का उपयोग करके टमाटर सॉस डालें और सभी सब्जियों को एक साथ मिला लें और मोल्ड को बाहर निकालने के बाद भी एक सुंदर आकार बनाने के लिए थोड़ा सा दबाएं।
- भुने हुए कद्दू, हर्बस और अतिरिक्त वर्जिन ऑलिव ऑयल कुंवारी जैतून के तेल की कुछ बूंदों से गार्निश करें।

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

एक रोटेरियन के निधन ने रोटरी क्लब पुत्तूर को डायलिसिस सेंटर स्थापित करने के लिए प्रेरित किया

टीम रोटरी न्यूज़

यह रो ई मंडल 3181 के अंतर्गत आनेवाले, आरसी पुत्तूर के सदस्यों के लिए एक गर्व का क्षण था, जब इस वर्ष 20 फरवरी को डीजी रंगनाथ भट, स्थानीय राजनेताओं और पिछले जिला गवर्नरों की उपस्थिति में केंद्रीय रसायन एवं उर्वरक मंत्री डी वी सदानंद गौड़ा द्वारा डायलिसिस केंद्र का उद्घाटन किया गया था।

रोटरेक्ट से स्नातक करने वाले उनके सहयोगी को 2016 में किडनी फेल होने का सामना करना पड़ा और मंगलौर के एक निजी अस्पताल में डायलिसिस कराने के बावजूद 49 की उम्र में उनका निधन हो गया। सबसे पहले उन्होंने पुत्तूर के एक सरकारी तालुक अस्पताल से संपर्क किया, लेकिन इसमें सीमित डायलिसिस यूनिट थीं और जो पहले से ही ओवरबुक थीं। इसके बाद उन्होंने एक निजी अस्पताल में अपनी किस्मत आजमाई, लेकिन यह भी किसी काम ना आया। इसलिए, उनके पास और कोई विकल्प नहीं था, बजाय इसके कि ''वे एक साथी के साथ मैंगलोर की यात्रा करें, अपनी बारी आने की प्रतीक्षा करें, डायलिसिस से होकर गुजरें और घर लौटकर ठीक होने का इंतजार करें। उन्हें एक सप्ताह में दो बार दो कार्य दिवसों को खोना पड़ा। उनकी आय कम हुयी, खर्चे बढ़ गए और स्वास्थ्य बिगड़ गया,'' क्लब के एक सदस्य रोटेरियन एन श्रीकांत कोलाथया ने बताया। उनके निधन के बाद, क्लब के सदस्यों ने इस शहर और उसके आस-पास के इलाकों के गुर्दे की बीमारियों से पीड़ित लोगों की मदद करने के लिए कुछ करने का संकल्प लिया।

एक देवदूत पीडीजी

हालांकि, क्लब उस समय इस डायलिसिस परियोजना पर तुरंत काम करने में असमर्थ था, ''हम सेल विभाजक प्रणाली के कार्यान्वयन में व्यस्त थे, जो कि हमारे रोटरी-कैंम्को ब्लड बैंक के लिए ₹1 करोड़ की लागत से चल रहा एक अपग्रेड कार्यक्रम था, उन्होंने कहा।

सौभाग्य से, अमेरिका से पीडीजी विनायक कुडवा के साथ मुलाकात का मौका एक फेलोशिप मीट में क्लब के सदस्यों को हासिल हुवा और उन्होने उनके साथ डायलिसिस सेंटर के प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाने की बात शुरू की। कुडवा ने पहले भी सेल सेपरेटर प्रोजेक्ट के लिए मैचिंग पार्टनर लाया था और जब उन्होंने पूछा, आगे क्या? रोटेरियन एक साथ बोले डायलिसिस यूनिट। उन्होंने सहजता से कहा, आगे बढ़ो।

एक प्रारंभिक अध्ययन में उन्होंने पाया कि इस शहर में डायलिसिस सुविधाओं की कमी के कारण पुत्तूर से लगभग 52km दूर, मंगलौर के लिए लगभग 60 रोगी नियमित रूप से यात्रा कर रहे थे। जब क्लब ने स्थानीय सरकारी अस्पताल में सुविधा स्थापित करने के बारे में सोचा तो उन्होंने पाया कि मशीनों की सप्लाई और उनको चलाने की व्यवस्था आउटसोर्स की गई थी।

पिछले अध्यक्ष डॉ अशोक पडिवाल ने अपने अस्पताल 'महावीर मेडिकल सेंटर' में जगह प्रदान किया। क्लब ने मैचिंग दाता, अमरिका के रो ई मंडल 6890 के अंतर्गत, रोटरी क्लब न्यू टम्पा नून के समर्थन और सदस्यों तथा जिला कोष से योगदान की बदौलत, ₹50 लाख की लागत से डायलिसिस सेंटर स्थापित किया। इस सुविधा में महीने में 250 डायलिसिस करने की क्षमता है। ''हमने डायलिसिस सुविधा को सुचारू रूप से चलाने के लिए 'ए जे अस्पताल और अनुसंधान केंद्र' (मंगलौर) के साथ समझौता किया है। हम अपने चैरिटेबल ट्रस्ट से बीपीएल कार्ड धारकों और गरीब मरीजों को रियायतें देते हैं,'' कोलाथया ने बताया।

साबित की हुयी विशेषज्ञता

क्लब के पास एक ब्लड बैंक चलाने का समृद्ध अनुभव है और क्लब के सदस्य के रूप में 15 डॉक्टर भी हैं, जो पांच मल्टी स्पेशलिटी अस्पतालों में काम करते हैं। निकट भविष्य में, क्लब एक रक्त दान वाहन और कार्डियक केयर एम्बुलेंस को शुरू करने के लिए उत्सुक है, जो उन रोगियों को आवश्यक गुणवत्ता स्वास्थ्य सेवा प्रदान करायेगी, जो कि चिकित्सा सेवाओं तक पहुंच नहीं सकते हैं। ■

संगीत और माधुर्य

के एल सहगल

एक ऐसे गायक जिन्होंने दिल और दिमाग दोनों पर राज किया

एस आर मधु

1937 में,बॉम्बे के एक व्यवसायी अपने एक पारिवारिक कार्यक्रम में प्रदर्शन करने के लिए सबसे बेहतरीन और सबसे प्रतिष्ठित गायक चाहते थे। कुंदन लाल सहगल को कुछ घंटों के लिए ₹25,000 पेश किए गए थे। लेकिन उन्होंने एक गरीब प्रकाश सहायक से किए गए वादे को पूरा करना महत्वपूर्ण समझाजिसकी बेटी की शादी हो रही थी। सहगल ने उस ₹25,000 के प्रस्ताव को ठुकराकर वहाँ पर पूरी रात गाया। नौशाद कहते थे, ''गायकों के बादशाह के पास फरिश्तों की आवाज़ और एक सोने का दिल था।''

सहगल की आवाज़ उस सदी की आवाज थी, एक ऐसी शक्तिशाली आवाज जो रिकॉर्डिंग की सुइयाँ तोड़ सकती थी! वह पहले महान गायक-अभिनेता और बॉलीवुड संगीत के पहले सुपरस्टार थे।

एक गायक के रूप में उनको दिया गया भगवान का दर्जा अनेक कारणों से उल्लेखनीय है। वह मुश्किल से 15 साल (1933 से 1947) तक सक्रिय रहे और उन्होंने मूलभूत संगीत रिकॉर्डिंग सुविधाओं के साथ मात्र 185 गाने गाए (जिसमें छह भाषाओं की 39 फिल्मों के 142 फिल्मी गीत शामिल थे)। उनके पास संगीत का बहुत कम प्रशिक्षण था। लेकिन उन्होंने पूरे देश को अपनी आवाज़ का मुरीद बना दिया था। उस्ताद फैय्याज खान जैसे शास्त्रीय संगीतज्ञ भी उनके गीत के प्रभावी बल को देखकर दंग रह गए। 1932 में उनके एक गैर फिल्मी गीत, *झुलना झुलाओ री ने* एक ऐसे युग में आधे मिलियन रिकॉर्ड की बिक्री की जब कुछ ही लोगों के पास रिकॉर्ड-प्लेयर होते थे।

बचपन में लता मंगेशकर सहगल की आवाज़ पर इतनी फ़िदा थी कि वह कहती थी कि वह उनसे शादी करना चाहती है! अपने भव्य शानदार स्टेज शो मेंकिशोर ने सभी की नकल उतारी पर सहगल की कभी नहीं। ऐसा करना उनका अनादर होता। सहगल के बारे में तलत महमूद ने कहा ''क्या उच्चारण, क्या आवाज़, क्या भावना की गहराई, क्या आवाज नियंत्रण

है – मैं तो उन्हें छू भी नहीं सकता!'' 1947 में *परवाना* में उनके साथ युगल गीत गाने के विचार पर सुरैया इतनी डर गई कि संगीतकार को वो विचार त्यागना पड़ा।

1930 और 1940 के दशक के दौरान बॉलीवुड में यह माना जाता था कि एक गायक को प्रभावी होने के लिए सहगल की तरह लगना होगा: वह गुणवत्ता और प्रभाव नापने के एकमात्र मापदंड थे। मुकेश ने अपने करियर की शुरुआत एक बारंबार याद आने वाले गीत *दिल जलता है तो जलने दो* (*पहली नज़र,* 1947) से की थी जिसे उन्होंने बिल्कुल सहगल की तरह ही गाया था, जिसपर सहगल ने भी टिप्पणी की थी कि ''मुझे याद नहीं है मैंने यह गीत कब गाया!'' सीएच आत्मा ने अपने अमर गीत *प्रीतम आन मिलो* (1945 में एक निजी एल्बम के लिए गाया गया गीत) के लिए सहगल की ही शैली को अपनाया, ऐसा ही सुरेंद्र ने नूरजहाँ के साथ गाए गए अपने प्रतिष्ठित युगल गीत *आवाज़ दे कहाँ है* (*अनमोल घड़ी,* 1946) में किया।

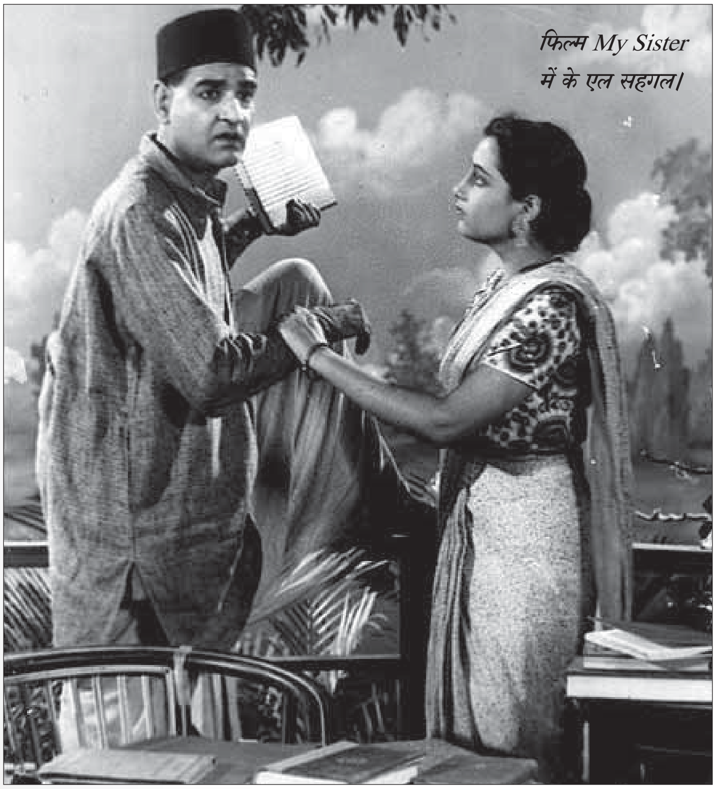

फिल्म My Sister में के एल सहगल।

कुछ 45 वर्षों तक (50 के दशक के मध्य से शुरू होकर), हजारों फिल्मी संगीत प्रेमियों के लिए दिन का सबसे महत्वपूर्ण समय सुबह 7.57 बजे का था, जब रेडियो सीलोन पर के एल सहगल का एक गीत बजता था जिसके देशभर में सब मुरीद थे। फिल्म इतिहासकार मानेक प्रेमचंद का कहना है कि लोग पक्षियों की चहचहाहट को सुनकर नहींबल्कि सहगल की आवाज़ को सुनकर उठते थे।

सहगल की आवाज़ उस सदी की आवाज थी, एक ऐसी शक्तिशाली आवाज जो रिकॉर्डिंग की सुइयाँ तोड़ सकती थी!

सहगल का जन्म 11 अप्रैल, 1904 को जम्मू में हुआ था, और वह चार भाइयों में तीसरे नंबर पर थे। उनके पिता अमरचंद सहगल एक छोटे शहर के तहसीलदार थे। एक बालक के रूप में उन्होंने गायन में गहरी दिलचस्पी दिखाई और वह किसी भी सुने गए गीत की नकल कर सकते थे। वह अक्सर अपनी माँ केसर देवी के साथ जाते थे जो धार्मिक समारोहों में भजनों की एक निपुण गायिका थीं। वह लोक गायकों और भटकने वाले गवैयों और यहाँ तक कि जम्मू के *कोठों* पर नाचने वाली लड़कियों तक से संगीत विद्या सीख लेते थे। 10 साल की उम्र में, वह राम लीला समारोहों में सीता की भूमिका निभाते थे।

लेकिन उनके पिता उन्हें बेकार समझते थे, वे अक्सर उन्हें उनके आलस्य, पढ़ाई में ढीलेपन, परीक्षा में खराब प्रदर्शन, बिखरे बालों में रहने और संगीत के प्रति दीवानगी के लिए डांटते और फटकारते रहते थे।

12 साल की उम्र में उनकी आवाज में कुछ खराबी आ गई थी जिस वजह से वह गाने में असमर्थ हो गए थे और इससे वह बहुत व्याकुल थे। उनकी मां उन्हें एक आध्यात्मिक सूफी के पास ले गईजिन्होंने जन्म के समय ही उन्हें आशीर्वाद दिया था और बाद में उनके उज्ज्वल भविष्य की भविष्यवाणी की थी। उस आध्यात्मिक सूफी ने युवा कुंदन को अपने पंथ के दो गुप्त भजन, *ज़िक्र* और *रियाज़* का अभ्यास करने के लिए कहा जो आध्यात्मिक ज्ञान को सुनिश्चित करेगा और गीत को भावनाओं में बदलने में उन्हें सक्षम बनाएगा। कुंदन ने दो साल के लिए गाना बंद कर दिया लेकिन वह एक समृद्ध, अनुनासिक मध्यम सुर की आवाज़ को पाने में *ज़िक्र* और *रियाज़* में निपुण हो गए।

सहगल ने एक बार अपने एक करीबी दोस्त को बताया था कि ''मैं 12 साल की उम्र

सहगल विद्या
संगीत और व्यक्तिगत

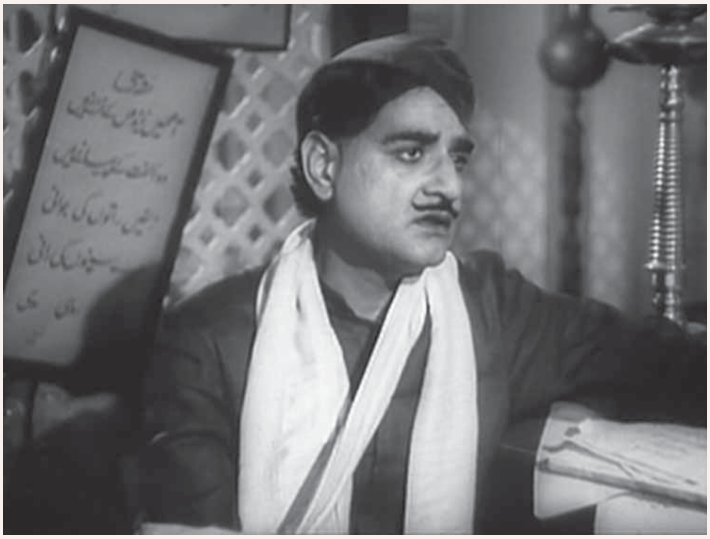

सहगल ने शाहजहाँ (1946) में जब दिल ही टूट गया गीत गाया था।

1937 में, पृथ्वीराज कपूर सहगल को मुंबई में हॉकी के जादूगर ध्यानचंद और उनके भाई रूप सिंह का एक हॉकी मैच दिखाने ले गए। लेकिन आधे समय तक एक भी गोल नहीं आया और सहगल ने अपनी निराशा व्यक्त की। उन भाइयों ने उनसे पूछा कि क्या वह बाकी बचे आधे समय में उनके द्वारा बनाए किए गए प्रत्येक गोल के लिए एक गाना गा सकते है। वह राज़ी हो गए। उन्होंने 12 गोल किए! दो दिन बाद,

जब उनके संगीत के लिए उनकी प्रशंसा की गईतो उन्होंने कहा कि ''मैंने कोई शेर नहीं मारा, बस एक गाना गाया है, इसे भूल जाओ।

सहगल ने उनके लिए 14 गाने गाए और उन्हें महंगी घड़ियाँ भेंट की।

1938 में अपने चरम पर, उन्हें इलाहाबाद में एक बड़े संगीत सम्मेलन में आमंत्रित किया गया। ओंकारनाथ ठाकुर, उस्ताद फैय्याज खान, विनायक राव पटवर्धन और अन्य जैसे शास्त्रीय संगीत के दिग्गज भी वहाँ मौजूद थे। सहगल चर्चा का विषय बने क्योंकि दर्शकों ने शोर मचाकर उनसे बार बार गाने का आग्रह किया। दर्शकों में शामिल अपनी माँ का हाथ पकड़ते हुए उन्होंने कहा ये लोग चाहते है कि मैं और गाऊं। यह सुनकर उनकी आँखों से खुशी के आँसू झलक पड़े कि जिस बेटे को उसके पिता द्वारा बेरहमी से मारा जाता था वो आज जनता का प्रिय बना हुआ है।

उदारता और विनम्रता सहगल की ज़िंदगी का हिस्सा थे। उन्होंने कभी किसी जरूरतमंद को बिना मदद के नहीं लौटाया। उन्होंने एक बार बारिश में कांपते हुए एक भिखारी को अपने कपड़े दिए और शॉर्ट्स और बनियान में घर आ गए। उन्होंने पुणे में मिली एक लाचार विधवा को अपनी हीरे की अंगूठी दे दी थी। उनकी पत्नी ने प्रोड्यूसरों से सहगल के काम का पैसा अपने ड्राइवर को देने के लिए कहा। एक अंतर्मुखी होने के नाते वह प्रचार से दूर रहते थे। शोहरत उन्हें बिल्कुल प्रभावित नहीं कर सकीं। जब उनके संगीत के लिए उनकी प्रशंसा की गईतो उन्होंने कहा कि ''मैंने कोई शेर नहीं मारा, बस एक गाना गाया है, इसे भूल जाओ।''

ग़ालिब की तरह ही सहगल को शराब का शौक था। ऐसा कहा जाता है कि वह कटिस्नायुशूल से पीड़ित थेऔर उन्हें शराब पीने के लिए कहा गया था। और यह एक आदत बन गई, फिर एक लत। सहगल अक्सर गाना गाने से पहले 'काली पंच' की खुराक लेते थे। नौशाद का कहना था कि उन्होंने सहगल को पीने से पहले और पीने के बाद *जब दिल ही टूट गया* गाना रिकॉर्ड करने के लिए राजी किया। सहगल चकित थे कि पीने के पहले वाला संस्करण बेहतर था और उन्होंने कामना की कि काश वह नौशाद से पहले मिले होते।

दिसंबर 1946 में, सहगल की तबीयत खराब हो गई (वे यकृत और मधुमेह के सिरोसिस से पीड़ित थे)। वे अपने गृह नगर जालंधर चले गए और एक हफ्ते तक अखबारों में राजनीति, सांप्रदायिक दंगे और पाकिस्तान के बारे में पढ़ते हुए 18 जनवरी, 1947 को स्वर्ग सिधार गए।

जब उनकी मृत्यु हुई तब वह सिर्फ 43 वर्ष के थे। लेकिन उन्होंने बॉलीवुड संगीत को आत्मा और जादू दिया। यदि आज इसे भारत की शांत शक्ति का एक शानदार उदाहरण माना जाता हैतो इसका श्रेय किसी ओर से अधिक कुंदन लाल सहगल को जाता है।

में एक शाम को जम्मू में एक पीर की झोपड़ी में जन्मा था।''

जब उनके पिता सेवानिवृत्त हुएतो उनका परिवार जालंधर चला गया। संगीत को लेकर उत्साहित और उस शहर के जीवन से परेशान होकर सहगल ने घर छोड़ दिया। उन्होंने कई फुटकर काम किए और जब भी संभव हो पाया संगीत को सुना और गाया। वह अनेक शहरों में घूमते रहें। उन्होंने रेलवे में समयपाल के रूप में कार्य किया, रेमिंगटन टाइपराइटर और साड़ियाँ बेची, शिमला में एक होटल में प्रबंधक रहें। भटकने के इन वर्षों के दौरान, वह अक्सर अपने असाधारण संगीत के माध्यम से घरों में और दावतों में लोगों को मंत्रमुग्ध कर देते थे।

कलकत्ता में, सहगल का परिचय बी एन सिरकार से हुआजिन्होंने तभी तब न्यू थिएटर शुरू किया था। वह अपना कुर्ता खींचते उस भद्दे दुबले-पतले आदमी से प्रभावित नहीं हुए थे। लेकिन जब सहगल ने गाना गाया तो वह हैरान रह गए। परिणामस्वरूप: ₹200 के मासिक वेतन पर पांच साल का फिल्म अनुबंध।

न्यू थियेटर्स के साथ सहगल की पहली तीन फिल्में फ्लॉप हुई। हालाँकि 1934 में *चंडीदास* के साथ भाग्य ने करवट लिया और इसका करुण रस से भरा प्रेम गीत *प्रेम नगर* हिट रहा। 1935 की देवदास एक राष्ट्रीय सनसनी थी। *बलम आए बसो मोरे मन में* एक प्रेम गीत था जिसने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। *दुःख के दिन बीतत नाहीं* निराशा के रसातल में डूबे हुए व्यक्ति का रूदन था। सहगल के साथ लाखों रोए, बाबूराव पटेल ने कहा।

सफलता के बाद सफलता मिली (*प्रेसीडेंट, स्ट्रीट सिंगर, दुश्मन* आदि जैसी फिल्मों के साथ)। जिन लोगों ने जालंधर के बिखरे बाल वाले इस युवा – जब उन्होंने पहली बार फिल्म ों में प्रवेश कियातो उन्हें फ्रेंकनस्टीनकहा गया – का उपहास किया उन्होंने उनकी सुनहरी आवाज़ को कैद करने के लिए एक दूसरे से होड़ लगाई। 1937 में एक मंच प्रदर्शन के लिए की गई उनकी लाहौर यात्रा के दौरान सहगल को उस भीड़ का अत्यधिक स्नेह प्राप्त हुआ। हवाओं में ''कुंदन लाल सहगल जिंदाबाद'' के नारे गूंज रहे थे।

उन्होंने 1934 में अपनी माँ की पसंद की लड़की आशा रानी से शादी की। उनके तीन बच्चे हुए।

1941 में, फिल्मी हस्तियों ने कलकत्ता से बॉम्बे तक का कूच किया इसलिए सहगल भी वहाँ चले गए। रंजीत मूवीटोन के चंदूलाल शाह ने उनके साथ ₹1 लाख प्रति फिल्म की दर से 3 फिल्मों का अनुबंध हस्ताक्षरित किया। सहगल ने *भक्ति सूरदास* (1942) और *तानसेन* (1943) में यादगार गीत गाए। 1944 में, वह न्यू थियेटर्स के साथ *माय सिस्टर* करने के लिए कलकत्ता वापस चले गए। उनकी अंतिम प्रसिद्ध फिल्म *शाहजहाँ* (1946) थी, जहाँ उन्होंने *जब दिल ही टूट गया गाया* जो दुख, मिठास और नशे का मिश्रित गीत था, शायद यही वो गीत है जिसके लिए उन्हें सबसे ज्यादा याद किया जाता है।

सहगल के कई गाने बॉलीवुड के अमर गीतों में शामिल है। उदाहरण:

- *एक बंगला बने न्यारा* (*प्रेसीडेंट,* 1937)
- *बाबुल मोरा* (*स्ट्रीट सिन्गर,* 1937)
- *करूँ क्या आस नीरस भई* (*दुश्मन,* 1939)
- *मैं का जानूँ क्या जादू है* (*ज़िंदगी,* 1940)
- *सो जा राजकुमारी सो जा* (*ज़िंदगी,* 1940)
- *ऐ कातिब-ए-तकदीर मुझे इतना बता दे* (*माय सिस्टर,* 1943)
- *दो नैना मतवारे तिहारे* (*माय सिस्टर,* 1943)
- *जब दिल ही टूट गया* (*शाह जहाँ,* 1946)

इनमें से प्रत्येक कृति का विस्तृत विश्लेषण किया गया है; यहाँ कुछ तथ्यात्मक झलकियों का वर्णन किया गया है। *एक बंगला बने न्यारा (प्रेसीडेंट)* में, सहगल अपना स्वयं का घर होने के विचार से उत्तेजित होकर नाचते और गाते है। लाखों आकांक्षी भारतीयों ने इस गीत को लेकर समानुभूति व्यक्त की। यह लता मंगेशकर का पसंदीदा गीत था, वह अक्सर इसे गुनगुनाती थी।

मैं का जानूं क्या जादू है और *दो नैना मतवारे* के माध्यम सेसहगल ने अपनी स्क्रीन की दिलरुबा के प्रति उत्साहपूर्ण और मधुर प्रेम भाव व्यक्त किए। *ग़म दिए मुस्तक़िल* और *जब दिल ही टूट गया* अत्यंत हृदय विदारक गीत थे। *बाबुल मोरा (स्ट्रीट सिंगर)* ऐतिहासिक था। उन्होंने जोर देकर कहा कि वह किसी स्टूडियो में नहीं बल्कि सड़क गायकों की तरह ही सड़क पर चलते हुए साक्षात गाएंगे। एक ट्रक में माइक चल रहे थे। संगीत निर्देशक आर सी बोरल इस प्रभाव को देखकर चकित रह गए।

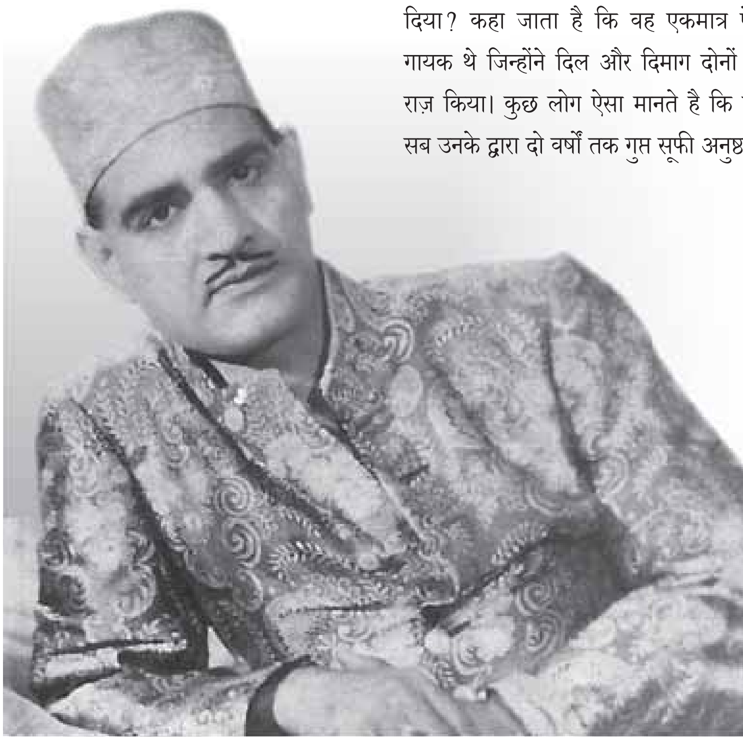

सहगल को *ग़ज़ल सम्राट* कहा जाता है। उन्होंने किसी और की तुलना में प्यार भरी उर्दू कविता कोलोकप्रिय बनाने के लिए बहुत कुछ किया, खास तौर पर निजी कार्यक्रमों में। और गजल गायक के रूप में पहली बार पहचान हासिल की। उर्दू साहित्य के जानकार और स्वयं एक कवि होने के नाते ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने ग़ालिब की बेहतरीन ग़ज़लों को अपने अद्वितीय अंदाज़ में गाकर उसे अमर कर दिया।

किस बात ने उन्हें इतना अद्भुत बना दिया? कहा जाता है कि वह एकमात्र ऐसे गायक थे जिन्होंने दिल और दिमाग दोनों पर राज़ किया। कुछ लोग ऐसा मानते है कि यह सब उनके द्वारा दो वर्षों तक गुप्त सूफी अनुष्ठानों का अभ्यास करने की वजह से हुआ जिसने संगीत के माध्यम से भगवान तक पहुँचने को रास्ता दिखाया। कुछ आलोचकों ने उनके तान रूपांतरों और जिस तरह से वह गाते समय कुछ शब्दों को स्पर्श करते थे, पर प्रकाश डाला है। उनके पास एक शब्द को गाने के 20 तरीके थे!

कानन देवी ने टिप्पणी की कि सहगल के पास पिच का एक सटीक अनुभव था। सटीक पिच सेट करने के लिए उन्हें वीणा या तानपुरा की मदद की जरूरत नहीं थी। बल्कि रिकॉर्डिंग सत्रों में वह एक नोट गाते थे और संगीतकार अपने उपकरणों को उसी के अनुसार सेट करते थे। एक अद्भुत घटना!

फिल्म पत्रिका जयति के संपादक किरीट घोष के साथ एक जानकारिप्रद साक्षात्कार मेंसहगल ने कहा, ''मुझे संगीत के व्याकरण की कोई स्पष्ट समझ नहीं है। मैं अपने अंदर की एक मजबूत भावना के कारण गाना गा पाता हूँ कि किसी राग में कुछ ध्वनियों कैसी लगनी चाहिए। यदि मैं कहीं पर एक नोट से ही काम चला सकता हूँ तो मैं वहाँ पर दस नोट का उपयोग नहीं करता। ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं बहुत कम जानता हूँ।''

उन्होंने कहा कि उनकी पसंदीदा राग *भैरवी* है। *भैरवी* को जानना सभी रागों को जानना है।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार और
रोटरी क्लब मद्रास साउथ के सदस्य हैं।

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से संदेश

डेटा गोपनीयता चेतावनी

क्लब और मंडल निर्देशिकाओं में रोटेरियनों का व्यक्तिगत डेटा हो सकता है। निर्देशिकाओं को आम जनता को कभी भी वितरित नहीं किया जाना चाहिए और ना ही आम जन द्वारा देखे जा सकने वाले वेब पेजों पर पोस्ट किया जाना चाहिए। डिजिटल निर्देशिकाओं को पासवर्ड से सुरक्षित किया जाना चाहिए। व्यक्तिगत जानकारी इकट्ठा करते समय, अपने सदस्यों को पहले से बताएं कि उनकी जानकारी का इस्तेमाल कैसे किया जाएगा।

PAN अनिवार्य

भारतीय दानदाताओं द्वारा चेक/ड्राफ्ट के माध्यम से ऑनलाइन दिए जाने वाले योगदानों के लिए उनका PAN नंबर जमा करना अनिवार्य है, चाहे राशि कितनी भी क्यों ना हो या आयकर अधिनियम, 1961, की धारा 80G के तहत कर-छूट प्राप्त करने हेतु दावा करने का दाता का इरादा हो या न हो। 80G के अंतर्गत कर-छूट का प्रमाणपत्र केवल धन भेजने वाले को पैन नंबर की उपलब्धता के आधार पर ही जारी किया जाएगा।

संचार परिसंपत्तियाँ

नए रोटरी वर्ष की शुरुआत के साथ, कृपया अपने *My Rotary* खाते में साइन इन या पंजीकरण करके और निम्नलिखित नए संशोधित दस्तावेज़ों को डाउनलोड करें।

- रोटेरियन अब नया पावरपॉइंट टेम्पलेट डाउनलोड कर सकते है। टेम्पलेट में अपने स्वयं के लेखन, नक्शों, चित्रों एवं क्लब लोगो के साथ प्रस्तुति स्लाइडों को अनुकूलित करने के चरणबद्ध निर्देश शामिल है। टेम्पलेट में रोटरी संसाधनों के लिंक भी मौजूद है, जैसे आधिकारिक लोगो, तस्वीरें, वीडियो और ब्रांड दिशानिर्देश।

  नया टेम्प्लेट ब्रांड सेंटर पर मौजूद पिछले सभी पावरपॉइंट संस्करणों, जिसमें रोटरी फाउंडेशन पावरपॉइंट टेम्प्लेट भी शामिल है, को प्रतिस्थापित करता है, और रोटेरियनों को सभी क्लब प्रस्तुतियों के लिए इस नवीन रूप से डिज़ाइन किए गए पावरपॉइंट का उपयोग करना चाहिए।
- आवाज और दृश्य पहचान के नए दिशानिर्देश डाउनलोड करें। सदस्य ब्रांड सेंटर पर जाकर इसे देख सकते है। दस्तावेज़ आपको रोटरी के ब्रांड को बनाने में मदद करने के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करता है।

  रोटरी के लोगो और आवाज के उपयोग पर मार्गदर्शन प्रदान करने के अलावा, इसे निम्न बातों को शामिल करने के लिए भी अपडेट किया गया है: कार्यवाही करने वाले व्यक्तियों के प्रसंग, नया परिकल्पना कथन, मार्क ऑफ एक्सलन्स, मास्टरब्रांड सिग्नेचर और सिम्प्लफाइड रोटरी मास्टरब्रांड सिग्नेचर का उपयोग करने के दिशानिर्देश। ■

धारवाड़ के एक स्कूल के लिए पुनर्निर्मित स्वच्छता सुविधाएं

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब धारवाड़ सेंट्रल, रो ई मंडल 3182, ने शौचालयों का नवीनीकरण किया और धारवाड़ के एक सरकारी स्कूल में हाथों की धुलाई का एक स्टेशन स्थापित किया।

जब PDG गणेश भट को स्कूल में एक कार्यक्रम की अध्यक्षता करने के लिए आमंत्रित किया गया, तो संयोगवश ''वहाँ के शौचालयों के किए गए एक दौरे ने मुझे परेशान कर दिया। जब मैंने उनके खराब रखरखाव के बारे में टिप्पणी की, तो उनमें से एक शिक्षक ने निर्लिप्त भाव से मुझसे कहा कि विद्यार्थी स्कूल से सटे बड़े खाली भूखंड पर खुद को हल्का कर लेंगे।'' इस बात से परेशान होकर, WinS राष्ट्रीय पहचान समिति के एक सदस्य भट ने स्कूल में इस सुविधा को दोबारा सुचारू रूप देने का फैसला किया और रोटरी क्लब धारवाड़ सेंट्रल ने स्वेच्छा से इस काम को करने का फैसला किया।

स्कूल में नए हैंड वाश स्टेशन का उपयोग करते छात्र। पीडीजी गणेश भट भी चित्र में शामिल है।

लॉकडाउन हटने के बाद स्कूल आने वाले बच्चे दंग रह जाएंगे। रोटेरियन नागराज तयननवर की वित्तीय सहायता से क्लब ने शौचालयों का जीर्णोद्धार किया और निरंतर पानी की आपूर्ति सुनिश्चित की। परिसर में हाथों की धुलाई का एक स्टेशन भी स्थापित किया गया है। ''हमनें स्कूल प्रबंधन को इन संरचनाओं की उचित देखभाल करने के निर्देश दिए है और उन्हें यह भी बताया कि हम कभी भी अचानक निरीक्षण करने आ जाएंगे,'' क्लब के अध्यक्ष आनंद नायक ने कहा। ■

Membership Summary

(As on June 1, 2021)

RI Districts	2981	2982	3000	3011	3012	3020	3030	3040	3053	3054	3060	3070	3080	3090	3100	3110	3120	3131	3132	3141	3142
RCC	225	66	213	36	59	350	359	183	115	536	145	58	113	123	146	105	55	126	165	98	75
Interact Clubs	40	97	259	112	72	166	225	78	44	165	65	23	155	9	18	7	23	217	120	171	133
Rotaract Clubs	28	44	86	65	57	23	112	39	28	99	61	34	107	25	8	8	54	94	25	125	73
Women Rotarians (%)	7.67	6.84	9.54	27.11	24.94	6.69	14.7	12.76	16.72	19.67	14.72	16.64	9.25	5.68	8.46	8.63	15.41	22.08	9.93	25.93	21.82
No of Rotarians	5,505	3,319	5,294	4,400	3,785	4,452	5,191	2,422	2,775	7,350	5,056	3,438	3,460	2,289	2,280	3,650	3,594	5,253	3,485	5,919	3,575
Rotary Clubs	127	73	131	112	115	74	97	95	64	166	108	119	86	86	101	136	86	138	88	111	95

Rotary at a glance

Rotary clubs	: 36,932	Rotary members	: 1,197,984
Rotaract clubs	: 10,214	Rotaract members	: 220,703
Interact clubs	: 16,163	Interact members	: 371,749
RCCs	: 11,682		*As on 18 June 2021*

3150	118	129	71	13.7	3,780	95
3160	82	6	10	6.76	2,529	80
3170	171	233	81	14.09	6,117	138
3181	115	193	30	9.35	3,485	84
3182	104	123	42	8.9	3,237	84
3190	66	176	138	17.76	6,418	154
3201	54	85	87	9.22	5,954	151
3202	48	254	87	7.01	6,177	145
3211	132	24	4	7.97	4,793	147
3212	153	202	74	11	4,977	128
3231	419	81	28	10.21	3,593	101
3232	95	207	101	17.65	6,272	144
3240	208	402	51	15.06	3,341	97
3250	184	69	57	19.46	3,884	103
3261	43	23	14	17.75	2,873	77
3262	79	47	59	13.24	3,904	113
3291	632	90	127	21.81	4,076	167
3220	74	129	84	16.16	2,216	74
3271	24	131	88	17.77	1,880	128
3272	47	18	44	17.89	2,085	170
3281	205	63	257	17.69	6,398	251
3282	46	45	190	10.45	3,885	164
3292	125	125	159	16.59	5,860	147
India Total	6,054	4,543	2,256		161,902	4,216
S Asia Total	6,575	5,054	3,078		184,226	5,150

Source: RI South Asia Office

अपने घर को ऊर्जा-कुशल बनायें

प्रीति मेहरा

ऊर्जा-कुशलता सिर्फ एक सूत्रवाक्य नहीं है, यह काफी हद तक साध्य है।

अन्य बातों के अलावा, एक नया सहस्राब्दी घर ऊर्जा-कुशल होना चाहिए। यह एक अलिखित कोड है और इसमें सभी निर्माण, नए और पुराने शामिल हैं। जैसा कि कार्बन पदचिह्नों को कम करना प्रत्येक पर्यावरण प्रेमी नागरिक का लक्ष्य है, परोपकार, जैसा कि कहा जाता है, सबसे पहले अपने घर से शुरू होता है।

एक आरंभ के लिए, हमारे आवासों को ऊर्जा-कुशल बनाने के लिए, हमें अपने घर को अपग्रेड करने की ज़रुरत है। हालांकि पहला कदम तापदीप्त बल्बों को एलईडी बल्बों के साथ बदलना है, जैसा कि पिछले कॉलम में कवर किया गया था, अब अगला कदम रोजमर्रा के उपकरणों की जांच करना है। यदि उनमें से कुछ बदलने वाले बनते हैं, तो नए उपकरणों की खरीदारी से पहले कुछ होमवर्क करना सबसे अच्छा होगा।

पिछले एक दशक में, भारत में ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (BEE) ने विद्युत उपकरणों के लिए ऊर्जा-कुशल मानकों को विकसित करने और उन्हें लेबल करने में बहुत प्रयास किया है, ताकि उपभोक्ताओं को जानकार तरीके से अपनी पसंद निर्धारित करने में मदद मिल सके। इससे उत्पादों की लागत बचत क्षमता को बढ़ाने और हर महीने आपके ऊर्जा बिल को कम करने में मदद मिली है। यह घर के मोर्चे पर आपके हरित अनुपात को भी बढ़ाता है।

BEE को धन्यवाद, कि जिसके कारण सभी गुणवत्ता पूर्ण विद्युत उपकरण और सामग्री ऊर्जा प्रदर्शन लेबल दिखाते हैं और उनके लिए न्यूनतम मानक निर्धारित किए गए हैं। जितने अधिक सितारे, उतनी बेहतर ऊर्जा-कुशलता। स्टार रेटेड उपकरणों की सूची में वे उपकरण शामिल हैं, जिन्हें लोगों को शहरी-जीवन के लिए आवश्यक माना जाता है-जैसे कि एयर कंडीशनर, वॉशिंग मशीन, रेफ्रिजरेटर, कंप्यूटर, माइक्रोवेव, सोलर वॉटर हीटर, एलपीजी स्टोव, सीलिंग फैन और डीप फ्रीजर। बड़े कार्यों के लिए, इएए ने इंडक्शन मोटर्स, पंप सेट, डीजी सेट और चिलर को भी दूसरों के साथ लेबल किया है।

विशेषज्ञों के अनुसार, आपके द्वारा सही उपकरणों को चुनने के अलावा, इससे भी फर्क पड़ता है कि आप उनका उपयोग कैसे करते हैं। उदाहरण के लिए, कई इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को यदि 'स्टैंडबाय' या 'स्लीप मोड' पर छोड़ दिया जाए, तो उनकी घड़ियों, टाइमर और रिमोट को काम करने के लिए बिजली की आवश्कता होती है। यह निम्न-स्तरीय उपयोग आपके बिजली के बिल का 5 से 10 प्रतिशत तक हो सकता है। यह भी सिफ़ारिश की जाती है कि अगर आप डेस्कटॉप कंप्यूटर को बदलना चाहते हैं, तो लैपटॉप के लिए जाना बेहतर होगा क्योंकि यह लगभग 80 प्रतिशत कम बिजली खर्च करता है। हालांकि जब आप इसे खरीदते हैं तो लैपटॉप अधिक महंगा पड़ता है, परंतु यह लंबे समय तक हरित क्रांति देता है।

जिस तरह से आप खाना पकाते हैं, उससे भी भारी मात्रा में ऊर्जा बचाई जा सकती है। उदाहरण के लिए, माइक्रोवेव ओवन पारंपरिक ओवन की तुलना में 80 प्रतिशत कम ऊर्जा का उपभोग करते हैं, क्योंकि पारंपरिक ओवन को पहले-से-गर्म करना पड़ता है। इसलिए, यदि आप केवल गर्म कर रहे हैं या अंतिम मिनट के लिए ताज़ा कर रहे हैं, तो माइक्रोवेव का उपयोग एक बेहतर विकल्प हो सकता है। इसी तरह, अच्छे रसोइए समय और ऊर्जा के बचत की कसम खाते हैं, जब खाना प्रेशर तकनीक से बनाया जाता है। उनका यह भी कहना है कि अगर आप भगोने और कढाई पर ढक्कन लगाते हैं तो खाना तेजी से पकता है, जिससे आप जो भी कुकिंग मीडियम का इस्तेमाल कर रहे हैं, उसका खर्च कम हो जाता है।

उसी तरह, कपड़े धोने के तरीके में बदलाव करने से बिजली का बिल कम करने में मदद मिल सकती है। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, वॉशिंग मशीन का उपयोग करते समय, कपड़े के पूर्ण भार की प्रतीक्षा करें और वॉशर पर मध्यम सेटिंग का उपयोग करने से बचें। दूसरे, अगर कपड़े बहुत गंदे नहीं हैं, तो पानी के लिए उच्च तापमान सेटिंग्स से बचें। तीसरे, यदि आप कपड़े धोने का कार्यक्रम धूपवाले दिन रखते हैं, तो आप सुखाने के लिए ड्रायर के इस्तेमाल से बच सकते हैं।

हालांकि, ऊर्जा-कुशलता केवल स्टार-रेटेड उत्पादों, ऊर्जा बचत उपकरणों का उपयोग करके और प्रासंगिक युक्तियों का पालन करके प्राप्त नहीं की जाती। हरित-क्रांति एक समग्र अवधारणा है जो अन्य क्षेत्रों को भी शामिल करती है, जैसे-गृह निर्माण उनमें से एक है, और महत्वपूर्ण रूप से, घरेलू खपत के लिए नवीकरणीय ऊर्जा का परिचायक है।

यदि आप अपने घर का नवीनीकरण कर रहे हैं, या एक नया निर्माण कर रहे हैं, तो ध्यान में रखने के लिए कई महत्वपूर्ण पहलू हैं, विशेष रूप से प्रकाश और हवा के मद्देनज़र। यदि आप खिड़कियों या दरवाजों को बदल रहे हैं, तो सुनिश्चित करें कि आप उन्हीं को चुनें जो पर्यावरण के अनुकूल सामग्री से बने हैं, जो आपको सही इन्सुलेशन दें, हवा की आवाजाही और जितना संभव हो उतना प्राकृतिक प्रकाश घर में लाने में मदद करें। ऐसा करना खुद कृत्रिम ऊर्जा के उपयोग को कम करेगा।

यदि आप अपने घर की छतों को फिर से बना रहे हैं, या इसमें एक और मंजिल जोड़ रहे हैं, जैसा कि अक्सर एक शहर में अकेले-खड़े घरों के साथ होता है, तो सुनिश्चित करें कि छत की संरचना सौर पैनलों (अगले महीने के मेरे कॉलम का विषय) का समर्थन करने के लिए डिज़ाइन की गई हो। नवीकरणीय-ऊर्जा में निवेश करना आने वाले सालो-साल तक के लिए भुगतान कर सकता है। कहने की जरूरत नहीं, कि एक सौर विशेषज्ञ को बुलाना बुद्धिमानी होगी जो इन्वर्टर और बैटरी के लिए एक स्थान की पहचान करने में मदद करेगा और आपको बताएगा कि सौर पैनलों से कनेक्शन जोड़ने के लिए विद्युत नालियों को कैसे सही ढंग से लगाया जाए।

उन शहरों में जो वर्ष के अधिकांश समय के लिए गर्म होते हैं, सबसे अच्छी तरह की छत और फर्श पर विचार करके लगाने से घर के अंदर के तापमान को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। छतों को ठंडा रखने के लिए, यह सिफ़ारिश की जाती है कि आप परावर्तक सामग्री का उपयोग करें जो सूरज की रोशनी को कम से कम सोखे। घर के अंदर फर्श के ऊपर, गलीचा बिछाने से बचना चाहिए, क्योंकि यह गर्मी को और बढ़ाता है। इसके बजाय, उस फर्श के लिए जाएं जो टाइलों से बना हो या प्राकृतिक सामग्री से बना हो, जिससे तापमान कम होने में मदद मिल सके। इन सभी तत्वों को एक साथ लाकर ही हम एक घर को अधिक ऊर्जा-कुशल बना सकते हैं।

छतों को ठंडा रखने के लिए, यह सिफ़ारिश की जाती है कि आप परावर्तक सामग्री का उपयोग करें जो सूरज की रोशनी को कम से कम सोखे।

इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को यदि 'स्टैंडबाय' या 'स्लीप मोड' पर छोड़ दिया जाए, तो उनकी घड़ियों, टाइमर और रिमोट को काम करने के लिए बिजली की आवश्कता होती है। यह निम्न-स्तरीय उपयोग आपके बिजली के बिल का 5 से 10 प्रतिशत तक हो सकता है।

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

Wordsworld

Surrounded by sounds

Sandhya Rao

Languages tell us who we are and where we may have come from.

'Let's start at the very beginning, a very good place to start…' says Maria in *The Sound of Music* as she strums her guitar in the gorgeous outdoors of Austria in an attempt to teach her seven Von Trapp wards how to sing. In the case of Peggy Mohan's book, *Wanderers, Kings, Merchants: The Story of India Through its Languages*, let's start at the very end, the last chapter, 'Chapter 8: Confluence'.

No, this is not a gimmick, just a practical suggestion that makes the motive clear when put in context. But before that, a small digression: I love the idea of languages, the sound of different languages, and am not shy of trying my tongue at them. I believe that we Indians possess naturally twisted tongues that empower us to be multilingual with varying degrees of fluency. Although this may be a generalisation, we can claim that a 'typical' Indian tends towards unselfconsciousness, which makes it easier for her or him to take informal shots at unfamiliar languages. It works differently in a formal set-up such as school or workplace, but on the informal platform, there's little to stop Indians from talking.

Okay, so why the last chapter first? Simply because it more or less plots the journey undertaken in the rest of the book and makes it easier to then follow the detailed route and take in some of the sights. *Wanderers, Kings, Merchants* (WKM) is not an easy read, and is perhaps not even for everybody. Despite my interest in the subject, for instance, it was a bit of a challenge. But once you get past (or skip!) the technical bits, the rest of what it says is bound to interest everybody. After all, who doesn't want to know who they really are, where they came from, and which way they may be headed? At once philosophical and scholarly, the argument presented in the book is persuasive particularly because it is placed in a highly relevant historical context.

For instance, over the years there's been so much discussion around Sanskrit. Old language, oldest language, root language, complete language, elitist language, caste-ist language, mother language, dead language, time-to-revive-it language… It probably has as many labels as it has adherents. There's even a village in India where the language of communication is Sanskrit; this is Mattur (aka Mathur) in Karnataka. (I often think that living in Mattur would seem to a dunderhead like me as if I were a permanent actor in a perpetually running Kalidasa play!) The decision to adopt Sanskrit could not have arisen spontaneously; it must have been a deliberate choice.

Sounds make a language and Sanskrit is a prime example of this, with all its soft, hard, sibilant, aspirated, dental, alveolar and other syllables. According to one theory, human beings make around 500 different vowel and consonant sounds with the mouth. And these sounds lead to thousands of languages, each distinct, some existing only in oral form, and some with few or no speakers remaining. The internet throws up lists of languages that include those that are extinct and vulnerable.

As Peggy Mohan points out, languages don't die, it's the people speaking them who do. More importantly, the languages and their variants tell us about who carried

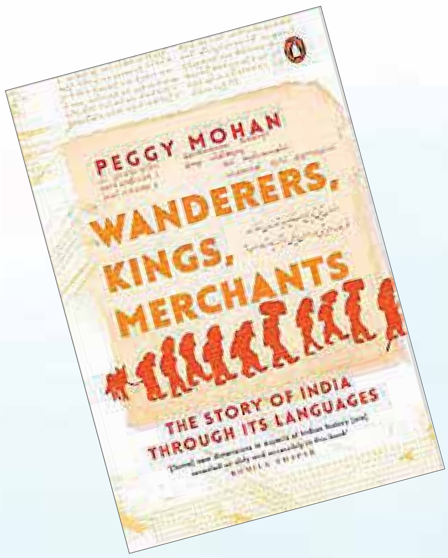

these languages and dispersed them, who absorbed them, who rejected them and whom they met and mingled with to create other languages, when and where and how. Wrapped up in all this is the moment — moments strung together in a seamless passage of time, leaving historical records in their wake. This is the path WKM explores, offering fresh and, for me, curious perspectives. For instance, it theorises that retroflexions — the hard and doubled-up tt/thh and dd/ddh for example — were actually Dravidian sounds that found their way into the Rig Veda. It points to the phenomenon that when invasions or conquests or even trade took place, the groups that came into new territories with the sounds of their own languages were largely male-dominated. At a time when campaigns and journeys tended to be long and often undertaken on foot, it was common for the men to settle with local women. The women gave their progeny their own, local languages and slowly, over time, these were the languages that began to gain currency. Where the settlers or conquerors were dominating, their language, too, dominated. English is a classic example of this.

The hegemony of the English language in India is a political work that has made great progress: most readers will find the second last chapter, 'Indian English as an Invasive Species' very illuminating. The author makes this telling observation about language as political strategy: 'Independent India chose to keep and extend its large sector of elite private schools, which were English medium, instead of going the socialist route like most other countries — including the USA — which had neighbourhood schools, where rich and poor children sat in mixed classes studying at government expense in the local language.' Over 70 years

> Sounds make a language and Sanskrit is a prime example of this, with all its soft, hard, sibilant, aspirated, dental, alveolar and other syllables.

after independence, we continue to simultaneously politicise and struggle over our approach to education.

There are two words used in the book that are important in this context: 'bilingualism' and 'diglossia'. Peggy Mohan explains bilingualism as being 'about two languages you know having essentially the same functions, such that it is easy to translate from one to the other.' The same stretches to as many languages as you know equally well. With diglossia, 'what you find is a child first learning one language and speaking it at home, and then later on, maybe at school, transiting to another language which is used for less basic things. The end result is not two separate languages that exist in parallel, but a single competence, where ground-level things are done in the first language and things to do with school, or the modern sector, in another.' In other words, the language used at home comes with a vocabulary that is different from the vocabulary of the language used at school, making translation mutually impossible. If the speaker was bilingual, on the other hand, s/he would have sufficient vocabulary and equal and/or the required facility in both languages; mutual translation would be possible.

'A language is viable,' Peggy Mohan writes, 'when it is capable of expressing the sort of things a child that age needs to express. This does ultimately involve words and grammar, but it is not an assemblage of structures like a child learning a second language in the classroom would pick up. These is something organic and native-like about it.' It took a while for this to sink in, but understanding this enables a better appreciation of the difficulties educationists and policy-makers face with regards to 'making India literate' or even ushering in social reforms. Chapter 7 brings the reader up close with the whole business of English in India: 'English has stayed because elite Indians wanted to preserve the old idea of a ruling class that lived far above in the stratosphere. And it continues to spread because the dream of independence and self-rule has inspired the poor, who see in this language the surest way to rise above sea level and gain their share of the sunlight.'

Continuing to read the chapters right to left, we get glimpses into the way languages evolved under Magadhan and Nagamese influence, the link between Turkic, Persian and Urdu/Hindi, the birth of Indo-Aryan languages, what happened with Malayalam, and the behind-the-scenes story of Sanskrit. We see what happens to 'pure' languages, if indeed they were pure at all, how they blend with each other, creole and pidgin, and a whole lot more. In the process, more importantly, we see what events influenced or triggered these changes.

Tamil is believed to be the oldest surviving language and one of its more challenging sounds is 'zh' as in 'Tamizh' or 'Kozhikode'. Some Tamil speakers themselves have it from their sound store and replaced it with 'easier-to-enunciate' equivalents. As a child, I remember being schooled by my father to say 'vazhappazham' hundreds of times in order get the 'zh' just right. And he wasn't even Tamil speaking! Try it. Or 'kozhakkattai'. See what you bite into!

The columnist is a children's writer and senior journalist.

Subscribe NOW!

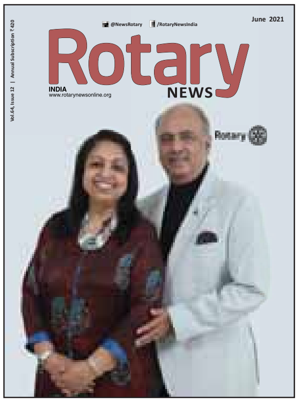

to Rotary News Print Version & e- Version

For the Rotary year 2021–2022

As concerned citizens of the world, those of you who are alarmed at the degradation of the environment and slaughter of trees, kindly opt for our e-Version.

Annual Subscription (India)

Print version	e-Version
₹420/-	₹360/-

Print version ☐ e- Version ☐

	English	Hindi	Tamil
No. of Copies			

For every new member the pro-rata is ₹35 a month.

Please attach the TYPED list of individual members with their complete address, PIN code, Mobile number and e-mail ID. Intimate language preference (English/Hindi/Tamil) against each member's name.

Rotary Club of .... RI District ....

Name of the President/Secretary ....

Address ....

....

....

City .... State .... PIN ☐☐☐☐☐☐

STD Code .... Phone: Off. .... Res. ....

Mobile ....E-mail ....

Cheque/DD No. .... Dated .... for Rs. ....

Drawn on ....

in favour of "**ROTARY NEWS TRUST**" is enclosed.

Date: President/Secretary

Payments can be made online at HDFC Bank, Montieth Road, Egmore, Chennai – Rotary News Trust, SB A/c No 50100213133460; IFSC HDFC0003820. Email us the UTR Number, Club Name, President/Secretary's name, Amount and Date of Transfer.

Mail this form to:
Rotary News Trust, Dugar Towers, 3rd Floor, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008.
Tamil Nadu, India. Ph: 044 4214 5666, e-mail: rotarynews@rosaonline.org

Subscription norms

1. Subscription is for the Rotary year (July to June).
2. It is mandatory for every Rotarian to subscribe to a Rotary magazine.
3. The annual subscription for print version is ₹420 and e-version is ₹360 per member.
4. Subscription for the full year must be sent in July, in the prescribed form.
5. Those joining after July can pay for the remaining Rotary year at ₹35 an issue for print version and ₹30 for e-version.
6. Subscription account of the club with *Rotary News* is a running account and does not cease at the end of June every year.
7. Names of all members, with their complete postal address with **PIN CODE, mobile number and e-mail ID** must be sent along with the form and DD/ cheques payable at par.
8. Language preference **(English, Hindi or Tamil)** should be stated alongside member's name.
9. Please send the updated mailing address and contact details of your members **directly** to *Rotary News*.
10. Members to ensure their names are included in the subscribers list their club sends us. If you've paid, but your name is not sent to us by your club, you will not get a copy of the magazine.
11. Clubs must **immediately** update us about any modification in membership status to enable us to deliver the magazine to the new members.
12. Clubs are liable to pay for the number of magazines we despatch according to the list available with the Rotary News Trust.
13. Unpaid dues of the club will be shown as outstanding against the club. Any payment received subsequently will be adjusted against earlier dues.
14. Clubs with subscription arrears will be notified to RI and are liable for suspension.
15. We regularly verify the subscribers list that clubs share with us, with that of RI's data to detect missing subscribers.

गुवाहाटी में एक जयपुर अंग शिविर लोगों की चलने में मदद करता है

किरण ज़ेहरा

फोन पर टूटी-फूटी अंग्रेजी में दूर से एक आवाज सुनाई देती है: मैं सत सिंह तमोंग, 'एक पैर वाला आदमी', जैसा कि यहाँ के बच्चे मुझे बुलाते है। दो साल पहले, असम के काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में एक वन रक्षक रह चुके तमोंग पर एक गैंडे ने हमला कर दिया था। उनके सिर, पैर और छाती पर गंभीर रूप से चोटें आई थी और उन्होंने एक पैर खो दिया था। कई दिनों के उपचार के बाद जब उन्हें होश आया, तो उन्होंने महसूस किया कि ''एक अंग खोने का मतलब यह नहीं है कि आपने अपना जीवन खो दिया है। यह सही बात है कि मैं पहले जैसा नहीं रह सकता, लेकिन मैं एक नए और अलग अनुभव के लिए तैयार था। चुनौतीपूर्ण, परंतु उत्साहपूर्ण।''

रोटरी क्लब गुवाहाटी मेट्रो, रो ई मंडल 3240, और श्री भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति, दिसपुर द्वारा, संयुक्त रूप से आयोजित जयपुर फुट आर्टफिशल लिम्ब्स परियोजना में, 15 विकलांग व्यक्तियों को कृत्रिम अंग फिट किए गए; तमोंग उनमें से एक थे। जहाँ विकलांग सहायता समिति ने लाभार्थियों की पहचान करने में क्लब की मदद की, वहीं चार क्लब सदस्यों - अरुण शर्मा, शेखर अग्रवाल, आर पी सुरेखा और क्लब अध्यक्ष उत्तम कोठारी - ने ₹60,000 की लागत वाले जयपुर अंगों को प्रायोजित किया।

''यह बैसाखी से बेहतर है। लेकिन मुझे अभी भी इनकी आदत होना बाकि है,'' तमोंग कहते है। गुवाहाटी से 121 किमी दूर नगांव की एक अन्य 54 वर्षीय लाभार्थी मीरा कहती है, ''इससे मुझे अपने दैनिक काम और घर के काम, नहाने और खुद कपड़े पहनने जैसी गतिविधियां करने में मदद मिलेगी।''

अंग फिटमेंट प्रभारी और समिति के तकनीशियन, डॉ सुशील सुराणा, जो स्वयं एक विकलांग है, कहते है, ''विकलांगों को अपने अंग की हानि को स्वीकार करने में समय लग सकता है। शारीरिक पुनर्वास और कृत्रिम अंगों के अलावा एक सकारात्मक मानसिकता के साथ, वे अपने जीवन की गुणवत्ता में जबरदस्त सुधार ला सकते है। बेशक, यह महत्वपूर्ण है कि परिवर्तन को स्वीकार करने में संघर्ष करते

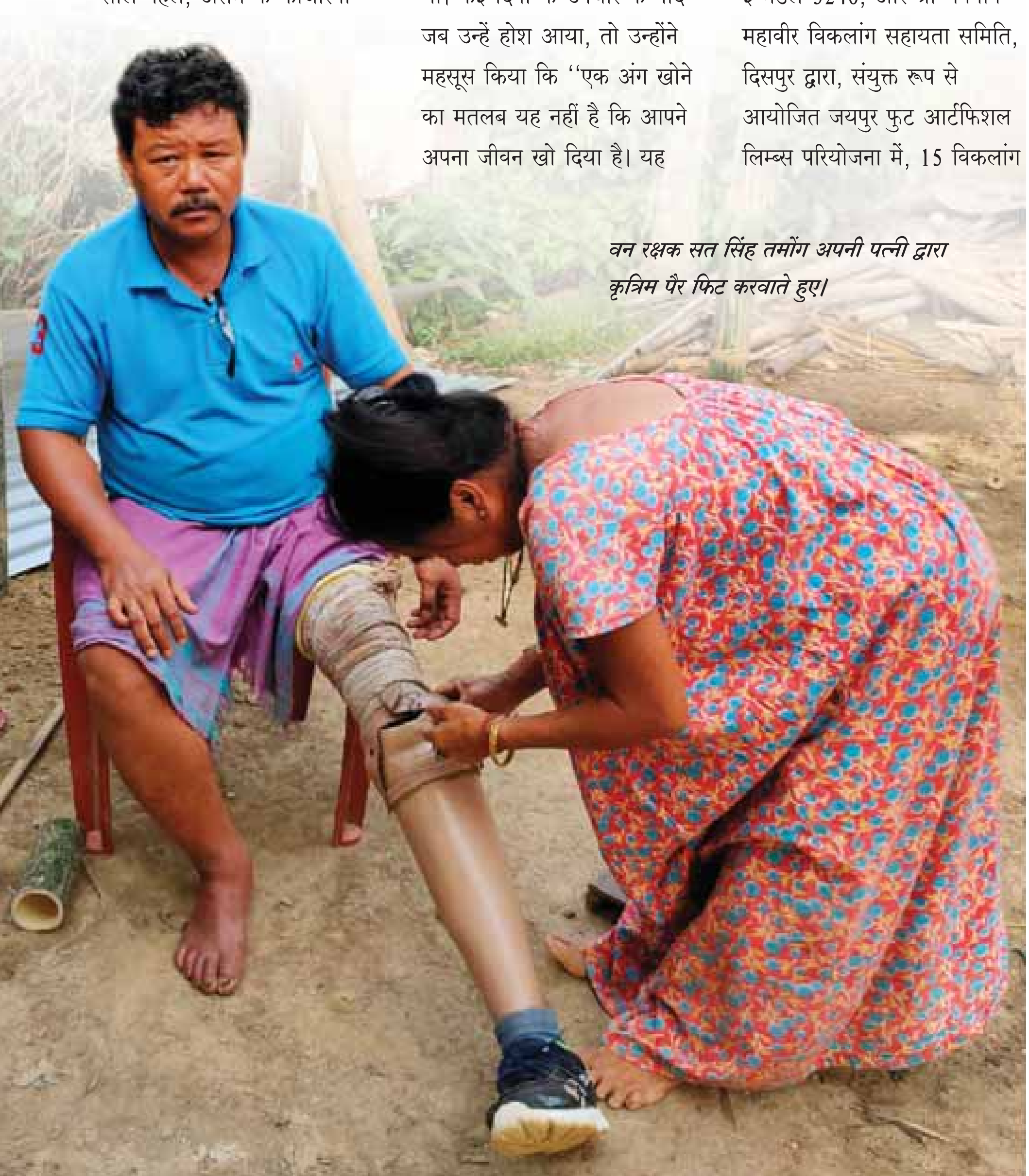

वन रक्षक सत सिंह तमोंग अपनी पत्नी द्वारा कृत्रिम पैर फिट करवाते हुए।

समय परिवार और मित्रजन उनका समर्थन करें।''

परियोजना का उद्घाटन एवं एक लाभार्थी के लिए अंगों को फिट करने वाले DG सुभाषीश चटर्जी के लिए, ''उनके चेहरे पर आई मुस्कान से बढ़कर कुछ नहीं है। हमारे साथ तस्वीरें खिंचवाने के बजाय, एक लाभार्थी जिसके दोनों अंग खो गए थे, अपने कृत्रिम पैर फिट करवाकर खड़ा हो गया और हमारी तस्वीरें लेने लगा। मैं उसका उत्साह देखकर दंग रह गया।''

26 सदस्यों की एक संख्या के साथ, जो सभी पॉल हैरिस फैलो है, यह क्लब स्थानीय समुदाय का समर्थन करने के लिए कई तरह की परियोजनाएं कर रहा है और इस चुनौतीपूर्ण समय में TRF में योगदान भी दे रहा है। चटर्जी कहते है, उन्हें मंडल के कुछ अन्य क्लबों के साथ साझेदारी करके बड़ी सामुदायिक परियोजनाएं करना चाहिए ताकि वे अधिक से अधिक लाभार्थियों तक पहुंच सकें।''

दूसरी पीढ़ी के एक रोटेरियन कोठारी कहते है कि ''कोविड की बाधाओं और चुनौतियों के बावजूद हम कोविड प्रोटोकॉल का पालन करते हुए मानवीय परियोजनाओं को आगे बढ़ाने के तरीकों की खोज रहे है।'' उनके लिए एक आठ साल के अपंग बच्चे को जयपुर अंग फिट करके उसके जीवन को बदलना ''सबसे संतोषजनक'' क्षण था। वह कहते है, क्लब शारीरिक रूप से अक्षम लोगों को सशक्त बनाने के लिए हर साल कृत्रिम अंग फिटमेंट शिविर आयोजित करना जारी रखेगा। ■

महावीर विकलांग सहायता समिति के अंग फिटमेंट प्रभारी, डॉ सुशील सुराणा लाभार्थियों के साथ।

रो ई मंडल 3132 ने इंटरेक्टरों के लिए राष्ट्रीय परिचर्चा आयोजित किया

टीम रोटरी न्यूज़

रो ई मंडल 3132 की जिला इंटरेक्ट अध्यक्षा, डॉ बिंदू शिरसाथ और उनकी टीम द्वारा आयोजित एक दिवसीय परिचर्चा में 15 रो ई जिलों के इंटरेक्ट अध्यक्षों ने नोट्स साझा किए और अपनी परियोजनाओं को प्रदर्शित किया। रो ई निदेशक नियुक्त, महेश कोटबागी ने रो ई की विविधता, समानता और समावेशिता (डी ई आई) सिद्धांतों पर बात की और इस कार्यक्रम को सफल बनाने में मंडल इंटरेक्ट अध्यक्षों (डी आ ई सी) के प्रयासों की सराहना की।

पीडीजी रवि वाडलमानी ने इंटरेक्ट क्लबों को मजबूत करने के अभिनव तरीकों पर बात की और सभी डी आ ई सी से आग्रह किया कि वे इसी तरह के कार्यक्रमों के आयोजन के लिए अपने प्रयास जारी रखें। रो ई मंडल 3160 के डीजी चिनप्पा रेड्डी, रो ई मंडल 3132 के डीजी हरीश मोटवानी और डॉ बिंदू ने इस अवसर पर चर्चा की। रो ई मंडल 3030 के डीआईसी वीरेंद्र पर्रिकर ने इंटरेक्टरों की विभिन्न परियोजनाओं पर एक प्रस्तुति दी।

संयोजक बिंदू ने रो ई अध्यक्ष होल्गर नैक से 'राष्ट्रीय स्तर पर इंटरेक्टरों के लिए पहली परिचर्चा' आयोजित करने के लिए बधाई पत्र प्राप्त किया। डी आ ई सी की तारीफ करते हुए उन्होंने कहा, रोटरी का भविष्य आप जैसे नेताओं पर निर्भर करता है। हम चाहते हैं कि आप रोटरी के नए अवसरों की कल्पना करने के लिए अपने आपको ताकतवर महसूस करें। युवा, ऊर्जावान लोगों के साथ सार्थक सहयोग-यही एकमात्र माध्यम है, जिसके द्वारा हम इस तेजी से बदलते समय में अपने आपको ढाल पाएंगे।

इंटरेक्ट क्लब 'प्रियदर्शनी बड्स' के इंटरेक्टर स्तुति साल्वी ने महामारी की स्थिति से दुनिया को स्वस्थ करने के लिए एक विशेष गीत गाया। ■

अवरोधों को अनुकूल बनाएं और सांस लें!

भरत और शालन सवुर

अब तक हम फिर-फिर कर एकजुट होते रहें हैं और हम ऐसा करना निरंतर जारी रखेंगे। जैसा कि एकहार्ट टॉले कहते हैं, 'जीवन अवरोधों के लिए बनाया गया है' तब एक बात निश्चित है कि हमें विचार करने, निर्माण करने और अवरोधों से उबरने के लिए बनाया गया है। हम पहले ही विजयी हो चुके हैं, क्या पहले ही हमने विजय प्राप्त नहीं कर ली? टीके के प्रति हमारी प्रतिरक्षा को मजबूत करने के लिए घर पर से काम करने से लेकर बाहर काम करने तक, वर्चुअल कॉन्फ्रेंस और पार्टियों में रहने तक एवं अपने दैनिक कार्यों को ऑनलाइन करने तक, हमने अपनी नई पद्धतियों की खोजों से एक विशाल क्षेत्र को कवर किया है।

अब हमारे सामने यह सवाल उठता है कि हम कैसे आगे बढ़ें? इसका उत्तर बहुत सरल है, हमें अवरोधों को स्वीकार करना होगा और सतत इसके अनुकूल बनना होगा। एक कहानी है जो इस तरह से है - एक गांव है जिसका नाम भूमि है और इस गॉव ने कभी समुद्र नहीं देखा था अर्थात इस गांव को समुद्र का कोई अनुभव नहीं था। जब इकालॉजी में परिवर्तन आया, समुद्र का विस्तार हुआ और समुद्र का आगमन भूमि पर होने लगा, समुद्र ने भूमि को घेर लिया। गॉव वाले दहशत में आ गए, उनमें हाहाकार मच गया, 'हम डूब जाएंगे' - वह चिल्लाए। परन्तु केवल शम्स नाम का एक आदमी इस स्थिति में शांतचित्त बना रहा। वह चुपचाप किनारे पर चला गया। फिर उसने पीछे मुड़कर देखा और चिंतित ग्रामीणों से कहा - 'मैं समुद्र में हूँ।' यह बहुत आरामदायक है। आप अपने डर को छोड़कर मेरे साथ इस समुद्र में क्यों नहीं उतर जाते? और सभी ग्रामीणों ऐसा ही किया।

सांस जो मजबूत बनाती है। इन ग्रामीणों के पास एक जन्मजात कौशल था जो हम सभी के पास है - स्वीकार करने अर्थात अपने को अनुकूल बना लेने की क्षमता। अनुकूल बनाने में हम तीन प्रक्रियाओं से गुजरते हैं: पहले चरण में, शरीर एक तनावपूर्ण उत्तेजना के साथ प्रतिक्रिया करता है। यह एड्रेलालिन और अन्य तनाव हार्मोन को स्रावित करता है। ये हार्मोन हमारी हृदय गति, सांस और ब्लड प्रेशर को तेज करते हैं। इससे पहले कि हम दूसरे चरण में जाएं, आइए थोड़ा सा यहां रूकें।

हम अपनी सांस को नियंत्रित करके अपने शरीर की प्रतिक्रियाओं पर नियंत्रण स्थापित कर सकते हैं। आप जहां पर भी हैं बैठ जाएं, अब 8 की गिनती तक होशपूर्वक (सजग रहते हुए) अपनी नाक से सांस अंदर लें, इस प्रक्रिया के दौरान सांस लेते समय आप अपने पेट को फूलने दें अर्थात सांस लेते समय आप का पेट ऊपर जाए। फिर 8 तक की गिनती तक आप अपने मुंह के द्वारा सासं बाहर करें, उस समय आप का पेट नीचे आए। इसे आराम से करें, धीरे-धीरे और सरलतापूर्वक, 20 से 30 बार करें जब तक कि आपको शांति महसूस नहीं हो जाती। इस सरल से अभ्यास को करने के द्वारा आप भय और चिंता से मुक्ति पाते हैं।

आमतौर पर दूसरे चरण में तीव्र भय गहरा हो सकता है या यह आपको सुस्त कर सकता है और यदि आपका व्यक्तिव भावुक प्रकार का है या यदि आप अवसादग्रस्त हैं तो आपको यह भय गहरी चिंता में ले जा सकता है। 8-8 सांस प्रणाली आपकी प्रतिक्रिया को संभालने में आपकी मदद करती है और वहां होता है एक सुखद अहसास: हम निराश नहीं हो सकते!

और यह हमें तीसरे चरण की ओर ले जाता है जो कि एक 'लेट-डाउनर' है - निरंतर उच्च ऊर्जा की अवस्था/दशा, जो पुरानी थकावट की ओर हमें ले जाता है और फिर बिमारी लाता है। हालॉकि, हमारी 8-8 सांस प्रक्रिया इसे फिर भी सुचारू बनाती हैं, संतुलित रखती है और सुंदर तरीके से प्रबंधित या नरम बनाती हैं। इसमें बहुत बुद्धिमता है। जब हम माहौल को नहीं बदल सकते तब हम अपनी सांस के माध्यम से माहौल के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को बदल सकते हैं। सुझाव: लाइट बंद करके सोते समय 8-8 सांस टेक्निक को करें। आप एक सुंदर, आरामदायक चित्त दशा की स्थिति में आ जाएंगे।

कोशिश करने और देखभाल करने का समय निकालें। थॉमस पेन ने आह भरते हुए कहा, 'ये ऐसा समय है जब मनुष्यों की आत्माओं की परीक्षा ली जाती है।' बेशक, वह एक अलग अवधारणा का उल्लेख कर रहे थे लेकिन यह भावना आज भी सच है। व्यक्तियों के लिए यहां पर एक रिमांइडर है जो चक्रिय रूप से गति करता है। यह कहता है, 'हम सभी को एक-दूसरे की जरूरत है।' शायद, शुरू में हमें मास्क पहनने, अपने हाथों को धोने और सोशल डिस्टेंसिंग रखने के लिए हमें मीडिया की तीखी नकारात्मकता की जरूरत थी। कुछ समय

ऐसा भी होता है जो आपकी आत्मा सुन्न कर सकता है।

समाचार चैनलों को कम से कम देखें अर्थात उन्हें देखना कम कर दें और अपने दिमाग को यह विश्वास करने के लिए सांस लेने दें कि चीजें ठीक चल रही हैं। अविश्वास हमारी आंतरिक समरस्वता एवं सामंजस्य का एक धीमा एवं अप्रिय व्यावधान है। जैसा कि थियोडॉर रूजवेल्ट कहा था कि 'जीवन का सामना करने का सबसे बुरा तरीका अवहेलना करना है।' न्यूज चैनल के कई वक्ता ऐसा करते हैं। दिलचस्प बात यह है कि मैंने पाया है कि अर्थशास्त्र में विशेषज्ञता रखने वाले चैनल स्थिति के प्रति बहुत अधिक सक्रिय और आशावादी हैं। उनके विश्लेषक सतर्क हैं और वे नपेतुले ढ़ंग से बोलते हैं, वे भविष्य की बाधाओं से परेशान नहीं होते - जब सभी कुछ अस्पष्ट होता है और कोई भविष्य नहीं दिखता - तब उस स्थिति में वह व्यावधानों को एक अवसर के रूप में देखते हैं, वह अगले 6 महीनों और उससे आगे की योजना बनाते हैं, वह सुख-दुख में एक समान चलते हैं, वह भविष्य को पूर्णता:उज्जवल देखते हैं, जहां कि दूसरे लोग इस तरह से नहीं देखते हैं।

रूचि लें, जुनूनी बनें। यह एक महत्वपूर्ण सूचक है - ऐसे काम करें जिन्हें करने के लिए 'पुराने सामान्य' में आपके पास समय नहीं था। आपको जो करना अच्छा लगता है, उसे करने के लिए एक या दो घंटे समय दें। जैसा कि हृदय रोग विशेषज्ञ कहते हैं, 'किसी चीज में रुचि लें, और दूसरों की आप में दिलचस्पी होगी।' इस तरह से हम अपने वर्तमान समय को हमसे आत्मीय रूप से संबंध बनाने की अनुमति देते हैं। रेनर एम रिल्के इसे खूबसूरती से अभिव्यक्त करते हैं, 'उन उत्तरों की तलाश न करें जो अभी आपको नहीं दिए जा सकते क्योंकि आप उन्हें जीने में समर्थ नहीं होंगे। मूलभूत बात यह है कि सभी कुछ जीना है।

प्रश्न को जीएं। शायद, तब किसी दिन बिना प्रश्न पर ध्यान दिए ही धीरे-धीरे आप उत्तर पर आ जाएंगे अर्थात आपको जीने से उत्तर मिल जाएगा।

सभी कुछ को अनुग्रह और उत्साह के भाव के साथ जीएं। ठहराव को भी जीएं। हो सकता है कि आपको कोई बड़ी योजनाएं टालनी भी पड़ें। यह सामान्य बात है। ठहराव को भी जीएं। यह आपको फिर से सोचने, विचार करने के लिए समय देगा, फिर से प्लान करें और अपने नजरिए को लचिला बनाएं। अपनी आंखों को उन कई रंगीन रास्तों के प्रति खुलने दें जिस पर आपका जीवन जा सकता है अर्थात अपने आप को विभिन्न आयामों में गति करने दें। कौन जाने कि कोरोना वायरस के आने से पहले कौन से राज आपसे छुपे हुए थे? जैसा कि समरसेट मौघम ने कहा है, 'जीवन का रहस्य तब तक व्यर्थ है जब तक कि आप इसे खुद नहीं खोज लेते।'

उत्साह को बढ़ाएं। मानसिक इम्यूनिटी और शक्ति समान रूप से महत्वपूर्ण है। हाल ही में मैंने जो तीन सबसे उत्साहपूर्ण शब्द सुने वह मेरे चचेर भाई प्रमोद के थे जो कोविड पॉजिटिव आने और उसके ऑक्सीजन का स्तर गिरने से सांस लेने में तकलीफ महसूस होने से अस्पताल में भर्ती हुआ था। 'मैं ठीक हो रहा हूँ!' उसने खुद ही हम सभी को पहले दिन मैसेज किया। यह आश्चर्यजनक है कि उसने कैसे अपने उत्साह को बढ़ाया। हमें इसी की आवश्यकता है - हमारी बीमारियों से ऊपर उठने की भावना, उनका सामना करने की भावना, क्योंकि यहीं से अनुकूल होने, अनुकूलनशीलता की भावना पैदा होती है। ऋषियों द्वारा सिखाया गया रहस्य है कि अपनी ऊर्जा अर्थात अपने आप को कभी भी कम नहीं आंकिए। जब मैंने नायास्वामी ज्योतिष के ये वचन सुने, 'हम शक्तिशाली ऊर्जा के समुद्र में रहते हैं!' तब मुझे अपने भीतर शक्ति की लहर का अहसास हुआ। यह सत्य है। हम में से प्रत्येक इससे प्रेरित है अर्थात हमें इसी वातावरण से ऊर्जामिलती है और हम ऊर्जा से भरे वातावरण में रहते हैं। इसी तरह से लाखों लोग जीवित हैं और रहते हैं और दुनिया 24 घंटे काम करती है। विश्वास, आस्था रखें कि सब कुछ काम कर रहा है। हम खुद को टीका लगवाएंगे, हम सब ठीक हो जाएंगे और स्वस्थ रहेंगे। जैसा कि योगानंद जी ने कहा था कि 'सभी चुनौतियां हमारी तैयारी की चुनौतियां हैं!' और परमात्मा की कृपा से हम इच्छुक हैं!' हम न केवल इच्छुक हैं बल्कि हम तैयार हैं और आगे बढ़ने के लिए गर्जन करते हुए!

लेखक फिटनेस फॉर लाइफ, *और* सिम्पली स्पिरिचुअल - यू *आर* नैचुरली डिवाइन *के लेखक है और फिटनेस फॉर लाइफ कार्यक्रम के शिक्षक है।*

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब चिन्नामनूर - RID 3000

क्लब ने एक अनाथालय और एक वृद्धाश्रम को कपड़े दान किए। एक विधवा को सिलाई मशीन दी गई और सभी रहवासियों को भोजन उपलब्ध कराया गया। इस परियोजना की लागत ₹70,000 थी।

रोटरी क्लब अंजर - RID 3054

स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से रैपिड एंटीजन जांच शिविर का आयोजन किया गया। 2,980 लोगों का परीक्षण किया गया और कोविड रोगियों को आयुर्वेदिक दवाइयाँ दी गईं। परियोजना की लागत ₹2 लाख थी।

रोटरी क्लब नासिक ग्रेपसिटी - RID 3030

क्लब ने ग्रीन रेवलूशन नामक एक गैर सरकारी संगठन के साथ मिलकर चुंचले शिवर नामक एक इलाके में 500 से अधिक पौधे लगाए। क्लब की अध्यक्ष कविता दगांवकर ने स्वयंसेवकों को पौधे सौंपे। इस कार्यक्रम का संचालन रोटेरियन आसिफ शेख ने किया।

रोटरी क्लब सूरत राउन्ड टाउन - RID 3060

पूर्व अध्यक्ष विमल जावेरी के सहयोग से एक अस्पताल को ऑक्सीजन सिलेंडर दान किया गया। क्लब के अध्यक्ष इस्माईल सहरवाला ने इस परियोजना का समन्वय किया।

रोटरी क्लब बुरहानपुर - RID 3040

एक मैमोग्राफी बस के माध्यम से महिलाओं के लिए चलित कैंसर जांच शिविर आयोजित करने हेतु सात क्लब एक साथ आए। मैमोग्राम और पैप स्मीयर परीक्षणों के माध्यम से कुल 460 रोगियों में स्तन और गर्भाशय के कैंसर की पहचान की गई।

रोटरी क्लब पालमपुर - RID 3070

एक पशु अस्पताल के साथ साझेदारी में, क्लब शहर में आवारा और पालतू कुत्तों को नि:शुल्क एंटी-रेबीज टीका प्रदान कर रहा है। अब तक 2500 से अधिक कुत्तों का टीकाकरण किया जा चुका है।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब अंबाला इन्डस्ट्रीअल एरिया - RID 3080

एक झुग्गी बस्ती में एक कोविड टीकाकरण शिविर आयोजित किया गया। स्वास्थ्य कर्मियों को कोरोना योद्धा प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। क्लब अध्यक्ष शशि गुलाटी ने फूलेल माजरा गांव में छात्राओं को सेनेटरी नैपकिन व मास्क वितरित किए।

रोटरी क्लब कुशीनगर - RID 3120

कसिया क्षेत्र के आसपास की झुग्गी बस्तियों में रहने वाले जरूरतमंद परिवारों को कंबल वितरित किए गए।

रोटरी क्लब मलेरकोटला - RID 3090

मलेरकोटला स्थित हजरत हलीमा अस्पताल को कोविड मरीजों के इलाज हेतु BiPAP मशीन दान की गई। PDG अमजद अली, क्लब अध्यक्ष डॉ नाविद असलम और अन्य सदस्यों की उपस्थिति में यह परियोजना कार्यान्वित की गई।

रोटरी क्लब न्यू पनवेल - RID 3131

क्लब अपने परिसर के इस्तेमाल की मंजूरी देकर एवं कार्यक्रम के लिए स्वेच्छा से अपनी सेवा प्रदान करके सरकार के कोविड टीकाकरण कार्यक्रम का समर्थन कर रहा है। पनवेल के आसपास के रोटरी क्लबों ने अब तक 15,000 लोगों को टीका लगाने में मदद की है।

रोटरी क्लब ब्रह्मावरत कानपुर - RID 3110

क्लब ने एक वंचित परिवार की दुल्हन की शादी को प्रायोजित किया और नवविवाहित जोड़े को पलंग, फ्रिज, टीवी, वॉशिंग मशीन, अलमारी और रसोई के बर्तन सहित अन्य घरेलू सामान भी दान किया।

रोटरी क्लब सोलापुर MIDC - RID 3132

आपदा प्रबंधन कोष के तहत अक्कलकोट तहसील के चपलगांव गांव में एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र को ऑक्सीजन कंसेंट्रेटर दिया गया। सौंपने के इस समारोह में क्लब के अध्यक्ष विट्ठल वांगा और अन्य सदस्य मौजूद थे।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब हैदराबाद ईस्ट - RID 3150

ACP शिखा गोयल द्वारा नामपल्ली रेलवे स्टेशन पर DG एन वी हनमंथ रेड्डी की उपस्थिति में दूसरे स्तनपान कियोस्क का उद्घाटन किया गया। यह परियोजना दक्षिण मध्य रेलवे के सहयोग से की गई थी।

रोटरी क्लब शोरानूर - RID 3201

DG जोस चाको ने घतठ हाई स्कूल में *प्रोजेक्ट रिपल्स* के तहत वर्षा जल संचयन इकाई का उद्घाटन किया।

यह रोटरी क्लब कोचीन हार्बर, रोटरी क्लब पाम स्प्रिंग्स, कैलिफोर्निया, यूएसए और TRF के साथ होने वाली एक वैश्विक अनुदान परियोजना है। PDG विनोद कुट्टी और परियोजना अध्यक्ष अनिल मेनन इस मौके पर उपस्थित थे।

रोटरी क्लब शिमोगा सेंट्रल - RID 3182

नगर निगम के 24 वार्डों में कोविड रोगियों तक पहुंचने वाले अग्रिम पंक्ति के इकतीस कार्यकर्ताओं को DG राजाराम भट की उपस्थिति में सम्मानित किया गया।

रोटरी क्लब कासरगोड़ - RID 3202

लॉकडाउन के दौरान मिनी टेंपो पर लगे सार्वजनिक सम्बोधन प्रणाली के माध्यम से एक कोविड जागरूकता अभियान शुरू किया गया था। नगर पालिका वार्डों को कीटाणुनाशक छिड़काव मशीनें दान में दी गई।

रोटरी क्लब बैंगलोर विद्यापीठ - RID 3190

क्लब ने ₹20,000 की परियोजना लागत से बृहत बेंगलुरु महानगर पालिका के 100 से अधिक सफाई कर्मचारियों को चावल, दाल, छाछ और पानी की बोतलें वितरित की।

रोटरी क्लब चेंगन्नूर - RID 3211

IAS अधिकारी पी एच कुरियन ने बाढ़ प्रभावित मेट्रोपॉलिटन स्कूल चेंगन्नूर को आठ लैपटॉप सौंपे। यह परियोजना रोटरी क्लब विलोडेल, कनाडा और रोटरी क्लब कलामासेरी की वित्तीय सहायता से पूरी की गई थी।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब तिरुनेलवेली टाउन - RID 3212

देवा होम के मानसिक रूप से बीमार रहवासियों को पोशाक सामग्री और एक शानदार रात्रिभोज प्रदान किया गया। क्लब के अध्यक्ष रामासामी, AG तिरुपोनराज और प्रायोजक रोटेरियन सेंथिल मौजूद थे। इस परियोजना की लागत 9,000 आई।

रोटरी क्लब टैगोर लैन्ड - RID 3240

RCC धर्मराजतल नब जागरण संघ के सहयोग से, बोलपुर के समीप स्थित मधु पुकुर पर गांव में एक दंत चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। कुल 105 मरीजों का इलाज किया गया और 30 मरीजों के दांत निकाले गए। नि:शुल्क दवाइयाँ भी दी गईं।

रोटरी क्लब पर्णमबुत - RID 3231

जिला राजस्व अधिकारी, क्लब के पदाधिकारियों और पूर्व अध्यक्ष एलंगोवन की उपस्थिति में पर्णमबुत के सरकारी अस्पताल को पांच बड़े ऑक्सीजन सिलेंडर दान किए गए। ये सिलेंडर कोविड मरीजों के इलाज में काम आएंगे।

रोटरी क्लब महानदी विहार चौदवार - RID 3262

कटक में इस तरह के पहले स्कूल से अच्छे परिणाम मिलने के बाद, ई-लर्निंग परियोजना का विस्तार पांच अन्य सरकारी उच्चतर प्राथमिक विद्यालयों में किया गया। इस परियोजना को CSR कोष द्वारा वित्तपोषित किया गया।

रोटरी क्लब चेन्नई मुगप्पेर - RID 3232

चिन्ना नोलंबूर में एक आंतरिक रिंग रोड जंक्शन पर एक पुलिया पर एक धातु से मोर्चाबंदी की गई ताकि वाहन बिना किसी परेशानी के आसानी से पार हो सकें। रोटेरियन ए प्रभाकरण ने इस पहल को प्रायोजित किया जिसकी लागत ₹45,000 थी।

रोटरी क्लब जोका - RID 3291

साउथ 24 परगना जिले के एक गांव में रोटरेक्टरों एवं स्थानीय RCC सदस्यों के सहयोग से थैलेसीमिया रोगियों के लिए एक विशेष शिविर का आयोजन किया गया। करीब 50 लोगों की जांच की गई और उन्हें दवाइयां दी गईं।

वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित

मद्रासी, मोहाजिर, ईरानी या पंजाबी?

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

एक दिन, जब मैं टीकाकरण के लिए गया तो वहाँ पर एक युवा नर्स ने कुछ ऐसा कहा जो केरल और तमिल नाडु में पले-बढ़े मेरे एक पंजाबी दोस्त ने मुझसे एक दिन पहले ही कहा था, कि मेरी आवाज तमिल जैसी बिल्कुल नहीं लगती। मैंने उससे कहा कि मैं पैदा होने से लेकर अब तक - 70 सालों से - उत्तर में रह रहा हूं, और 63 वर्षों से दिल्ली में रह रहा हूँ। उसने कहा कि आप तमिल जैसे दिखते भी नहीं है। मैंने माफी मांगी। मैं और कर भी क्या सकता था। वह मुझे परेशान करने लगी थी।

दरअसल दिल्ली इमिग्रेशन समेत हर जगह ऐसा ही होता है। पुराने दिनों में, इमिग्रेशन वाला बंदा मेरा नाम नहीं ले पाता था और मुझसे कहता था कि मैं एक मद्रासी जैसा बिल्कुल नहीं लगता। लेकिन उनमें से एक ने मुझे यह कहते हुए बधाई दी कि सिस्टम पर मेरा नाम खोजना आसान है। लाखों अशोक सिंह या राहुल शर्मा के विपरीत मेरे नाम वाला मैं सिर्फ एक था। अब, पासपोर्ट पर चुंबकीय पट्टी लगने के साथ, 49 अक्षरों वाले मेरे नाम को सिस्टम में डालने की वह पुरानी समस्या गायब हो गई है। मैंने एक बार अपने बड़े भाई से पूछा कि उस समय मुख्य पासपोर्ट अधिकारी कौन था, सरकार आद्याक्षर स्वीकार क्यों नहीं करती थी। उसने मुझे उदास होकर ऐसे देखा जैसे कि मन ही मन कह रहा हो कि मैं हमेशा से एक मूर्ख था।

अमेरिका में उन्हें लगता था कि मैं एक ईरानी हूं और यूके में मैं उन्हें तुर्क लगता था! वास्तव में वहां के बांग्लादेशियों को लगा कि मैं एक पंजाबी हूं, जिसका मतलब उनके लिए एक पाकिस्तानी था। हालाँकि, कम से कम पाकिस्तानी सोचते थे कि मैं एक भारतीय था। उन्होंने तमिलनाडु के बारे में कभी नहीं सुना था, लेकिन मद्रासी, हां। लेकिन तुम काले तो नहीं हो, उन्होंने कहा। मैं यह कहकर हँसा कि मेरा दिल बहुत, बहुत काला है।

और यह सिलसिला ऐसा ही चलता रहा। इतने साल उत्तर में रहने की वजह से, स्वाभाविक रूप से मेरी आवाज उस पक्के तमिल की तरह नहीं लगती जो मैं हूं। लेकिन मेरे नाम की वजह से, स्थानीय लोगों को मैं चेन्नई का मोहाजिर लगता हूं। एक उत्तर भारतीय मंत्री ने एक बार मुझसे और मेरे एक सहयोगी से कहा था कि उन्हें तमिल लोग दूसरी दुनिया के लगते है। ''मुझे उनकी भाषा और उनके तौर-तरीके समझ में नहीं आते है,'' वह बड़बड़ाये। फिर मैंने उनसे शुद्ध हिंदी और बोलचाल की पंजाबी में बात की। वह काफी हक्का-बक्का रह गए।

जब मुझे टीवी टॉक शो में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाता था तब भी मेरे साथ ऐसा ही होता था। महंगे अंग्रेजी चैनलों ने मुझे कभी फोन नहीं किया - इसलिए आश्चर्य नहीं होता कि वे सभी बंद हो रहे है - लेकिन हिंदी भाषा वाले अक्सर मुझे बुलाते थे। एक दिन मैंने प्रोड्यूसर से पूछा कि मैं ही क्यों। उन्होंने कहा कि जब आपकी शुद्ध हिंदी के बीच में आपका तमिल नाम स्क्रीन पर आता है, तो दर्शक इसे पसंद करते है। जब मैंने अपनी पत्नी को यह बताया तो उसने कहा, हां, सर्कस के रिंग में आप एक सनकी है। मैंने आगे से निमंत्रणों को अस्वीकार करने का विचार किया लेकिन पैसा बहुत अच्छा था और मैंने खुद को सांत्वना दी कि कोई भी कभी भी टीवी पर आने वाली किसी भी चीज़ को याद नहीं रखता। वे कहते है, जब पैसा बोलता है, तो कोई भी उच्चारण की आलोचना नहीं करता है।

अमेरिका में उन्हें लगता था कि मैं एक ईरानी हूं और यूके में मैं उन्हें तुर्क लगता था! वास्तव में वहां के बांग्लादेशियों को लगा कि मैं एक पंजाबी हूं, जिसका मतलब उनके लिए एक पाकिस्तानी था।

तमिलनाडु में भी मैं इसी समस्या का सामना करता हूं, लेकिन इसके विपरीत। जैसे ही मैं कुछ कहता हूं, वे मान लेते है कि मैं एक पंजाबी हूं और मुझसे भागने की कोशिश करते है। अगर मैं तमिल में बोलता हूं तो वे पूछते है कि क्या मैं दिल्ली से आया हूं - इसी तरह यूपी के लोग देहली का उच्चारण करते है, जो कि सही नाम है, ना कि दिल्ली। एच पहले आता है और एल बाद में। इतनी आसानी से परखा जाना अपमानजनक लगता है।

मेरे बेटे, जो 1980 के बाद की पीढ़ी के है, मुश्किल से तमिल बोल पाते है। मैंने उनसे कहा है कि यदि वे उत्तर में स्वीकार किया जाना चाहते है, तो वे अंत में सिंह जोड़कर अपना नाम बदल लें। या अगर वे चाहते है कि उन्हें दक्षिण में स्वीकार किया जाए, तो उन्हें अपने तमिल में सुधार करना चाहिए। मुझे नहीं लगता कि वे दोनों में से कुछ भी करने जा रहे है। बेचारे, मेरी तरह, उनकी किस्मत में भी हमेशा के लिए उनकी पहचान को लेकर अनियमित अवस्था में रहना ही लिखा है। अब भारतीय होना ही काफी नहीं है। ■

संक्षेप में

एसिड अटैक पीड़ितों ने भोजन वितरित किया

'शीरोज हैंगआउट कैफे' जो आगरा में एसिड अटैक सर्वाइवर्स द्वारा चलाया जाता है, इस कैफे ने लॉकडाउन के समय के दौरान *स्माइल गोल है* अभियान के तहत गरीबों एवं जरूरतमंद लोगों के लिए भोजन वितरित करने के लिए अपने दरवाजे खोल दिए। छॉव फाउंडेशन के सहयोग से इस कैफे ने शहर भर में भोजन वितरण अभियान चलाया। एसिड अटैक से ठीक हुए लोगों, एसिड अटैक सर्वाइवर्स ने कोविड रोगियों के लिए भोजन वितरण अभियान भी चलाया। यह पहल हर दिन 200 FSSAI प्रमाणित खाने के डिब्बे प्रदान कर रहा है। खाने के डिब्बे में चावल, रोटी, सब्जी और दाल शामिल है।

मालदीव का तैरता शहर

एक डच आर्किटेक्चर फर्म मालदीव में 200 हेक्टेयर में तैरते-शहर को बनाने के लिए काम कर रही है क्योंकि हिंद महासागर के 25 द्वीप द्वीपसमूहों में जलवायु

वार्मिंग के कारण निर्जन होने का खतरा है। यह तैरता हुआ शहर प्रवाल भित्तियों की संरचना पर आधारित है और जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद करने के लिए हरित ऊर्जा द्वारा संचालित होगा। नहरों और लचीले पुलों की एक श्रृंखला इसके आवास मॉड्यूल को जोड़ेगी, जबकि डॉक लोगों को एक नए खरीदारी अनुभव को बढ़ावा देने के लिए नावों को पार्ककरने और सेवाओं तक पहुंचने की अनुमति देगा। परियोजना अगले साल शुरू होगी और पांच साल के भीतर पूरी हो जाएगी।

जानवरों के लिए कोविड वैक्सीन

रूस ने जानवरों के लिए दुनिया का पहला कोविड वैक्सीन पंजीकृत किया, यह परीक्षण करने के बाद कि यह जानवरों की वैक्सीन कुत्ते, बिल्लियों और ऊदबिलाव में वायरस के खिलाफ एंटीबॉडी पैदा करती है। इस वैक्सीन को रोसेलखोजनादजोर की यूनिट के द्वारा विकसित किया गया है जो वेटरनरी एंड फाइटोसैनिटरी पर्यवेक्षण की एक फेडरल सेवा है, जो पशु चिकित्सा एवं कृषि उत्पादन की निगरानी करती है। वैक्सीन का नाम कार्निवैक-कोव रखा गया है। रूस, ग्रीस, पोलैंड और ऑस्ट्रिया के फार्म पहले ही बड़ी मात्रा में टीकों हेतु अनुरोध कर चुके हैं। कहा गया है कि इस डोज का असर छह महीने तक रहता है, लेकिन विशेषज्ञ टीके के प्रभावों और परिणामों का निरंतर अध्ययन कर रहे हैं। अब तक रूस ने जानवरों में केवल दो ही कोविड मामले दर्ज किए हैं, ये दोनों केस बिल्लियों में पाए गए थे।

चीन की नई तीन-बच्चों वाली नीति

जनगणना आंकड़ों में जन्म दर में भारी गिरावट आने के बाद चीन ने घोषणा की है कि वह दम्पतियों को तीन बच्चे पैदा करने की अनुमति देगा। जनसंख्या दर को धीमा रखने के उद्देश्य से देश ने 1979 में एक-बच्चा नीति पेश की थी और फिर बाद में इसमें परिवर्तन किया गया और सन् 2016 में दो-बच्चा नीति कर दी गई। नवीनतम कदम को राष्ट्रपति शी जिनपिंग के द्वारा अनुमोदित किया गया था। एक दंपत्ति के तीन बच्चे नीति से देश की आबादी में वृद्धि होगी जो अब 1.4 बिलियन है। सातवीं राष्ट्रीय जनगणना के जारी होने के बाद यह घोषणा की गई जिससे पता चला कि सन् 2020 में चीन में पैदा लोगों की संख्या केवल 12 मिलियन थी जो कि सन् 1960 के बाद सबसे कम है।

अंतरिक्ष की होड़ में अरबपति

अमेजन कंपनी के सीईओ और एयरोस्पेस कंपनी ब्लू ओरिजिन के प्रमुख जेफ बेज़ोस ने अंतरिक्ष में पहली मानवयुक्त उड़ान शुरू करने की योजना की घोषणा की है। अगर यह सफल हो जाते हैं तो 57 वर्षीय यह व्यक्ति अपनी ही कंपनी के रॉकेट से अंतरिक्ष में उड़ान भरने वाले पहले व्यक्ति बन जाएंगे। दो अन्य - स्पेसएक्स के एलोन मस्क और वर्जिन गेलेक्टिक के रिचर्ड ब्रैनसन - ने कहा है कि वे भी अपनी कंपनी द्वारा बनाए गए अंतरिक्ष यान में अंतरिक्ष में जाना चाहते हैं। ब्लू ओरिजिन न्यू शेपर्ड रॉकेट, जिसका

नाम नासा के अंतरिक्ष यात्री एलन शेपर्ड के नाम पर रखा गया है, जो अंतरिक्ष में जाने वाले पहले अमेरिकी हैं, 20 जुलाई को उड़ान भरने वाले हैं। अंतरिक्ष यान 10 मिनट तक छह यात्रियों को पृथ्वी से लगभग 105 किमी की ऊंचाई तक ले जाएगा। एक ऑनलाइन नीलामी में केवल एक टिकट बेचा गया और बोली लगाने वाले एक अनाम व्यक्ति ने 28 मिलियन डॉलर की पेशकश कर के जीत हासिल की। बोली लगा कर टिकट जीतने वाला व्यक्ति, बेज़ोस, उनके भाई मार्क बेज़ोस एवं अन्य अतिथि और दो चालक दल के सदस्य कर्मन रेखा के लिए राइड करेंगे, कर्मन रेखा वह सीमा रेखा है जो बाहरी अंतरिक्ष से वातावरण को अलग करती है जहां वे भारहीनता का अनुभव करेंगे और पृथ्वी की वक्रता का निरीक्षण करेंगे।

किरण ज़ेहरा द्वारा संकलित; एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा।

Regn. No. TN/CCN/359/2021-2023 | Total number of pages in this monthly
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/21-23 | issue, including cover, 84. Price: ₹35
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/05271 Rotary Samachar Published on the first week of every month

Choose Your Career Path

IIS	IIS	IIM	IIERD
INDIA INTERNATIONAL SCHOOL, KSHIPRA PATH, MANSAROVAR, JAIPUR	INDIA INTERNATIONAL SCHOOL, SITAPURA, JAIPUR	INTERNATIONAL SCHOOL OF INFORMATICS & MANAGEMENT MANSAROVAR, JAIPUR	ICG INSTITUTE OF EDUCATIONAL RESEARCH & DEVELOPMENT SITAPURA, JAIPUR
0141-2786402-04	0141-2771067	0141-2781154-55	0141-2771068

PDG Dr. Ashok Gupta AKS
Founder, IIS Group

ADMISSIONS OPEN 2021-2022

150+ UG/PG/Ph.D./D.Litt./D.Sc. & PROFESSIONAL PROGRAMMES

For More Details Visit onlineadmission.iisuniv.ac.in/

CIVIL SERVICE PREPRATION ALONG WITH GRADUATION

FOR COUNSELLING AND ANY QUERIES, CONTACT AT

9358819994 ARTS & SOCIAL SCIENCE
9358819996 COMMERCE & MANAGEMENT
9358819995 SCIENCE
or mail at : admissions@iisuniv.ac.in

IIS (deemed to be UNIVERSITY)
Gurukul Marg, SFS, Mansarovar, Jaipur -302 020 (India)
www.iisuniv.ac.in | admissions@iisuniv.ac.in

CONNECT WITH US
+91 141 2397906-07
+91 141 2400160, 2401008